MAKTABA TUL MADINA INDIA

आख़िरी नबी ﷺ की

प्यारी सीरत

सफ़हात 147

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

नौ जवान नस्ल के लिये

आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

की प्यारी सीरत

मुअल्लिफ़ : मुहम्मद हामिद सिराज
मदनी अत्तारी

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

शो'बए सीरते मुस्तफ़ा

नाम किताब	:	आख़िरी नबी की प्यारी सीरत
सफ़ह़ात	:	147
सिने त़बाअ़त	:	1446 हि., 2025 ई. (May)
ता'दाद	:	2100
पेशकश	:	**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**

जुम्ला हुक़ूक़ ब ह़क़्क़े मक्तबतुल मदीना मह़फ़ूज़ हैं

مكتبة المدينة

MAKTABA TUL MADINAH

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मस्जिद ग़रीब नवाज़ के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नाग पूर – फ़ोन : 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, अजमेर

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

पेश लफ़्ज़..08

पहला बाब — रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत 11

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत...12

ज़मानए जाहिलिय्यत की तारीकियां..12

विलादते मुस्तफ़ा की बहारें..13

आमदे मुस्तफ़ा हुई रोशन ज़माना हो गया.....................................13

नसबे मुस्तफ़ा..14

वालिदैने मुस्तफ़ा...15

दूसरा बाब — रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बचपन 16

दूध पिलाने (रिज़ाअ़त) का बयान..17

दूध पिलाने की बरकतें..17

बचपन के वाक़िआ़त व बरकात...19

बचपन की कुछ प्यारी अदाएं...21

वुजूदे मुस्तफ़ा की बरकतें..22

बनू सा'द में क़ियाम की मुद्दत और वापसी.....................................23

तीसरा बाब — रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बचपन 25

वालिदा का विसाले पुर मलाल...26

वालिदैन के विसाल के बा'द...26

बचपन की बरकतें...27

यमन का सफ़र...28

शाम का पहला तिजारती सफ़र...28

- मज़ीद तिजारती अस्फ़ार......29
- हिल्फ़ुल फ़ुज़ूल में शिर्कत......29

चौथा बाब	रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जवानी	31

- दूसरा सफ़रे शाम......32
- हज़रते ख़दीजा से निकाह......33
- ता'मीरे का'बा में किरदार......35
- अब तक का ग़ैर मा'मूली किरदार......36

पांचवां बाब	वह़ी और तब्लीग़े इस्लाम के मराहिल	38

- ग़ारे हिरा में इबादत......39
- इब्तिदाए वह़ी और ए'लाने नुबुव्वत......39
- तब्लीग़े इस्लाम का आग़ाज़ और पहला मर्हला......41
- तब्लीग़े इस्लाम का दूसरा मर्हला......41
- तब्लीग़े इस्लाम का तीसरा मर्हला......42

छटा बाब	कुफ़्फ़ार के मज़ालिम और हिजरते हबशा	44

- काफ़िरों का आप पर ज़ुल्मो सितम......45
- सहाबए किराम पर काफ़िरों का ज़ुल्मो सितम......46
- हिजरते हबशा......47

सातवां बाब	बॉयकॉट और आमुल हुज़्न	49

- शिअ़्बे अबी तालिब का मुहासरा......50
- आमुल हुज़्न या'नी ग़म का साल......51

आठवां बाब	सफ़रे ताइफ़ और हिजरते मदीना	53

- सफ़रे ताइफ़ के वाक़िआत......54
- सब से सख़्त दिन......56

- जिन्नात का क़बूले इस्लाम.....57
- मदीने शरीफ़ में इस्लाम की रोशनी.....57
- बैअ़ते उ़क़्बए ऊला.....58
- बैअ़ते उ़क़्बए सानिया.....60
- हिजरते मदीना.....60
- काफ़िरों का इज्तिमाअ़.....62
- हिजरते मुस्त़फ़ा.....62

नवां बाब **हिजरत ता सुल्हे हुदैबिया** 64

- मदीने के वाली मदीने में.....65
- मस्जिदे क़ुबा की ता'मीर और जुमुआ़ की इब्तिदा.....66
- मदीना शरीफ़ में क़ियाम.....67
- मस्जिदे नबवी की ता'मीर.....68
- अन्सार व मुहाजिर भाई भाई.....70
- क़िब्ले की तब्दीली.....70
- काफ़िरों की साज़िशें और मुसल्मानों के इक़्दामात.....72
- ग़ज़्वा और सरिय्या का फ़र्क़.....73
- ग़ज़्वए बद्र के अस्बाब.....74
- जंगे बद्र में कौन कहां मरेगा ?.....78
- ग़ज़्वए बद्र का वाक़िआ़ व नताइज.....78
- शुहदाए बद्र.....79
- क़ैदियों का अन्जाम.....79
- ग़ज़्वए उहुद के अस्बाब और लश्करों की ता'दाद.....80
- लश्करों का आमना सामना.....82

❈ जंग का मा'रिका.....82
❈ ग़ज़्वए उहुद के कुछ वाक़िआत.....83
❈ वाक़िअ़ए रजीअ़.....83
❈ वाक़िअ़ए बिअरे मऊ़ना.....84
❈ ग़ज़्वए बनू नज़ीर.....85
❈ ग़ज़्वए बनू मुस्त़लक़ व वाक़िअ़ए इफ़्क.....86
❈ ग़ज़्वए ख़न्दक़ और इस का सबब.....87
❈ ग़ज़्वए बनी क़ुरैज़ा.....89
❈ उ़म्रे का इरादा और अ़जीब मो'जिज़ा.....90
❈ बैअ़तुर्रिज़्वान.....92
❈ सुल्हे हुदैबिया और इस की वुजूहात.....93
दसवां बाब — बा'द अज़् हुदैबिया ता रिह़लत शरीफ़ 94
❈ सलात़ीन के नाम दा'वते इस्लाम.....95
❈ ग़ज़्वए ख़ैबर और उस के अस्बाब.....96
❈ उ़म्रतुल क़ज़ा की अदाएगी.....98
❈ ग़ज़्वए मौता के अस्बाब.....100
❈ ग़ज़्वए मौता.....100
❈ फ़त्हे मक्का के अस्बाब.....102
❈ रसूले ख़ुदा का मक्का में दाख़िला.....104
❈ रसूले ख़ुदा का करीमाना बरताव.....105
❈ ग़ज़्वए हुनैन.....106
❈ ग़ज़्वए तबूक.....107
❈ सिद्दीक़े अक्बर बत़ौरे अमीरे ह़ज.....109

❉ वुफ़ूद की आमद..........110
❉ कसरत से वुफ़ूद आने की वज्ह..........111
❉ वफ़्दे किन्दा..........112
❉ वफ़्दे फ़ज़ारा..........112
❉ वफ़्दे क़बीलए सा'द बिन बक्र..........113
❉ अल वदाई ह़ज (हिज्जतुल वदाअ़)..........114
❉ अल वदाई ख़ुत़्बा..........115
❉ अल वदाई ख़ुत़्बे की बहारें..........116
❉ मूए मुबारक की तक़्सीम..........117
❉ मरज़े वफ़ात और रिह़लत शरीफ़..........118

ग्यारहवां बाब — शमाइल और फ़ज़ाइल का बयान — 120

❉ हुल्यए मुबारक..........121
❉ पसन्दीदा ग़िज़ाएं..........123
❉ पसन्दीदा लिबास..........124
❉ मुबारक सुवारियां..........124
❉ आ़दात व अख़्लाक़े मुबारका..........124
❉ फ़ज़ाइलो ख़साइस..........125
❉ क़ुरआनी आयात और शाने मुस्त़फ़ा..........127
❉ शाने मुस्त़फ़ा अह़ादीस की रोशनी में..........131

बारहवां बाब — ख़ानदान व मुतअ़ल्लिक़ीने मुस्त़फ़ा — 135

❉ ख़ानदाने मुस्त़फ़ा, रिज़ाई रिश्तेदार, ग़ज़्वात व सराया, उ़मूमी इस्ति'माल की अश्या और सुवारियां..........136 ता 141

तेरहवां बाब — ह़याते मुस्त़फ़ा एक नज़र में — 142

❉ मआख़िज़ो मराजेअ़..........146

पेश लफ़्ज़

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तारीख़े इन्सानी के सब से जामेअ़ और अक्मल इन्सान हैं। आ'ला इन्सानिय्यत के तमाम पहलू आप की ज़िन्दगी में अपने तमाम तर कमाल के साथ जम्अ़ हैं। आप नबी व रसूल होने के साथ साथ दाई (नेकी की त़रफ़ लाने वाले), मुस्लेह़ (इस्लाह़ करने वाले), मुदब्बिर (दानिश मन्द), क़ाइद (Leader), ख़त़ीब, अमीरे रियासत, मुरब्बी (तरबियत करने वाले व पुश्त पनाह), मुन्सिफ़, उस्ताज़, मुर्शिद (रहनुमाई करने वाले), अल ग़रज़ ! ज़िन्दगी और मुआ़शरे के हर पहलू के ए'तिबार से रहनुमा हैं, येही वज्ह है कि आप की ह़याते त़य्यिबा में इन्सानिय्यत के हर पहलू के ए'तिबार से मुकम्मल रहनुमाई मौजूद है।

सीरते त़य्यिबा की इसी अहम्मिय्यतो ज़रूरत के पेशे नज़र दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान ह़ज़रत मौलाना ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्त़ारी साह़िब ने इदारए तस्नीफ़ो तालीफ़ अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या से इस ख़्वाहिश का इज़्हार फ़रमाया कि **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस सीरत पर एक ऐसी मुख़्तसर किताब मुरत्तब की जाए जो आसान ज़बान व बयान पर मुश्तमिल हो, ताकि अ़वामुन्नास बिल ख़ुसूस बच्चों और नौ जवान नस्ल (स्कूल, कॉलेज के त़लबा) के लिये उस का पढ़ना आसान हो। आप ने सीरते त़य्यिबा के इब्तिदाई चन्द सफ़ह़ात पर काम कर के इस अ़ज़ीम काम का आग़ाज़ फ़रमाया और फिर तक्मील के लिये अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के सिपुर्द कर दिया। अ़जब इत्तिफ़ाक़ है कि निगराने शूरा की ख़्वाहिश से चन्द दिन पहले निगराने अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या, रुक्ने शूरा मौलाना मुह़म्मद शाहिद अ़त्त़ारी मदनी साह़िब ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा पर जदीद तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ काम करने के लिये अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या में "शो'बए सीरते मुस्त़फ़ा" क़ाइम फ़रमाया। रुक्ने शूरा की शफ़्क़तों की बदौलत सआ़दतों भरा येह अ़ज़ीम काम इसी शो'बे के ह़िस्से में आया और मुख़्तसर मुद्दत में इस मुख़्तसर किताब को मुरत्तब किया गया।

इस पर मौलाना मुह़म्मद ह़ामिद सिराज मदनी अ़त्तारी साह़िब (ज़िम्मेदार शो'बए सीरते मुस्त़फ़ा) ने काम करने की सआ़दत पाई, जब कि माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के नाइब मुदीर मौलाना मुह़म्मद राशिद अ़ली मदनी अ़त्तारी साह़िब और मौलाना मुह़म्मद जान मदनी अ़त्तारी साह़िब (मुआ़विन, शो'बए सीरते मुस्त़फ़ा) ने ख़ूब तआ़वुन फ़रमाया। काम की तफ़्सील यूं है :

❁ अव्वलन नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा को एक तसल्सुल के साथ तह़रीर किया गया। क़ारिईन की आसानी के लिये ह़याते त़य्यिबा को मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में तक़्सीम कर के बा'द में अब्वाब बन्दी भी की गई है। ❁ बा'द अज़ां मुकम्मल मवाद की तख़्रीज व तफ़्तीश और तक़ाबुल किया गया है। ❁ किताब को आसान से आसान तर बनाने के लिये आसान और सादा अल्फ़ाज़ व जुम्ले इस्ति'माल करने की कोशिश की गई है। किताब फ़ाइनल होने के बा'द इस का मुसव्वदा एक आ़म शख़्स से पढ़वाया गया, उन्हें मुश्किल लगने वाले सो से ज़ाइद अल्फ़ाज़ और दो दर्जन से ज़ाइद जुम्ले आसान उर्दू में तब्दील किये गए। ❁ सीरते त़य्यिबा को 63 से 92 सफ़ह़ात के दरमियान पेश करने का ज़ेह्न था, यूं इख़्तिसार को पेशे नज़र रखते हुए सीरते त़य्यिबा के कई वाक़िआ़त ख़ुलासतन ज़िक्र किये गए हैं, तफ़्सील के लिये मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब "सीरते मुस्त़फ़ा, सीरते रसूले अ़रबी" मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। ❁ सीरते त़य्यिबा से मुतअ़ल्लिक़ मक़ामात की जदीद मा'लूमात (या'नी मह़ल्ले वुक़ूअ़, मक्का या मदीना से मसाफ़त, बाय रोड फ़ासिला, मौसिम, मौजूदा नाम वग़ैरा) पेश करने की मक्दूर भर कोशिश की गई है। (येह मा'लूमात मुख़्तलिफ़ वेबसाइटों और बा'ज़ अ़रबी कुतुब से माख़ूज़ हैं।) ❁ क़ुरआने पाक की तमाम आयात को क़ुरआनी रस्मुल ख़त़ में लिखने के साथ साथ उन का मुकम्मल ह़वाला भी दिया गया है, अक्सर मक़ामात पर मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के तरजमए कन्ज़ुल ईमान और बा'ज़ मक़ामात पर ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम अ़त्तारी साह़िब के तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान को ज़िक्र किया

गया है। ❉ मुख़्तलिफ़ मक़ामात की तसावीर और बा'ज़ ग़ज़वात के नक़्शे भी शामिल किये गए हैं। ❉ शमाइलो ख़साइल सीरते त़य्यिबा का सुनहरी बाब है और एक मुसल्मान के लिये क़ाबिले अ़मल नमूना, यूं बा'ज़ शमाइलो ख़साइल भी शामिले किताब हैं। इसी त़रह़ किताब के आख़िर में शाने मुस्त़फ़ा पर बा'ज़ आयात व अह़ादीस समेत रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्ति'माल की अश्या के बारे में मा'लूमात भी शामिल हैं। ❉ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुकम्मल ह़याते त़य्यिबा इज्माली त़ौर पर किताब के आख़िर में ब उ़न्वान "ह़याते मुस्त़फ़ा एक नज़र में" दर्ज है। ❉ किताब में कोई शर्ई ग़लती न हो, इस लिये दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्ती मुह़म्मद अ़ब्दुल माजिद अ़त्तारी मदनी साहिब से शर्ई तफ़्तीश भी करवाई गई है।

अल्लाह पाक हमारी इस सई को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाए, इसे अ़वाम बिल ख़ुसूस त़लबए किराम के ह़क़ में नाफ़ेअ़ बनाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین

शो'बए सीरते मुस्त़फ़ा (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1442/ मार्च 2021

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 21-03-2021 ह़वाला नम्बर : 255

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब **"आख़िरी नबी की प्यारी सीरत"** (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर शो'बए तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। शो'बे ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात और फ़िक़्ही मसाइल वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

शो'बए तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

21-03-2021

पहला बाब

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत

Blessed Birth of the Holy Prophet

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : وَصَلُّوا عَلَيَّ فَاِنَّ صَلَاتَكُمْ تَبْلُغُنِي حَيْثُ كُنْتُمْ और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा करो, बेशक तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है चाहे तुम जहां भी हो।[1]

जाहिलिय्यत की तारीकियां

अल्लाह पाक की इ़बादत और इत़ाअ़त इन्सान की पैदाइश का बुन्यादी मक़्सद है। दुन्या की रौनक़ और नफ़्सो शैत़ान के धोके से येह मक़्सद निगाहों से ओझल हो जाता है। इस मक़्सद को याद दिलाने और इन्सान को सीधी राह पर चलाने के लिये **अल्लाह** करीम ने मुख़्तलिफ़ ज़मानों में कई अम्बियाए किराम भेजे। अम्बियाए किराम इन्सान को उस के मक़्सदे ह़क़ीक़ी की पहचान करवाते और इस की हिदायत व रहनुमाई फ़रमाते। येह अम्बिया मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मख़्सूस क़ौमों और मुल्कों की त़रफ़ भेजे गए। सब से आख़िर में **अल्लाह** करीम ने अपने प्यारे ह़बीब, जनाबे अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत तक के लिये तमाम काएनात की त़रफ़ नबी बना कर भेजा। आप की आमद से पहले गुज़श्ता अम्बियाए किराम की ता'लीमात भुला दी गई थीं, दुन्या जहालत के अंधेरों में भटक रही थी, कई बुराइयों ने दुन्या के सारे मुआ़शरों को अपनी लपेट में ले रखा था। बिल ख़ुसूस अ़रब सर ज़मीन तो बद तरीन बदह़ाली का शिकार थी। ज़ुल्मो ज़ियादती, फ़ह़्ह़ाशी व बे ह़याई, लड़ाई झगड़ा, जूआ और शराब की कसरत, क़त्लो ग़ारत गरी, जाहिलाना रुसूमात, बुत परस्ती, ग़ुरूरो तकब्बुर और जहालत के बादल हर

[1] ابوداود، کتاب المناسک، باب زیارۃ القبور، 2/315، حدیث:2042

त़रफ़ तारीकी फैला रहे थे ।

विलादते मुस्त़फ़ा की बहारें

ऐसे माह़ोल में **अल्लाह** के आख़िरी नबी, ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत हुई । आप की विलादत के साथ ही कुछ ऐसे वाक़िआ़त रूनुमा हुए जो इस बात की ख़ुश ख़बरी थे कि वोह ज़माना आ चुका है कि जिस में इस्लाम की रोशनियां कुफ़्र की तारीकियों को मिटा देंगी । नोशेरवां के आ़लीशान मह़ल का फटना और उस के चौदह कंगूरों का गिर जाना, फ़ारस में मजूसियों के इ़बादत ख़ाने की सदियों से रोशन आग का यक्दम बुझ जाना, दरियाए सावह के मौजें मारते पानी का ख़ुश्क हो जाना, येह और इस त़रह़ के कई वाक़िआ़त इस बात की अ़लामत थे कि अब आ़लम का रंग बदला है और नई हुकूमत का सिक्का चलेगा ।

आई नई हुकूमत सिक्का नया चलेगा

आ़लम ने रंग बदला सुब्ह़े शबे विलादत [1]

आमदे मुस्त़फ़ा हुई रोशन ज़माना हो गया

ऐसे माह़ोल में ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهَا के ब ज़ाहिर सादा से मकान में सआ़दतों और मसर्रतों का नूर चमका और **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जल्वा गरी हुई । आप की विलादत से सिर्फ़ आप की वालिदा ही ख़ुशियों से मसरूर नहीं हुईं बल्कि तमाम ग़मज़दों और दर्द के मारों के लबों पर मुस्कुराहटें फैल गईं । आप अ़रब के मश्हूर ख़ानदान क़ुरैश की शाख़ बनू हाशिम से तअ़ल्लुक़ रखते हैं । आप का ख़ानदान उन तमाम ख़ानदानों में सब से आ'ला है, ख़ुद **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

[1] ज़ौक़े ना'त, स. 95

का फ़रमान है : **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद में से "**किनाना**" को अ़ज़्मत वाला बनाया और "**किनाना**" में से "**क़ुरैश**" को चुना और "**क़ुरैश**" में से "**बनू हाशिम**" को मुन्तख़ब फ़रमाया और "**बनू हाशिम**" में से मुझ को चुन लिया।[1]

मश्हूर क़ौल के मुत़ाबिक़ वाक़िअ़ए अस्ह़ाबे फ़ील के 55 दिन के बा'द जब रबीउ़ल अव्वल का महीना था, बारहवीं तारीख़ थी, पीर का दिन था, सुब्ह़े सादिक़ की सुहानी घड़ी थी, रात की सियाही छट रही थी और दिन का उजाला फैलने लगा था, 571 ईसवी के एप्रिल की 20 तारीख़ थी जब मक्का[2] शरीफ़ में अपनी वालिदा के घर आप की विलादत हुई।[3]

पुरनूर है ज़माना सुब्ह़े शबे विलादत
पर्दा उठा है किस का सुब्ह़े शबे विलादत[4]

नसबे मुस्त़फ़ा

वालिदे माजिद की त़रफ़ से नसब शरीफ़ येह है :

1 ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم 2 बिन अ़ब्दुल्लाह 3 बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब 4 बिन हाशिम 5 बिन अ़ब्दे मनाफ़ 6 बिन क़ुसा 7 बिन

[1] مسلم، کتاب الفضائل، باب فضل نسب النبی...الخ، ص962، حدیث:5938

[2] मक्का (Makkah) का पूरा नाम मक्कतुल मुकर्रमा है। येह दुन्या के चन्द अहम और क़दीम तरीन शहरों में से है। दुन्या भर के मुसल्मानों का क़िब्ला का'बतुल्लाह यहीं वाक़ेअ़ है जिसे ह़ज़रते इब्राहीम और उन के साहि़ब ज़ादे ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِمَا السَّلَام ने ता'मीर किया था। अब इस शहर का रक़्बा 760 मुरब्बअ़ किलो मीटर है। येह शहर सत़्ह़े समुन्दर से 277 मीटर की बुलन्दी और तक़रीबन 80 किलो मीटर के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ है। यहां का मौसिम निस्बतन गर्म है, गर्मियों में शदीद गर्मी पड़ती है और दरजए ह़रारत आ़म त़ौर पर 40 सेन्टी ग्रेड रहता है। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ाहिरी ह़यात के तक़रीबन 53 साल यहां गुज़ारे।

[3] مدارج النبوت، قسم دوم، باب اول، 2/14 ملتقطاً

[4] ज़ौक़े ना'त, स. 93

किलाब 8 बिन मुर्रह 9 बिन का'ब 10 बिन लुअय 11 बिन ग़ालिब 12 बिन फ़ेह्र 13 बिन मालिक 14 बिन नज़्र 15 बिन किनाना 16 बिन ख़ुज़ैमा 17 बिन मुदरिका 18 बिन इल्यास 19 बिन मुज़र 20 बिन निज़ार 21 बिन मअ़द 22 बिन अ़दनान ।[1]

जब कि वालिदए माजिदा की त़रफ़ से नसब शरीफ़ यूं है : 1 ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 2 बिन आमिना 3 बिन्ते वह्ब 4 बिन अ़ब्दे मनाफ़ 5 बिन ज़ोहरा 6 बिन किलाब ।[2]

वालिदैने मुस्त़फ़ा

आप के वालिदे गिरामी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं । येह सीरतो सूरत दोनों में बे मिसाल थे । इन का विसाल आप की विलादत से क़ब्ल 25 साल की उ़म्र में हुवा ।[3] जब कि आप की वालिदए माजिदा ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا हैं । येह अपने नसब व शरफ़ में क़ुरैश की तमाम ख़्वातीन में सब से अफ़्ज़ल थीं । वालिद के विसाल के बा'द इन्हों ने अपने शहज़ादे की परवरिश की ।

1 السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، ذکر سرد نسب الزکی من محمد۔۔۔الخ، 1/89-103 ملخصاً
2 السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، اولاد عبد المطلب، 1/238
3 مدارج النبوت، قسم دوم، باب اول، 2/12-14 ملتقطاً

दूसरा बाब

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बचपन

Blessed Childhood of the Holy Prophet

दूध पिलाने (रिज़ाअ़त) का बयान

मक्का के मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों का येह रवाज था कि वोह अपने बच्चों को मां की गोद में पलता देखने के बजाए सह़रा में रहने वाले क़बीलों के पास बचपन गुज़ारने के लिये भेजते। इस की वज्ह येह थी कि दीहात की ख़ालिस गि़ज़ाएं खा कर बच्चों के आ'ज़ा और जिस्म मज़बूत़ हों और उन की ख़ालिस अ़रबी सीख कर वोह भी उसी फ़साह़तो बलाग़त से कलाम करने वाले बन जाएं। इसी वज्ह से अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते ह़लीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के सिपुर्द कर दिया गया। इन का तअ़ल्लुक़ क़बीलए "**बनू सा'द**[1]" से था जो बनी हवाज़न की एक शाख़ था, येह क़बीला अ़रबिय्यत और फ़साह़त में अपना जवाब नहीं रखता था। ह़ज़रते ह़लीमा अपने क़बीले की ख़्वातीन के साथ मक्का में बच्चे को रिज़ाअ़त पर लेने के लिये आईं। ह़ज़रते ह़लीमा की क़िस्मत का सितारा अपने उ़रूज पर था कि आप को दो साल तक दूध पिलाने की सआ़दत इन के ह़िस्से में आई।[2]

दूध पिलाने की बरकतें

बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ बीबी ह़लीमा के इ़लावा मज़ीद 6 ख़ुश क़िस्मत ख़्वातीन ने आक़ा करीम عَلَيْهِ السَّلَام को दूध पिलाने का शरफ़ ह़ासिल किया, उन तमाम औ़रतों को दौलते ईमान नसीब हुई।[3] जब कि ह़ज़रते

1 बनू सा'द मक्का से ब रास्ता त़ाइफ़ शुक़सान नामी गाउं से 15 से 20 किलो मीटर की मसाफ़त पर वाक़ेअ़ है। येह अ़लाक़ा मुकम्मल त़ौर पर बन्जर नहीं है, कहीं कहीं ज़राअ़त मुम्किन है। यहां की आबो हवा और मौसिम बहुत सिह़्ह़त अफ़्ज़ा है, ह़ज़रते ह़लीमा के गाउं का नाम "शौह़त़ा" है, इसे "शुह़त़ा" भी कहा जाता है। मक्का से इस का बाय रोड फ़ासिला तक़रीबन 153 किलो मीटर है।

2 شرح الزرقانی علی المواھب، من خصائصہ، 1/278ماخوذاً

3 سیرت حلبیہ، باب ذکر رضاعہ وما اتصل بہ، 1/124ملخصاً

ह़लीमा को दूध पिलाने की ख़िदमत का येह इन्आ़म मिला कि उन का पूरा घराना दौलते ईमान से मालामाल हुवा। ह़ज़रते ह़लीमा के शौहर ह़ज़रते ह़ारिस[1] رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, साह़िब ज़ादे अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस और दो साह़िब ज़ादियां उनैसा बिन्ते ह़ारिस और जुदामा बिन्ते ह़ारिस हैं। जुदामा बिन्ते ह़ारिस ही शैमा के नाम से मश्हूर हैं जो **अल्लाह** के आख़िरी नबी عَلَیْہِ السَّلَام की बड़ी रिज़ाई बहन थीं और आप को गोद में खिलाती और लोरियां देती थीं।[2]

मक्का शरीफ़ से बनू सा'द तक का नक़्शा

[1] येह साह़िबे ईमान और **अल्लाह** के आख़िरी नबी عَلَیْہِ السَّلَام की सोह़बते बा बरकत से फ़ैज़ पाने वाले थे और आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर भी हुए।
(फ़तावा रज़विय्या, 30/293 मुलख़्ख़सन)

[2] طبقات ابن سعد، 89/1

बचपन के वाक़िआत व बरकात

ह़ज़रते ह़लीमा सा'दिया رَضِیَ اللہُ عَنْھَا जब **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को लेने के लिये आप के मकाने आ़लीशान पर पहुंचीं तो फ़रमाती हैं : मैं ने देखा कि आप सफ़ेद कपड़े में लिपटे हुए हैं, आप के पास से ख़ुश्बूएं उठ रही हैं, सब्ज़ रंग का रेशमी कपड़ा नीचे बिछा हुवा है, पीठ के बल आराम फ़रमा रहे हैं। मैं ने आहिस्ता से क़रीब हो कर अपने हाथों पर उठा कर आप के सीनए मुबारक पर हाथ रखा तो आप मुस्कुराने लगे, अपनी सुर्मगीं आंखें खोल दीं और मुझे देखने लगे, मैं ने मह़सूस किया कि उन आंखों से अन्वार निकल रहे हैं और आस्मान को छू रहे हैं। बे इख़्तियार हो कर मैं ने आप की दोनों आंखों के दरमियान बोसा दिया और आप को अपने सीने से लगा लिया।[1]

जब आप رَضِیَ اللہُ عَنْھَا दूध पिलाने बैठीं तो नुबुव्वत की बरकतें ज़ाहिर होने लगीं। ख़ुदा की शान कि ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللہُ عَنْھَا के इस क़दर दूध बढ़ गया कि आप और आप के रिज़ाई भाई अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस ने ख़ूब पेट भर कर दूध पिया और दोनों आराम से सो गए। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी रिज़ाई वालिदा का सिर्फ़ एक त़रफ़ से दूध पीते, दूसरी त़रफ़ से वोह पिलाना भी चाहतीं तब भी नोश न फ़रमाते कि वोह भाई का ह़िस्सा था, येह इस बात का इशारा था कि अ़द्लो इन्साफ़ का बोलबाला करेंगे। आप की बरकत से ह़ज़रते ह़लीमा की लाग़र ऊंटनी जो दूध से ख़ाली थी उस में भी ख़ूब दूध आ गया। ह़ज़रते ह़लीमा के शौहर ने उस का दूध दोहा और दोनों मियां

1 مدارج النبوت، قسم اول، باب اول، بیان حسن خلقت، 2/19 ملخصاً

बीवी ने ख़ूब सेर हो कर दूध पिया और वोह रात बड़ी राह़तो सुकून के साथ बसर की और रात भर मीठी नींद के मज़े लूटते रहे। जब बेदार हुए तो ह़ज़रते ह़लीमा के शौहर ह़ारिस बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा कहने लगे : ह़लीमा ! तुम बड़ा ही मुबारक बच्चा लाई हो। ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا ने कहा कि वाक़ेई मुझे भी येही उम्मीद है कि येह बच्चा बड़ा बा बरकत है और ख़ुदा की रह़मत बन कर हमें मिला है। अ़न्क़रीब हमारा घर ख़ैरो बरकत से भर जाएगा।[1]

सय्यिदह ह़लीमा सा'दिया के घर के आसार जहां ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक बचपन गुज़रा

[1] سیرت حلبیہ، باب ذکر رضاعه وما اتصل به، 1/132 ملخصاً

हज़रते हलीमा फ़रमाती हैं कि (जब) हम **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ले कर मक्का शरीफ़ से अपने गाउं की तरफ़ रवाना हुए तो मेरा वोही ख़च्चर[1] जो पहले कमज़ोरी की वज्ह से क़ाफ़िले वालों से पीछे रह जाता था अब इस क़दर तेज़ चलने लगा कि कोई दूसरी सुवारी उस का मुक़ाबला न कर सकती थी।[2]

बचपन की कुछ प्यारी अदाएं

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब से हज़रते हलीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के पास आए उन के जानवर बढ़ने लगे, उन की इज़्ज़त में इज़ाफ़ा हुवा और ख़ैरो बरकत नसीब होने लगी। जब तक आप वहां रहे बीबी हलीमा का घर ख़ैरो बरकत से भरा रहा, दिन ब दिन इन इन्आमात और बरकात में इज़ाफ़ा होता रहा और वोह ख़ुशहाली की ज़िन्दगी बसर करने लगे। हज़रते हलीमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : दूध पीने की उ़म्र में आप की देखभाल में मुझे बहुत आराम था। आप दूसरे बच्चों की तरह न चीख़ते चिल्लाते और न रोते। 2 माह की उ़म्र में आप घुटनों के बल चलने लगे, 3 माह की उ़म्र में उठ कर खड़े होने लगे, 4 माह की उ़म्र में दीवार के साथ हाथ रख कर हर तरफ़ चला करते, 5 माह की उ़म्र में चलने फिरने की पूरी क़ुव्वत ह़ासिल कर चुके थे, 8 माह की उ़म्र में यूं कलाम फ़रमाते कि बात अच्छी तरह समझ में आ जाती, 9 माह की उ़म्र में फ़सीह़ बातें करना शुरूअ़ फ़रमा दीं।[3] आप ने अपनी उ़म्र के इब्तिदाई हिस्से में जो कलाम फ़रमाया वोह

1 ख़च्चर गधे से बड़ा और घोड़े से छोटा होता है और बार बरदारी व सुवारी के काम आता है। मुख़्तलिफ़ रिवायात से येह मा'लूम होता है कि इस सफ़र में हज़रते हलीमा के पास एक ख़च्चर और एक ऊंटनी थी।

2 مدارج النبوت، قسم دوم، باب اول، 2/20 ملتقطاً

3 معارج النبوۃ، رکن دوم، باب سوم، فصل دوم، ص 55 تا 56

اَللّٰہُ اَکْبَرُ کَبِیْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰہِ کَثِیْرًا (**तरजमा :** अल्लाह सब से बड़ा है और हर त़रह़ की ह़म्द व ता'रीफ़ अल्लाह के लिये है) था। झूला झूलते वक़्त आप चांद से बातें करते और अपनी उंगली से जिस त़रफ़ इशारा फ़रमाते, चांद उसी त़रफ़ झुक जाता।[1]

वुजूदे मुस्त़फ़ा की बरकतें

बीबी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا आप की बरकतों को यूं बयान फ़रमाती हैं : ❁ मेरा क़बीला "**बनी सा'द**" क़ह़त़ में मुब्तला था, जब मैं आप को ले कर अपने क़बीले में पहुंची तो क़ह़त़ दूर हो गया, ज़मीन सर सब्ज़, दरख़्त फलदार और जानवर मोटे ताज़े हो गए। ❁ एक दिन मेरी पड़ोसन मुझ से बोली : ऐ ह़लीमा ! तेरा घर सारी रात रोशन रहता है, इस की क्या वज्ह है ? मैं ने कहा : येह रोशनी किसी चराग़ की वज्ह से नहीं, बल्कि (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के नूरानी चेहरे की वज्ह से है। ❁ मेरे पास 7 बकरियां थीं, मैं ने आप का मुबारक हाथ उन बकरियों पर फेरा तो इस की बरकत से बकरियां इतना दूध देने लगीं कि एक दिन का दूध 40 दिन के लिये काफ़ी हो जाता था। इतना ही नहीं मेरी बकरियों में भी इतनी बरकत हुई कि सात से 700 हो गईं। ❁ क़बीले वाले एक दिन मुझ से बोले : उन की बरकतों से हमें भी ह़िस्सा दो ! चुनान्चे मैं ने एक तालाब में आप के मुबारक पाउं डाले और क़बीले की बकरियों को उस तालाब का पानी पिलाया तो उन बकरियों ने बच्चे पैदा किये और क़ौम उन के दूध से ख़ुशह़ाल व मालदार हो गई। ❁ आप को लड़के खेलने के लिये बुलाते तो इर्शाद फ़रमाते : मुझे खेलने के लिये पैदा नहीं किया गया। ❁ आप मेरे बच्चों के साथ जंगल जाते और

1 جمع الجوامع، حرف الہمزۃ مع النون، 3/212، حدیث: 8361

बकरियां चराया करते थे। एक दिन मेरा बेटा मुझ से बोला : अम्मीजान ! (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) बड़ी शान वाले हैं, जिस जंगल में जाते हैं हरा भरा हो जाता है, धूप में एक बादल इन पर साया करता है, रेत पर आप के क़दम का निशान नहीं पड़ता, पथ्थर इन के पाउं तले ख़मीर (गुंधे हुए आटे) की त़रह़ नर्म हो जाता और उस पर क़दम का निशान बन जाता है, जंगल के जानवर आप के क़दम चूमते हैं।[1]

बनू सा'द में क़ियाम की मुद्दत और वापसी

ह़ज़रते ह़लीमा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا और उन का ख़ानदान क़दम क़दम पर **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकतों को देखता रहा, इन से ख़ूब फ़ैज़ पाता रहा और अपना मुक़द्दर संवारता रहा। देखते ही देखते दो साल मुकम्मल हो गए, ह़ज़रते ह़लीमा ने आप का दूध छुड़ा दिया और मुआ़हदे के मुत़ाबिक़ आप को आप की वालिदा ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के पास ले गईं, उन्हों ने ह़स्बे तौफ़ीक़ ह़ज़रते ह़लीमा को इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा। आप की बरकतें देख कर ह़ज़रते ह़लीमा का दिल मचल्ता कि आप मज़ीद उन के पास उन के क़बीले में रहें, अ़जब इत्तिफ़ाक़ कि उन्ही अय्याम में मक्का शरीफ़ में एक वबाई मरज़ फैला हुवा था। ह़ज़रते ह़लीमा ने वबाई बीमारी से बचाने के लिये ह़ज़रते आमिना को इस बात पर राज़ी कर लिया कि वोह ह़ुज़ूर को मज़ीद कुछ मुद्दत के लिये उन के क़बीले भेज दें। यूं ह़ज़रते ह़लीमा की दिली मुराद पूरी हुई (या'नी मक़्सद पूरा हुवा) और एक बार फिर बीबी आमिना के चांद से उन का आंगन रोशन हो गया और **अल्लाह** के आख़िरी नबी عَلَيْهِ السَّلَام के बरकत वाले वुजूद की बदौलत उन का मकान दोबारा से रह़मतों और बरकतों की कान बन

[1] الکلام الاوضح فی تفسیر الم نشرح (अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा), स. 107–109 मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न

गया । आप तक़्रीबन चार साल तक क़बीलए बनू सा'द में बरकतें लुटाते रहे । वहां आप ने अपने रिज़ाई बहन भाइयों के साथ बकरियां भी चराईं । बकरियां चरागाहों में ले जा कर उन की देखभाल करना येह तक़्रीबन तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नत है । आप ने अपने अ़मल से बचपन ही में अपनी एक ख़स्लते नुबुव्वत का इज़्हार फ़रमा दिया । क़बीलए बनू सा'द में जब पहला शक़्क़े सद्र हुवा इस से घबरा कर ह़ज़रते ह़लीमा आप को बीबी आमिना के पास लाईं और उन के सिपुर्द कर दिया । इस के बा'द आप अपनी वालिदए पाक की गोद में परवरिश पाने लगे ।

शक़्क़े सद्र का मत़लब है सीने को चीरना । फ़िरिश्तों ने **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सीनए मुबारक को चीर कर दिल निकाल कर उसे धोया । इस अ़मल को शक़्क़े सद्र कहते हैं । येह अ़मल आप की ज़िन्दगी में चार मरतबा हुवा । पहली दफ़्अ़ा चार साल की उ़म्र में, दूसरी बार दस बरस, तीसरी दफ़्अ़ा 40 साल की उ़म्र में और आख़िरी बार मे'राज पर जाने से पहले । मश्हूर है कि येही बनू सा'द की वोह वादी है जहां शक़्क़े सद्र हुवा था ।

तीसरा बाब

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बचपन

Blessed Boyhood of the Holy Prophet

वालिदा का विसाले पुर मलाल

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक जब 6 साल हो गई तो आप की वालिदए माजिदा आप को साथ ले कर मदीना शरीफ़ में आप के वालिद के नन्हियाल से मिलाने गईं, इस सफ़र में बीबी उम्मे ऐमन भी साथ थीं। बीबी उम्मे ऐमन आप के वालिद की कनीज़ थीं। वापसी पर अब्वा[1] के मक़ाम पर आप की वालिदा का इन्तिक़ाल हो गया और वहीं तदफ़ीन हुई। बाप का साया पहले उठ चुका था और अब मां की आग़ोशे शफ़्क़तो महब्बत भी छूट गई। ह़ज़रते उम्मे ऐमन ने आप के आंसू पोंछे, आप को तसल्ली दी और वापस मक्का शरीफ़ ला कर आप के दादा ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब के सिपुर्द कर दिया।

वालिदैन के विसाल के बा'द

वालिदैन के विसाल के बा'द आप की परवरिश आप के दादाजान के यहां हुई। इन का नाम अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللهُ عَنْهُ है, येह मक्का के सरदार थे, आप से बड़ी महब्बत करते, हर वक़्त उन्हें अपने साथ रखते, जब कहीं बैठते तो अपने साथ बिठाते, खाना अपने साथ खिलाते, रात को अपने पहलू में सुलाते। सह़्ने का'बा में इन के बैठने के लिये एक तख़्त रखा जाता, लेकिन किसी बड़े से बड़े आदमी की मजाल न थी कि उस पर क़दम रखता, जब **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाते तो बिला झिजक अपने दादाजान

[1] अब्वा (Abwa) एक वादी है जो मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ के दरमियान में समुन्दर की त़रफ़ वाक़ेअ़ है। इस का फ़ासिला मक्का शरीफ़ से तक़रीबन 261 जब कि मदीना शरीफ़ से तक़रीबन 222 किलो मीटर है। वादिये अब्वा में एक ग़ज़्वा भी दरपेश आया था जिस में लड़ाई की नौबत नहीं आई थी। आज कल वादिये अब्वा ख़ुरैबा के नाम से मशहूर है।

की जगह पर बैठने के लिये आगे बढ़ जाते।[1] जब आप की उम्र मुबारक 8 साल की हुई तो इन का भी विसाल हो गया।[2] फिर आप की परवरिश आप के चचा अबू तालिब के यहां हुई। आप के मुबारक बचपन के मुतअ़ल्लिक़ अबू तालिब का कहना है : मैं ने कभी भी नहीं देखा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी वक़्त भी कोई झूट बोले हों या कभी किसी को धोका दिया हो, या कभी किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंचाई हो, या बेहूदा बच्चों के पास खेलने के लिये गए हों या कभी ख़िलाफ़े तहज़ीब बात की हो। हमेशा इन्तिहाई ख़ुश अख़्लाक़, अच्छी आ़दतों वाले, नर्म गुफ़्तार, बुलन्द किरदार और आ'ला दरजे के पारसा और परहेज़ गार रहे।[3]

बचपन की बरकतें

आप आठ साल की उ़म्र में अपने चचा अबू तालिब के घर उन की कफ़ालत में आए तो यहां भी ख़ैरो बरकत की बारिशें होने लगीं, येह अपने बच्चों से ज़ियादा आप से प्यार करते, अपनी निगाहों से दूर न होने देते, अबू तालिब का बयान है कि (सरकार عَلَيْهِ السَّلَام से पहले) जब भी मेरे बच्चे खाना खाते तो पेट न भरता, लेकिन जब से हुज़ूर इन के साथ खाना तनावुल फ़रमाते तो सब बच्चों का पेट भर जाता था, इस लिये जब भी मैं अपने बच्चों को खाना देना चाहता तो कहता : रुक जाओ ! मेरे बेटे (मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को आने दो फिर खाना शुरूअ़ करना। इसी तरह़ जब भी बच्चों को दूध पिलाना होता तो आप को पहले पिलाया जाता फिर बच्चों को दिया जाता। अगर उस के बेटों में से पहले कोई पी लेता तो वोह सारा बरतन अकेला ही ख़त्म कर

1 السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، اجلال عبد المطلب لہ، 1/306
2 شرح الزرقانی علی المواھب، ذکر وفاۃ امہ...الخ، 1/353
3 सीरते मुस्तफ़ा, स. 83

देता। अबू त़ालिब येह देख कर कहते : ऐ मुह़म्मद ! صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तुम्हारी बरकतों का क्या कहना।[1]

यमन का सफ़र

जब आप की उ़म्र मुबारक दस (10) साल की थी तो आप अपने चचा ज़ुबैर के हमराह यमन की त़रफ़ सफ़र के लिये निकले, यहां रास्ते में एक अ़जीब वाक़िआ़ हुवा कि किसी वादी में एक ऊंट लोगों को गुज़रने से रोक रहा था, जब उस ऊंट ने आप को देखा तो बैठ गया और अपना सीना ज़मीन पर रगड़ने लगा तो आप अपने ऊंट से उतर कर उस पर सुवार हुए और जब वादी के दूसरी त़रफ़ पहुंच गए तो उस ऊंट को छोड़ दिया। जब सफ़र से लौटे तो देखा कि वादी पानी से भरी हुई है। आप ने फ़रमाया : तुम मेरे पीछे आ जाओ, आप उस वादी में तशरीफ़ ले गए और सब कु़रैश आप के पीछे पीछे चलने लगे, अल्लाह पाक ने पानी ख़ुश्क फ़रमा दिया। जब लोग मक्का वापस आए तो सब को येह वाक़िआ़ सुनाया, जिसे सुन कर उन्हों ने कहा : इस बच्चे की शान निराली है।[2]

शाम का पहला तिजारती सफ़र

आप की उ़म्र मुबारक जब 12 बरस हुई तो आप ने अपने चचा अबू त़ालिब के साथ शाम की त़रफ़ पहला तिजारती सफ़र फ़रमाया। जब क़ाफ़िला शहरे बुसरा पहुंचा तो वहां के एक राहिब बह़ीरा जिस का अस्ल नाम "**बरजीस**" था उस से आप की मुलाक़ात हुई। उस ने आप को अ़लामाते

1 دلائل النبوة، وفات عبد المطلب و ضم ابی طالب رَسُولَ الله، 95/1
2 سبل الهدی والرشاد، الباب السابع فی سفره۔۔۔الخ، 139/2

नुबुव्वत से पहचान लिया और आप का हाथ पकड़ कर येह ए'लान करने लगा : येह तमाम जहानों के सरदार हैं, येह रब्बुल आ़लमीन के रसूल हैं, **अल्लाह करीम** इन्हें रह़्मतुल्लिल आ़लमीन (तमाम जहानों के लिये रह़्मत) बना कर भेजेगा। फिर उस ने आप और अहले क़ाफ़िला के लिये खाने की दा'वत का एहतिमाम किया। उस दा'वत में उस ने मज़ीद कुछ अ़लामाते नुबुव्वत देखीं। उस ने अबू त़ालिब से कहा : इन्हें शाम मत ले जाओ। अगर अहले शाम ने इन्हें अ़लामाते नुबुव्वत से पहचान लिया तो इन्हें क़त्ल करने की कोशिश करेंगे। लिहाज़ा आप उसी मक़ाम से वापस तशरीफ़ ले आए। उस राहिब ने आप को सफ़र के लिये कुछ सामान भी दिया।[1]

मज़ीद तिजारती सफ़र

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तिजारत की ग़रज़ से कई सफ़रों पर तशरीफ़ ले गए। दस बरस की उ़म्र में अपने चचा ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब के साथ यमन का भी तिजारती सफ़र फ़रमाया।[2] आप ने जो तिजारती सफ़र ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के लिये किये, उन में से दो सफ़र यमन[3] की जानिब भी थे। चुनान्चे रिवायत में है : ह़ज़रते ख़दीजा ने आप को जुरश (यमन में एक मक़ाम) की त़रफ़ दो बार तिजारत के लिये भेजा और उन में से हर सफ़र एक ऊंटनी के इ़वज़ था।[4]

ह़िल्फ़ुल फ़ुज़ूल में शिर्कत

शहरे ज़ुबैद का एक शख़्स अपना माल बेचने मक्का शहर में आया।

1 ترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی بدء نبوۃ النبی، 5/356-357، حدیث: 3640 ماخوذاً
2 سبل الہدیٰ والرشاد، الباب السابع فی سفرہ۔۔۔الخ، 2/139
3 यमन (Yemen) और मक्का का दरमियानी फ़ासिला तक़्रीबन 1034 किलो मीटर है।
4 مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ منہم خدیجۃ۔۔۔الخ، 4/178، حدیث: 4887

आ़स बिन वाइल नाम के एक शख़्स ने उस से माल ख़रीदा मगर क़ीमत न दी। उस ताजिर ने कुछ क़बीलों से फ़रियाद की मगर किसी ने उस की मदद न की। फिर येह शख़्स जबले अबी क़ुबैस[1] पर चढ़ गया और सब से फ़रियाद की। इस पर क़ुरैश के कुछ सुल्ह़ पसन्द लोगों ने एक इस्लाह़ी तह़रीक चलाई। क़ुरैश के बड़े बड़े सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन जदआ़न के घर पर जम्अ़ हुए, वहां नबिय्ये करीम عَلَيْهِ السَّلَام के चचा ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल मुत़्त़लिब ने येह राय पेश की, कि हमें बाहमी मुआ़हदा करना चाहिये। चुनान्चे क़ुरैश के सरदारों ने एक मुआ़हदा किया और पक्का इरादा कर लिया कि हम **बे अम्नी का ख़ातिमा, मुसाफ़िरों की ह़िफ़ाज़त, ग़रीबों की इमदाद, मज़्लूम की ह़िमायत और ज़ालिम का मुह़ासबा करेंगे।** इस मुआ़हदे में आप भी शरीक हुए। ए'लाने नुबुव्वत के बा'द भी आप इस मुआ़हदे में शिर्कत पर मसर्रत का इज़्हार करते और फ़रमाते : इस मुआ़हदे से मुझे इतनी ख़ुशी हुई कि अगर इस मुआ़हदे के बदले में कोई मुझे सुर्ख़ रंग के ऊंट भी देता तो मुझे इतनी ख़ुशी नहीं होती। आज भी अगर कोई मज़्लूम उस मुआ़हदे के तह़्त मुझे मदद के लिये पुकारे तो मैं उस की मदद के लिये तय्यार हूं।[2]

इस मुआ़हदे को "**ह़िल्फ़ुल फ़ुज़ूल**" के नाम से मौसूम किया गया। इस की वज्ह येह है कि बहुत पहले मक्का में एक मुआ़हदा हुवा था। उस मुआ़हदे का सबब बनने वालों में सब का नाम "**फ़ज़्ल**" था। इसी वज्ह से इस मुआ़हदे का नाम "**ह़िल्फ़ुल फ़ुज़ूल**" या'नी उन चन्द आदमियों का मुआ़हदा जिन के नाम "**फ़ज़्ल**" थे।[3]

---

[1] अबू क़ुबैस एक पहाड़ है जो मस्जिदे ह़राम के बाहर सफ़ा व मर्वह के क़रीब वाक़ेअ़ है। हुक्मे इलाही से दुन्या में सब से पहले येही पहाड़ पैदा हुवा। इस पहाड़ को "अल अमीन" भी कहा जाता है। (تفسیر در منثور، پ4، آل عمران، تحت الآیۃ:96، 2/266، بلد الامین، ص206 ملخصا)

[2] الروض الانف، حلف الفضول، 1/242-244 ملخصا

[3] السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، حرب الفجار، 1/265

चौथा बाब

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जवानी

Blessed Youth of the Holy Prophet

दूसरा सफ़रे शाम

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इब्तिदा से ही बेहतरीन किरदार के मालिक थे। जब आप की उ़म्र मुबारक 25 साल हुई तो आप की सदाक़त और दियानत के हर त़रफ़ चरचे होने लगे। मक्का की फ़ज़ाओं में आप के लक़ब **"सादिक़ व अमीन"** हर त़रफ़ गूंजने लगे। शहरे मक्का की एक मुअ़ज़्ज़ज़ और मालदार ख़ातून थीं जिन का नाम था **"ख़दीजा"**, इन्हें ऐसे अमानत दार शख़्स की ज़रूरत थी जो इन का माल मुल्के शाम ले कर जाए और वहां फ़रोख़्त कर के नफ़्अ़ कमा कर लाए। आप की अमानतो सदाक़त की शोहरत जब ह़ज़रते ख़दीजा तक पहुंची तो इन्हों ने आप को पैग़ाम भेजा कि आप मेरा माले तिजारत मुल्के शाम ले कर जाएं, जो तनख़्वाह मैं दूसरों को देती हूं आप को उस का दो गुना (Double) दूंगी। आप ने उन की येह दरख़्वास्त क़बूल फ़रमा ली और तिजारत का सामान और माल ले कर मुल्के शाम रवाना हो गए। इस सफ़र में ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का ग़ुलाम **"मैसरह"** भी आप के साथ था जो आप की ख़िदमत और दीगर ज़रूरिय्यात पूरी करता था। एक बार फिर जब आप मुल्के शाम के मश्हूर शह्‌र **"बुसरा"** पहुंचे तो वहां **"नस्तूरा"** राहिब की इ़बादत गाह के क़रीब क़ियाम फ़रमाया। वोह राहिब मैसरह को पहले से जानता था, इसी बुन्याद पर वोह उस के पास आया और आप की त़रफ़ इशारा कर के कहने लगा : येह कौन हैं जो इस दरख़्त के नीचे उतरे हैं ? मैसरह ने जवाब दिया : येह शहरे मक्का के रहने वाले हैं, बनू हाशिम से तअ़ल्लुक़ है, इन का नाम **"मुह़म्मद"** है और लक़ब **"अमीन"** है। राहिब कहने लगा : सिवाए नबी के आज तक इस दरख़्त के नीचे कोई नहीं उतरा। फिर उस ने पूछा : क्या इन की आंखों में सुर्ख़ी रहती है ? मैसरह ने जवाब दिया : हां है और वोह हर वक़्त रहती है। येह सुन कर नस्तूरा कहने

लगा : येही **अल्लाह** के आख़िरी नबी हैं, मुझे इन में वोह तमाम निशानियां नज़र आ रही हैं जो तौरैत व ज़बूर में पढ़ी हैं। काश ! मैं उस वक़्त ज़िन्दा होउं जब येह अपनी नुबुव्वत का ए'लान फ़रमाएंगे, अगर मैं ज़िन्दा रहा तो इन की भरपूर मदद करूंगा और इन की ख़िदमत में पूरी ज़िन्दगी गुज़ार दूंगा। ऐ मैसरह ! मैं तुम्हें नसीहत करता हूं कि कभी इन से जुदा मत होना, इन की ख़िदमत करते रहना, क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने इन्हें नुबुव्वत का शरफ़ अता फ़रमाया है।

आप सामाने तिजारत बेच कर जल्द वापस तशरीफ़ ले आए। जब आप का क़ाफ़िला मक्का वापस पहुंचा तो उस वक़्त हज़रत बीबी ख़दीजा मकान की छत पर बैठी हुई थीं। उन्हों ने येह मन्ज़र देखा कि **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दो फ़िरिश्ते धूप से साया किये हुए हैं, इस मन्ज़र ने हज़रते ख़दीजा के दिल पर गहरा असर किया। कुछ दिन के बा'द उन्हों ने अपने ग़ुलाम मैसरह से इस बात का ज़िक्र किया तो मैसरह ने बताया कि मैं तो पूरे सफ़र में इसी तरह के मनाज़िर देखता रहा हूं, फिर मैसरह ने उस तवील सफ़र में आप की सदाक़तो दियानत, हुस्ने सुलूक व ग़म ख़्वारी, मुआमलात को समझने और कारोबारी महारत के जो रूह परवर मनाज़िर अपनी आंखों से देखे वोह बयान किये, नस्तूरा राहिब जिस तरह आप पर फ़िदा हो गया था और आप के मुस्तक़्बिल के बारे में पेश गोइयां की थीं येह बताया, येह सुन कर हज़रते ख़दीजा के दिल में आप के लिये अक़ीदतो महब्बत पैदा हो गई।

हज़रते ख़दीजा से निकाह

हज़रते ख़दीजा मक्का की मालदार और बहुत मोह्तरम व मुअ़ज़्ज़ज़ ख़ातून थीं। आप का तअ़ल्लुक़ क़बीलए क़ुरैश की शाख़ बनू असद बिन

अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा से था, उन का सिल्सिलए नसब तीन वासित़ों से **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलता है।[1] अहले मक्का इन्हें इन की पाक दामनी की वज्ह से त़ाहिरा या'नी पाकबाज़ के लक़ब से याद करते थे। इन की उ़म्र उस वक़्त 40 साल हो चुकी थी। इन्हों ने दो शादियां की थीं और इन के दोनों शौहर इन्तिक़ाल कर गए थे। बड़े अमीरो कबीर अफ़्राद ने इन को शादी के पैग़ामात भेजे लेकिन इन्हों ने तमाम पैग़ामात को वापस कर दिया और येह तै़ कर लिया था कि अब निकाह़ नहीं करेंगी। लेकिन आप के अख़्लाक़, आ़दात, बरकात और ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़त सुन कर इन का दिल आप से निकाह़ की त़रफ़ माइल हुवा। इन्हों ने **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी ह़ज़रते सफ़िय्या को बुलाया। ह़ज़रते सफ़िय्या, बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के भाई अ़व्वाम बिन ख़ुवैलिद की बीवी थीं। उन्हें बुला कर उन से आप के कुछ ज़ाती ह़ालात के बारे में मा'लूमात लीं। फिर शाम के सफ़र से वापसी के तक़रीबन तीन माह बा'द इन्हों ने आप की त़रफ़ निकाह़ का पैग़ाम भेजा। इस रिश्ते को पसन्द करने की वज्ह ख़ुद ह़ज़रते ख़दीजा यूं बयान फ़रमाती हैं : मैं ने आप के अच्छे अख़्लाक़ और आप की सच्चाई की वज्ह से आप को पसन्द किया। आप ने इस दरख़्वास्त को अपने ख़ानदान के बड़ों और अपने चचाओं के सामने रखा। उन्हों ने येह रिश्ता मन्ज़ूर कर लिया। आप का निकाह़ हुवा जिस में आप के चचा अबू त़ालिब ने ख़ुत़्बा पढ़ा और अपने माल से बीस ऊंट ह़क़्क़े महर मुक़र्रर किया।[2] ह़ज़रते ख़दीजा तक़रीबन 25 साल तक ह़ुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में रहीं। इन की ज़िन्दगी में आप ने कोई दूसरा निकाह़ न फ़रमाया। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक फ़रज़न्द ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के सिवा बाक़ी सारी औलाद ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से हुई। ह़ज़रते

[1] फ़ैज़ाने ख़दीजतुल कुब्रा, स. 35-38

[2] شرح الزرقانی علی المواہب، تزوجہ من خدیجۃ، 1/370-376 مختصراً

ख़दीजा ने अपनी सारी दौलत आप के क़दमों में निसार कर दी और सारी उ़म्र आप की ख़िदमत करते गुज़ारी।

ता'मीरे का'बा में किरदार

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक जब 35 बरस हुई तो ज़बर दस्त बारिश से ह़रमे का'बा में सैलाबी पानी आ गया। इस से का'बे शरीफ़ की इमारत को काफ़ी नुक़्सान पहुंचा और इस का कुछ ह़िस्सा भी गिर गया। क़ुरैश ने तै किया कि मुकम्मल इमारत को तोड़ कर फिर से का'बे की एक मज़बूत़ इमारत बनाई जाए जिस का दरवाज़ा भी बुलन्द हो और उस की छत भी हो।[1] चुनान्चे क़ुरैश ने मिलजुल कर इस काम को शुरूअ़ कर दिया। इस ता'मीर में आप भी शरीक हुए और पथ्थर उठा उठा कर लाते रहे। मुख़्तलिफ़ क़बीलों ने का'बे शरीफ़ की इमारत के मुख़्तलिफ़ ह़िस्से आपस में तक़्सीम कर लिये। लेकिन जब ह़जरे अस्वद रखने का मर्ह़ला आया तो फ़ितनों ने सर उठाना शुरूअ़ कर दिया, क़बीलों का आपस में सख़्त इख़्तिलाफ़ हो गया।

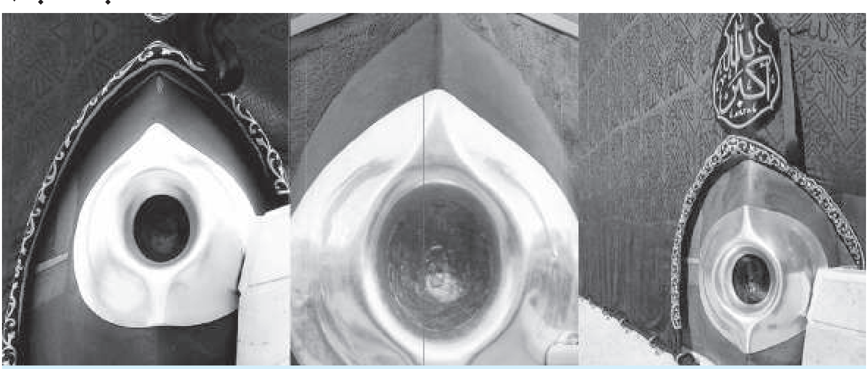

येह ह़जरे अस्वद की तसावीर हैं। ह़जरे अस्वद एक पथ्थर है जो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ जन्नत से उतारा गया, इस पथ्थर को छूना, चूमना गुनाहों को मिटाता है। अहले अ़रब में येह पथ्थर बहुत मोह़तरम समझा जाता था। आज भी येह पथ्थर का'बे की दीवार में नस्ब है।

1 السيرة الحلبية، باب بنيان قريش الكعبة...الخ، 1/204، مختصراً

हर क़बीले की ख़्वाहिश थी कि ह़जरे अस्वद को नस्ब करने का ए'ज़ाज़ उसे ह़ासिल हो, अगर कोई क़बीला इस में रुकावट बने तो तलवार के ज़ोर से उस का रास्ता रोका जाए। चार दिन इसी बात में गुज़र गए कि ह़जरे अस्वद कौन नस्ब करेगा। एक बूढ़े शख़्स ने इस झगड़े को टालने के लिये येह तज्वीज़ पेश की, कि कल जो शख़्स सुब्ह़ सवेरे सब से पहले ह़रमे मक्का में दाख़िल हो उसी से हम अपना फ़ैसला करवाएंगे। वोह जो फ़ैसला दे सब क़बाइल उसे तस्लीम करेंगे। इस बात पर तमाम क़बाइल का इत्तिफ़ाक़ हो गया। ख़ुदा की शान कि सुब्ह़ को जो शख़्स सब से पहले ह़रमे मक्का में दाख़िल हुवा वोह नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही थे। आप को देखते ही उन की मसर्रत की इन्तिहा न रही, सब कहने लगे : येह अमीन हैं, येह जो भी फ़ैसला फ़रमाएंगे हम तस्लीम करेंगे। आप ने इस झगड़े को कमाले दानिश मन्दी का मुज़ाहरा करते हुए इस त़रह़ ख़त्म किया कि फ़रमाया : जो क़बीले ह़जरे अस्वद रखने का तक़ाज़ा करते हैं वोह अपना एक एक सरदार चुन लें। उन्हों ने अपने अपने सरदार चुन लिये। फिर आप ने अपनी चादरे मुबारक को बिछा कर ह़जरे अस्वद को उस पर रखा और सरदारों से फ़रमाया कि वोह सब मिल कर इस चादर को थाम कर ह़जरे अस्वद को उठाएं। सब ने ऐसे ही किया और जब ह़जरे अस्वद अपने मक़ाम तक पहुंच गया तो आप ने बरकत वाले हाथों से उस मुक़द्दस पथ्थर को उठा कर उस की जगह रख दिया। इस त़रह़ आप की ह़िक्मत और दानिश मन्दी से फ़ितना व फ़साद के शो'ले भी बुझ गए और सब के दिलों में मसर्रतो शादमानी की लहर भी दौड़ गई।[1]

अब तक का ग़ैर मा'मूली किरदार

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तमाम ज़िन्दगी ए'लाने नुबुव्वत से पहले भी बेहतरीन अख़्लाक़ो आ़दात का मज्मूआ़ थी। **सच्चाई,**

[1] السيرة النبوية لابن هشام، حديث بنيان الكعبة...الخ، 2/13 ملخصاً

दियानत दारी, वफ़ादारी, वा'दे की पाबन्दी, बड़ों की अ़ज़्मत, छोटों से शफ़्क़त, कमज़ोरों से हमदर्दी, मेह्‌रबानी व सख़ावत, दूसरों की ख़ैर ख़्वाही, रह्‌म दिली व नरमी अल ग़रज़ ! तमाम नेक बातों और अच्छी आ़दतों में आप बे मिस्लो बे मिसाल थे । हि़र्स, फ़रेब, झूट, बद अ़ह्‌दी, शराब ख़ोरी, नाच गाना, लूटमार, चोरी, फ़ोह्‌श गोई वग़ैरा वग़ैरा जैसी बुरी आ़दतें जो ज़मानए जाहिलिय्यत में बहुत आ़म थीं, आप की ज़ाते गिरामी इन तमाम बातों से पाको साफ़ रही । बल्कि आप की शान येह है कि अ़रब के उस गिरे हुए मुआ़शरे में भी आप की शराफ़त, अमानत, दियानत और सदाक़त दूर दूर तक मश्हूर थी । मक्का के लोगों के दिलों में आप के अख़्लाक़ की वज्ह से आप की एक ख़ास इ़ज़्ज़त थी । आप की उ़म्र मुबारक तक़रीबन 40 साल हो गई लेकिन जाहिलिय्यत के तमाम बेहूदा, मुश्रिकाना और जाहिलाना कामों से आप का दामन पाक रहा । शहरे मक्का जहां बुत परस्ती ऐसी आ़म थी कि ख़ुद ख़ानए का'बा में 360 बुत मौजूद थे जिन की पूजा होती थी, आप ने कभी उन बुतों के आगे सर नहीं झुकाया । आप की गुज़ारी हुई इस ज़िन्दगी का कमाल था कि ए'लाने नुबुव्वत के बा'द आप के दुश्मनों ने बड़ी कोशिश की, कि कोई छोटा सा ऐ़ब आप की ज़िन्दगी के किसी दौर में मिल जाए, कोई कमज़ोर बात आप की अब तक की ज़िन्दगी में साबित हो जाए तो उसे सामने ला कर आप की इ़ज़्ज़तो वक़ार पर ह़म्ला किया जाए और आप को लोगों के सामने कमतर साबित किया जाए । मगर आप के हज़ारों दुश्मन सोचते सोचते थक गए लेकिन कोई एक भी ऐसा वाक़िआ़ नहीं मिल सका जिस से आप के किरदार पर उंगली उठाते । इस लिये जैसे ही आप ने ए'लाने नुबुव्वत फ़रमाया ख़ुश बख़्त लोग आप का कलिमा पढ़ कर दिलो जान आप पर क़ुरबान करने लगे ।

पांचवां बाब

वही़ और तब्लीग़े इस्लाम के मराहि़ल

Divine Revelation and the stages of preaching Islam

ग़ारे ह़िरा में इबादत

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक जब 40 साल हुई तो आप की ज़ाते अक़्दस में एक नया इन्क़िलाब पैदा हो गया। मह़ब्बते इलाही और इ़बादते इलाही का ज़ौक़ आप को मक्की ज़िन्दगी की मसरूफ़िय्यात से निकाल कर एक ग़ार में ले गया, वहां आप अकेले रह कर अल्लाह करीम की इ़बादत में मगन रहते। का'बा शरीफ़ से थोड़ी दूरी पर वाक़ेअ़ "**ग़ारे ह़िरा**" में कई कई दिनों का खाना पानी ले कर तशरीफ़ ले जाते और ग़ार के पुर सुकून माह़ोल में इ़बादत और ग़ौरो फ़िक्र में मसरूफ़ रहा करते थे। जब खाना पानी ख़त्म होता तो कभी ख़ुद घर पर आ कर ले जाते और कभी ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا वहां पहुंचा दिया करतीं, आज भी येह नूरानी ग़ार अपनी अस्ली ह़ालत में मौजूद है।

इब्तिदाए वह़ी और ए'लाने नुबुव्वत

वह़ी की इब्तिदा सच्चे ख़्वाबों से हुई, आप रात को नींद की ह़ालत में जो ख़्वाब देखते बा'द में उस की ता'बीर यूं वाज़ेह़ हो जाती जैसे दिन का उजाला और सूरज की रोशनी। छे माह इसी त़रह़ गुज़र गए। रमज़ान के मुबारक महीने में जब आप मा'मूल के मुत़ाबिक़ ग़ारे ह़िरा की तन्हाइयों में गोशा नशीन थे कि एक रात तमाम फ़िरिश्तों के सरदार ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने रब का पहला रूह़ परवर पैग़ाम ब सूरते वह़ी आप तक पहुंचाया।[1] फिर कुछ अ़र्से वह़ी नाज़िल होने का सिलसिला बन्द रहा। कुछ अ़र्से बा'द आप कहीं जा रहे थे कि किसी ने "**या मुह़म्मद**" कह कर आप

[1] ارشاد الساری، کتاب کیف کان بدء الوحی...الخ، باب 3، 1/103، تحت الحدیث:3

को पुकारा। आप ने आस्मान की त़रफ़ नज़र उठा कर देखा तो ह़ज़रते जिब्रील जो ग़ार में आए थे अब ज़मीनो आस्मान के दरमियान एक कुरसी पर बैठे हैं। आप पर ख़ौफ़ त़ारी हुवा, आप घर आए कम्बल ओढ़ कर लैट गए। उस वक़्त येह आयाते करीमा नाज़िल हुईं :

يَاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ﴿۱﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ۪ۙ﴿۲﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۪ۙ﴿۳﴾ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۪ۙ﴿۴﴾ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۪ۙ﴿۵﴾ (پ29،المدثر:1تا5)

तरजमा : ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ और अपने रब ही की बड़ाई बोलो और अपने कपड़े पाक रखो और बुतों से दूर रहो।

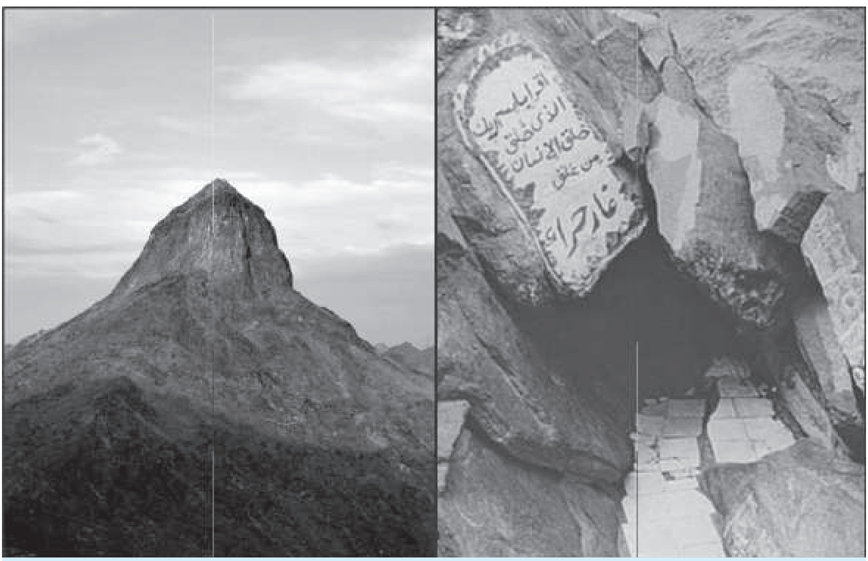

ग़ारे ह़िरा मस्जिदे ह़राम से तक़्रीबन 4 किलो मीटर के फ़ासिले पर जबले नूर नामी पहाड़ में वाक़ेअ़ है, ग़ार ज़मीन से तक़्रीबन 350 मीटर से ज़ियादा की बुलन्दी पर है। इस ग़ार की ख़ासिय्यत येह है कि इस के अन्दर से ख़ानए का'बा का नज़ारा बराहे रास्त मुम्किन है जब कि येह ऐसे रुख़ पर है कि सूरज की शुआ़एं इस के अन्दर दाख़िल नहीं होतीं। ग़ार की लम्बाई तक़्रीबन 4 मीटर और चौड़ाई तक़्रीबन 1.5 मीटर है। सरकार عَلَيْهِ السَّلَام के दादा ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब भी रमज़ान के महीने में इसी ग़ार में जा कर इ़बादत करते थे। आज भी ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल इस ग़ार की ज़ियारत से दीदा व दिल मुनव्वर करते हैं।

अपने रब का येह हुक्म मिलते ही आप ने ह़क़ का अ़लम बुलन्द करने और दुन्या को नूरे तौह़ीद से मुनव्वर करने का पक्का इरादा फ़रमा लिया।[1]

तब्लीग़े इस्लाम का आग़ाज़ और पहला मर्ह़ला

अल्लाह के आखि़री नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब से पहले खु़फ्या तौ़र पर उन लोगों को दा'वते इस्लाम दी जिन पर आप को ए'तिमाद भी था और जो आप के ह़ालात से वाक़िफ़ थे। इन ह़ालात में औ़रतों में सब से पहले ह़ज़रते ख़दीजा, आज़ाद मर्दों में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, लड़कों में ह़ज़रते अ़ली बिन अबू त़ालिब, आज़ाद कर्दा गु़लामों में ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा और गु़लामों में ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم ने ईमान क़बूल किया।[2] तब्लीग़े इस्लाम का येह सिल्सिला खु़फ्या त़रीक़े से जारी रहा, जिस त़रह़ प्यासा मीठे और ठन्डे पानी की त़रफ़ लपकता है ऐसे ही खु़श नसीब रूहें दीवाना वार इस दा'वते ह़क़ को क़बूल करने के लिये लपक्तीं। तीन साल के इस अ़र्से में मुसल्मानों की एक जमाअ़त तय्यार हो गई। इस दौरान आप दारे अरक़म में भी रहे और वहां मुसल्मानों की तरबियत फ़रमाते।[3]

तब्लीग़े इस्लाम का दूसरा मर्ह़ला

तीन साल बा'द येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

وَ اَنْذِرْ عَشِیْرَتَكَ الْاَقْرَبِیْنَ ﴿۲۱۴﴾ (پ19، الشعرآء:214)

तरजमा : और ऐ मह़बूब अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ।

1 بخاری، کتاب کیف کان بدء الوحی...الخ، باب3، 1/9، حدیث:4
2 المواہب اللدنیہ، المقصد الاول، دقائق حقائق بعثتہ، 1/115
3 السیرۃ الحلبیۃ، باب استخفائہ ۔۔۔ الخ، 1/402

जिस में हुक्म दिया गया कि आप अपने क़रीबी ख़ानदान वालों को भी दा'वते इस्लाम दें । आप ने एक दिन सफ़ा पहाड़ी की चोटी पर चढ़ कर कुरैश वालों को बुलाया । क़बीलए कुरैश के तमाम लोग जम्अ़ हो गए तो **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! अगर मैं तुम लोगों से येह कह दूं कि इस पहाड़ के पीछे एक लश्कर छुपा हुवा है जो तुम पर ह़म्ला करने वाला है तो क्या तुम लोग मेरी बात का यक़ीन कर लोगे ? तो सब ने एक ज़बान हो कर कहा : हां ! हां ! हम आप की बात का यक़ीन कर लेंगे क्यूं कि हम ने आप को हमेशा सच्चा और अमीन ही पाया है । आप ने फ़रमाया : तो फिर मैं येह कहता हूं कि मैं तुम लोगों को अ़ज़ाबे इलाही से डरा रहा हूं और अगर तुम लोग ईमान न लाओगे तो तुम पर **अल्लाह** पाक का अ़ज़ाब आएगा । येह सुन कर तमाम कुरैश नाराज़ हो कर चले गए । उन में आप का चचा अबू लहब भी था । वोह आप की शान में बद ज़बानी करने लगा, आप ने तो इस गुस्ताख़ी का कोई जवाब न दिया लेकिन आप के रब ने उस की मज़म्मत में कुरआने पाक की एक मुकम्मल सूरत नाज़िल फ़रमाई ।[1]

तब्लीग़े इस्लाम का तीसरा मर्ह़ला

ए'लाने नुबुव्वत के चौथे साल सूरए ह़िज्र की येह आयत नाज़िल हुई :

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۴﴾ (پ14،الحجر:94)

तरजमा : तो अ़लानिया कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है और मुश्रिकों से मुंह फेर लो ।

1 بخاری،کتاب التفسیر،سورۃ الشعراء،باب ولا تخزنی یوم یبعثون،3/294،حدیث:4770

जिस में **अल्लाह** पाक ने हुक्म फ़रमाया कि खुल्लम खुल्ला सब को दीन की तब्लीग़ फ़रमाइये । इस के बा'द रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'लानिया त़ौर पर दीने इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाने लगे और शिर्क व बुत परस्ती की खुल्लम खुल्ला बुराई बयान फ़रमाने लगे । ऐसे माह़ोल में तमाम कु़रैश बल्कि पूरा अ़रब आप की मुख़ालफ़त करने लगा ।[1]

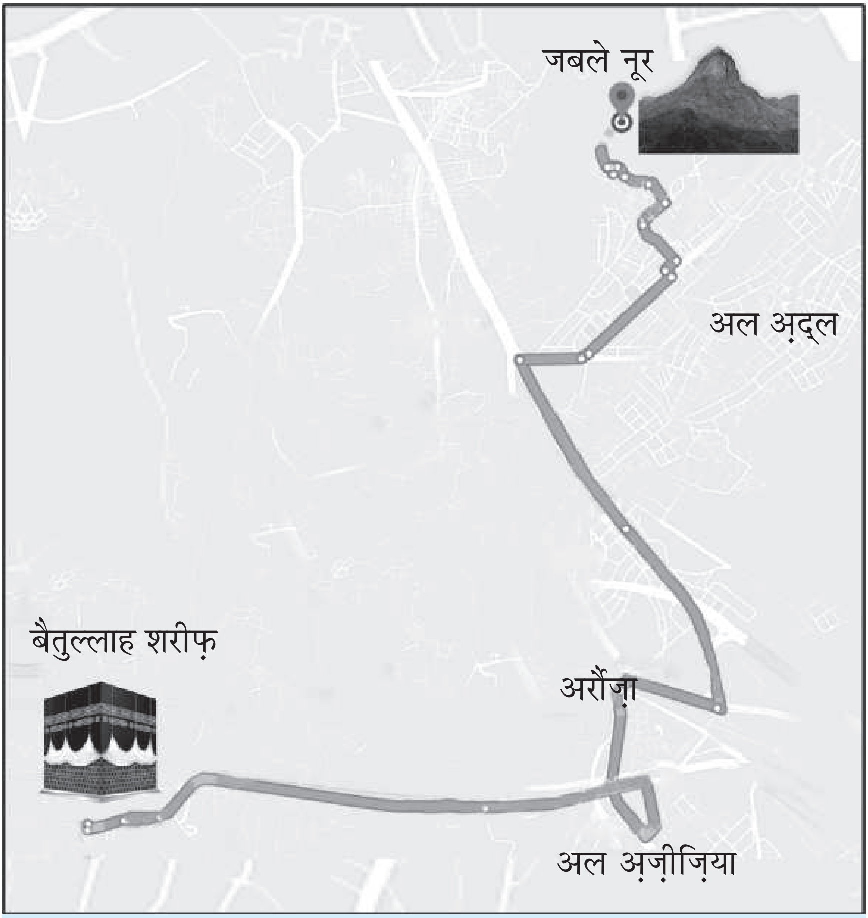

बैतुल्लाह से जबले नूर पर ग़ारे ह़िरा का रास्ता

1 شرح الزرقانی علی المواہب، المقصد الاول، الاجہار بدعوتہ، 1/462

छटा बाब

कुफ़्फ़ार के मज़ालिम
और
हिजरते ह़बशा

Brutality of disbelievers
and
migration to Abyssinia

काफ़िरों का आप पर ज़ुल्मो सितम

इस्लाम की अ़लल ए'लान तब्लीग़ शुरूअ़ होते ही ज़ुल्मो सितम की जां सोज़ आंधियां चल पड़ीं। कुफ़्फ़ारे मक्का बनू हाशिम के इन्तिक़ाम और जंग के ख़त़रे की वज्ह से **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहीद तो न कर सके लेकिन जितना हो सका उन्हों ने ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े। आप को काहिन, जादूगर, पागल, दीवाना कहते और आप की शाने अ़ज़्मत निशान में गुस्ताख़ाना जुम्ले बकते, फब्तियां कसते, कभी कूड़ा करकट उछालते तो कभी दरवाज़ए रह़मत पर जानवरों का ख़ून डालते, कभी रास्तों में कांटे बिछाते तो कभी बदने अन्वर को निशाना बनाते। एक दफ़्अ़ा जब आप ह़रमे का'बा में सज्दा कर रहे थे तो उसी ह़ालत में उ़क़्बा नामी एक काफ़िर ने मुबारक पीठ पर बच्चादान (या'नी वोह खाल जिस में ऊंटनी का बच्चा लिपटा हुवा होता है) रख दिया, काफ़िर येह मन्ज़र देख कर हंसने लगे और ख़ुशी से बावले हो रहे थे, फिर ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا तशरीफ़ लाईं और उस बच्चादान को वहां से हटाया।[1]

एक बार रसूले रह़मतो शफ़्क़त صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़रमे का'बा में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उ़क़्बा नामी एक काफ़िर ने आप के गले में चादर का फन्दा डाल कर इस ज़ोर से खींचा कि आप का दम घुटने लगा। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ येह मन्ज़र देख कर आगे बढ़े और उस काफ़िर को धक्का दे कर हटाया। बा'द में काफ़िरों ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ पर भी तशद्दुद किया।[2]

1 بخاری، کتاب الصلوٰۃ، باب المرأۃ تطرح عن المصلی...الخ، 1/193، حدیث:520
2 بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مالقی النبی واصحابہ...الخ، 2/575 حدیث:3852

सह़ाबए किराम पर काफ़िरों का ज़ुल्मो सितम

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ काफ़िरों ने सह़ाबए किराम पर भी ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े।

एक दफ़्आ़ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने ह़रमे का'बा में ख़ुत़्बा देना शुरूअ़ किया। येह देख कर मुश्रिकीन व कुफ़्फ़ार मुसल्मानों पर टूट पड़े। ह़ज़रत सिद्दीक़े अक्बर को इतना मारा कि उन का चेहरा ख़ून से भर गया। नाक कान सब लहू लुहान हो गए और उन का चेहरा पहचान में न आता था। ह़ज़रते अबू बक्र बेहोश हो गए और देर तक बेहोश रहे।[1]

ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ उस ज़माने में इस्लाम लाए जब सिर्फ़ चन्द ही आदमी मुसल्मान हुए थे। क़ुरैश ने इन को बेह़द सताया। यहां तक कि आग के अंगारों पर इन को चित लिटाया और एक शख़्स इन के सीने पर पाउं रख कर खड़ा रहा। यहां तक कि इन की पीठ से पिघल्ने वाली चरबी से वोह कोएले बुझ गए। ज़िन्दगी भर इन की पीठ पर उन कोएलों के दाग़ रहे। एक बार ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में वोह दाग़ देखे तो उन का दिल भर आया और रो पड़े।[2]

ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के गले में रस्सी बांध कर बाज़ारों में घसीटा जाता। इन की पीठ पर लाठियों की बारिश की जाती, दोपहर के वक़्त तेज़ धूप में गर्म गर्म रेत पर इन को लिटा कर इतना भारी पथ्थर इन की छाती पर

1 تاریخ ابن عساکر، رقم3398، عبداللہ یقال عتیق۔۔۔الخ، 49/30

2 طبقات ابن سعد، رقم:43، خباب بن الارت، 3/122۔123

रख दिया जाता था कि इन की ज़बान बाहर निकल आती थी। इस ह़ाल में भी येह अह़द अह़द के ना'रे लगाते थे।[1]

ऐसा नहीं था कि सिर्फ़ मर्दों को ही ज़ुल्मो सितम का निशाना बनाया जाता बल्कि वोह ख़वातीन जो इस्लाम क़बूल करतीं उन्हें भी तकालीफ़ का सामना करना पड़ता। ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर की वालिदा ह़ज़रते सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا वोह ख़ुश बख़्त ख़ातून हैं जिन्हों ने सब से पहले अपने ख़ून का नज़राना पेश किया। येह बूढ़ी थीं, अबू जह्ल ने इन्हें नेज़ा मार कर शहीद कर दिया था।[2] इस्लाम की पहली शहीदा होने का ए'ज़ाज़ इन्हें ह़ासिल है।

हिजरते ह़बशा

जब कुफ़्फ़ाराने क़ुरैश मुसल्मानों को तक्लीफ़ देने से बाज़ न आए बल्कि उन के मज़ालिम में इज़ाफ़ा होने लगा तो **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने जां निसार सह़ाबा को इजाज़त दी कि वोह हिजरत कर के ह़बशा[3] चले जाएं।[4] ह़बशा का बादशाह नजाशी ईसाई दीन पर अ़मल करता था और इन्साफ़ पसन्द और नर्म दिल था। चुनान्चे ए'लाने नुबुव्वत के पांचवें साल ग्यारह मर्द और चार औ़रतों के एक क़ाफ़िले ने अपने प्यारे वत़न को छोड़ कर ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की। इसे हिजरते ऊला कहते हैं। कुछ दिनों के बा'द मज़ीद कई सह़ाबा व सह़ाबियात ने ह़बशा की त़रफ़ हिजरत

1 شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، اسلام حمزۃ، 1/498
2 شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، اسلام حمزۃ، 1/496
3 मौजूदा अफ़्रीक़ी मुल्क एथोपिया (Ethiopia) के कुछ अ़लाक़े जिन्हें अहले अ़रब ह़बशा से मौसूम करते थे। यहां शाहे ह़बशा नजाशी की ह़ुकूमत थी जो बा'द में सआ़दते इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए, इन का मज़ार एथोपिया में ही है।
4 شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، الھجرۃ الاولیٰ الی الحبشۃ، 1/502

की । यहां तक कि ह़बशा हिजरत करने वालों की ता'दाद 82 अफ़्राद तक पहुंच गई ।[1] येह देख कर कुरैश ने ह़बशा के बादशाह की त़रफ़ एक वफ़्द भेजा, जिस ने बादशाह से इसरार किया कि वोह इन मुसल्मानों को कुरैश के ह़वाले कर दे मगर कुफ़्फ़ार की येह कोशिशें नाकाम हुईं ।[2]

हिजरते ह़बशा के रास्ते का नक़्शा

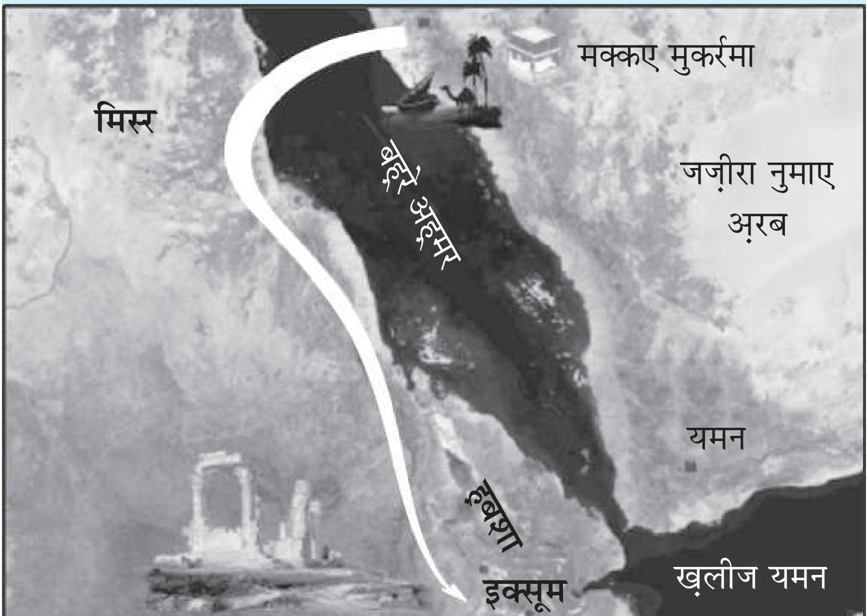

ह़बशा में मौजूद मस्जिदे नजाशी

1 شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، الھجرۃ الثانیۃ الی الحبشۃ۔۔۔ الخ، 31/2
2 شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، الھجرۃ الاولیٰ الی الحبشۃ، 506/1

सातवां बाब

बॉयकोट
और
आ़मुल हुज़्न

Boycott
and
The year of grief

शिअ़्बे अबी त़ालिब का मुह़ासरा

कुफ़्फ़ारे मक्का को येह ख़ुश फ़हमी थी कि वोह अपने वह़शियाना ज़ुल्मो सितम से इस्लाम की तह़रीक को या तो ख़त्म कर देंगे या कमज़ोर कर देंगे, लेकिन उन की तमाम तर कोशिशों के बा वुजूद मुसल्मानों की ता'दाद बढ़ती जा रही थी, इस सूरते ह़ाल से वोह आपे से बाहर होने लगे। तमाम सरदाराने क़ुरैश और मक्का के दूसरे कुफ़्फ़ार ने येह स्कीम बनाई कि **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के ख़ानदान का मुकम्मल बॉयकॉट कर दिया जाए। चुनान्चे इस तज्वीज़ के मुत़ाबिक़ तमाम क़बाइले क़ुरैश ने येह मुआ़हदा किया कि जब तक बनी हाशिम के ख़ानदान वाले हु़ज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام को हमारे ह़वाले न कर दें, कोई शख़्स बनू हाशिम के ख़ानदान से शादी बियाह न करे, कोई शख़्स इन लोगों के हाथ किसी क़िस्म की ख़रीदो फ़रोख़्त न करे, कोई शख़्स इन लोगों से मेलजोल, सलाम कलाम और मुलाक़ात न करे। कोई शख़्स इन लोगों के पास खाने पीने का कोई सामान न जाने दे। मन्सूर बिन इ़क्रमा ने इस मुआ़हदे को लिखा और तमाम सरदाराने क़ुरैश ने इस पर दस्त ख़त़ कर के इस दस्तावेज़ को का'बे के अन्दर लटका दिया। अबू लहब के सिवा तमाम बनू हाशिम अबू त़ालिब की वोह घाटी जिस को अब शिअ़्बे अबी त़ालिब कहते हैं उस में मह़सूर हो गए। उन में ग़ैर मुस्लिम भी शामिल थे जो सिर्फ़ अपने ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ की वज्ह से आप के साथ शरीक हुए।[1] तीन साल तक तमाम बनू हाशिम इस घाटी में रहे। येह तीन साल का ज़माना इस क़दर सख़्त था कि बनू हाशिम दरख़्तों के पत्ते और सूखे चमड़े पका पका कर खाते थे। भूक से बिलक्ते हुए नन्हे बच्चे इस क़दर ज़ोर ज़ोर से रोते

1 شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، دخول الشعب وخبر الصحیفۃ، 2/12 تا 14

कि उन की आवाज़ें दूर दूर तक सुनाई देतीं। मगर उन सख़्त दिल काफ़िरों ने हर त़रफ़ से घाटी पर पहरा बिठाया हुवा था कि खाने पीने की कोई शै अन्दर न पहुंचे।[1] तीन साल इसी ह़ालत में गुज़र गए तो **अल्लाह करीम** ने अपने ह़बीब عَلَيْهِ السَّلَام को ख़बर दी कि उस मुआ़हदे को दीमक इस त़रह़ चाट गई है कि ख़ुदा के नाम के सिवा उस में कुछ बाक़ी नहीं रहा। आप ने येह ख़बर अबू त़ालिब को दी, उस ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को जा कर कहा : ऐ गुरौहे क़ुरैश ! मेरे भतीजे ने मुझ को इस त़रह़ ख़बर दी है। तुम अपना मुआ़हदा लाओ ! अगर येह ख़बर सह़ीह़ निकली तो तुम इस ज़ुल्म व सख़्ती से बाज़ आओ और अगर ग़लत़ निकली तो मैं अपने भतीजे को तुम्हारे ह़वाले कर दूंगा। वोह इस पर राज़ी हो गए और जब जा कर देखा तो उन के होश उड़ गए कि जैसा आप ने इर्शाद फ़रमाया था ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ उसी त़रह़ मुआ़मला था।[2]

आ़मुल ह़ुज़्न या'नी ग़म का साल

ए'लाने नुबुव्वत के दसवें साल जब कि शिअ़बे अबी त़ालिब के मुह़ासरे को ख़त्म हुए अभी थोड़ा ही वक़्त गुज़रा था कि **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब का इन्तिक़ाल हो गया। अबू त़ालिब की वफ़ात से आप को बहुत सदमा हुवा।[3] अबू त़ालिब की वफ़ात को एक हफ़्ता भी न गुज़रा था कि आप की ज़ौजा ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا भी दुन्या से पर्दा फ़रमा गईं। मक्के में येह दो हस्तियां ऐसी थीं जो आप عَلَيْهِ السَّلَام के बहुत क़रीब थीं। क़दम क़दम पर इन्हों ने आप की ह़िमायतो मदद की। जब आप

1 सीरते मुस्त़फ़ा, स. 139

2 شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، الھجرۃ الثانیۃ۔۔۔الخ، 2/37 ملخصا

3 شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، وفاۃ خدیجۃ وابی طالب، 2/38

ने कुफ़्रो शिर्क के तारीक अंधेरों में तौह़ीद की शम्अ़ रोशन की तो कुफ़्फ़ार ने जो तूफ़ाने बद तमीज़ी बरपा किया येह दोनों हस्तियां ही उस मुश्किल वक़्त में आप का सहारा बनीं। इन की वफ़ात के ह़ादिसे एक ही साल में बड़ी क़लील मुद्दत में वाक़ेअ़ हुए और आप को इस से बहुत रन्जो ग़म हुवा, इस लिये आप ने उस साल को ग़म का साल या'नी "**आ़मुल हुज़्न**" क़रार दिया।[1]

शिअ़्बे अबी त़ालिब की एक पुरानी तस्वीर। अब येह जगह मस्जिदे ह़राम में शामिल कर दी गई है।

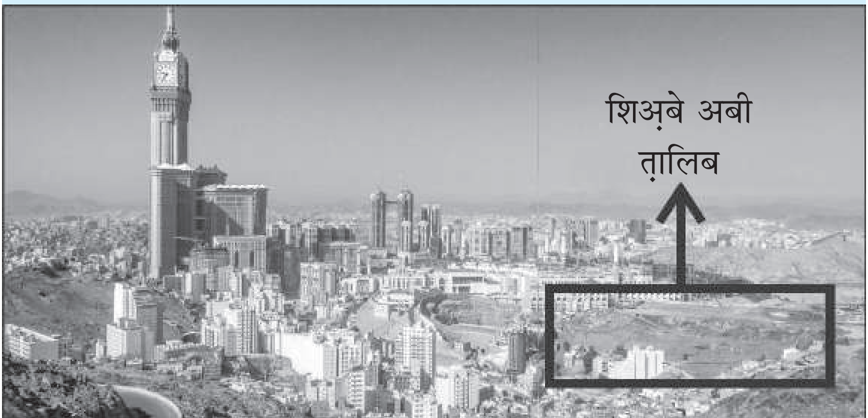

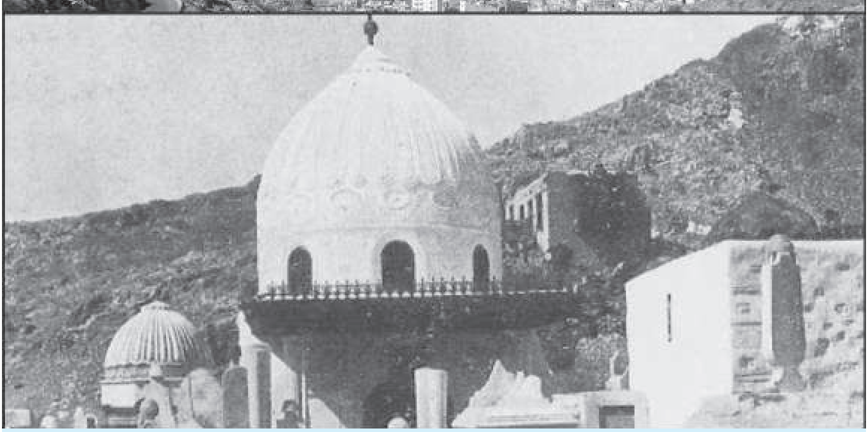

ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ عنہا के मज़ार शरीफ़ की एक क़दीम तस्वीर

[1] شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، وفاۃ خدیجۃ وابی طالب، 2/48تا49

आठवां बाब

सफ़रे ताइफ़

और

हिजरते मदीना

Journey to Taif
and
migration to Madinah

सफ़रे ताइफ़ के वाक़िआत

हज़रते ख़दीजा और अबू तालिब के इन्तिक़ाल के बा'द काफ़िरों के ज़ुल्मो सितम में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया। उन के इस रवय्ये के बा'द आप ने इरादा फ़रमाया कि अगर वोह ताइफ़ जा कर दा'वते इस्लाम दें और वहां के सरदार ईमान क़बूल कर लेते हैं तो इस से मुसल्मानों को क़ुव्वत और ताक़त मिलेगी। येह सोच कर आप ने ताइफ़ के सफ़र का इरादा फ़रमाया। आप ताइफ़ के लिये पैदल सफ़र पर निकले, आप के साथ सिर्फ़ आप के ग़ुलाम हज़रते ज़ैद बिन हारिसा थे। ताइफ़ पहुंच कर आप ने कुछ दिन आराम के बा'द वहां के सरदारों से मुलाक़ात की। तीन सरदार अ़ब्दे यालील और इस के दो भाई मस्ऊ़द और ह़बीब को आप ने इस्लाम की दा'वत दी। मगर उन्हों ने दा'वत क़बूल करने के बजाए न सिर्फ़ आप का मज़ाक़ उड़ाया बल्कि ताइफ़ के बद मआ़श और शरीर लोग आप के पीछे लगा दिये जो जुलूस की शक्ल में इकठ्ठे हो गए और आप का तआ़क़ुब करने लगे, येह लोग फब्तियां कसते, नाज़ेबा जुम्ले कहते और अपने बुतों के ना'रे लगाते हुए आप के पीछे लग गए और आप पर पथ्थर बरसाने शुरूअ़ कर दिये। उन्हों ने **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक क़दमों को निशाना बनाया और इतने पथ्थर मारे कि पाउं मुबारक ज़ख़्मी हो गए और ख़ून बहने लगा। इतना ख़ून बहा कि आप के जूते ख़ून से भर गए। आप के ग़ुलाम हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه आप को पथ्थरों से बचाने के लिये ख़ुद आगे आते और पथ्थर अपने बदन पर लेते जिस से वोह ख़ुद भी लहू लुहान हो गए। जब आप दर्द की शिद्दत की वज्ह से बैठ जाते तो कोई शरीर आगे बढ़ता और बड़ी बे दर्दी से आप को

झटका दे कर खड़ा कर देता और चलने पर मजबूर करता। जब आप चलने लगते तो येह ज़ालिम फिर आप पर पथ्थर बरसाते, गालियां देते, तालियां बजाते और हंसी उड़ाते। आख़िर कार आप ने ज़ैद बिन हारिसा के साथ क़रीब में मौजूद अंगूरों के बाग़ में पनाह ली। येह बाग़ मश्हूर काफ़िर और आप के दुश्मन उत्बा बिन रबीआ का था। आप की हालत देख कर वोह भी आप को रहम भरी नज़रों से देखने लगा। उस ने आप के लिये अपने ग़ुलाम के हाथ अंगूरों का ख़ोशा भेजा जो आप ने क़बूल फ़रमाया। आप की बातें सुन कर अंगूर लाने वाला नसरानी ग़ुलाम अद्दास आप पर ईमान ले आया और आप के हाथ पाउं चूमने लगा।[1]

येह ताइफ़ में वाक़ेअ मस्जिदे अद्दास है। कहा जाता है कि येह वोही जगह है जहां आप ने ज़ख़्मी होने के बा'द कुछ देर आराम फ़रमाया था। याद रहे कि ताइफ़ (Taif) मक्का शरीफ़ से तक़रीबन 91 किलो मीटर के फ़ासिले पर एक शहर है। येह सत्हे समुन्दर से तक़रीबन साढ़े पांच हज़ार फ़िट की बुलन्दी पर वाक़ेअ है, यहां मौसिम बड़ा ख़ुश गवार रहता है और इतनी गर्मी नहीं होती जितनी कि अ़रब के दूसरे अ़लाक़ों में होती है। यहां के अंगूर और शहद काफ़ी मश्हूर हैं। अ़रब का येह सब से पहला शहर है जिस के अतराफ़ में फ़सील थी।

1 شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، خروجہ الی الطائف، 2/49تا56، ملتقطا

सब से सख़्त दिन

बहुत अ़र्सा गुज़र जाने के बा'द एक बार ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : क्या जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त कोई दिन आप पर गुज़रा है ? तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : हां ऐ आ़इशा ! वोह दिन मेरे लिये जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त था, जब मैं ने त़ाइफ़ में वहां के एक सरदार "अ़ब्दे यालील" को इस्लाम की दा'वत दी। उस ने दा'वते इस्लाम को क़बूल न किया और अहले त़ाइफ़ ने मुझ पर पथराव किया। मैं इस रन्जो ग़म में सर झुकाए चलता रहा यहां तक कि मक़ाम "क़रनुस्सआ़लिब" में पहुंच कर मेरे होशो ह़वास बजा हुए। वहां पहुंच कर जब मैं ने सर उठाया तो क्या देखता हूं कि एक बदली मुझ पर साया किये हुए है, उस बादल में से ह़ज़रते जिब्रील ने मुझे आवाज़ दी और कहा कि अल्लाह पाक ने आप की क़ौम का जवाब सुन लिया और अब आप की ख़िदमत में पहाड़ों का फ़िरिश्ता ह़ाज़िर है। ताकि वोह आप के हुक्म की ता'मील करे। फिर पहाड़ों का फ़िरिश्ता मुझे सलाम कर के अ़र्ज़ करने लगा : ऐ मुह़म्मद ! अल्लाह पाक ने मुझे आप की ख़िदमत में भेजा है ताकि आप मुझे जो चाहें हुक्म दें और मैं आप का हुक्म बजा लाऊं। अगर आप कहें मैं अबू क़ुबैस और क़ुईक़आ़न येह दोनों पहाड़ इन कुफ़्फ़ार पर उलट दूं तो मैं उलट देता हूं। येह सुन कर आप ने जवाब दिया कि नहीं बल्कि मैं उम्मीद करता हूं कि अल्लाह पाक इन की नस्लों से अपने ऐसे बन्दों को पैदा फ़रमाएगा जो सिर्फ़ अल्लाह पाक की ही इ़बादत करेंगे और शिर्क नहीं करेंगे।[1]

[1] شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الاول، خروجہ الی الطائف، 2/51

जिन्नात का क़बूले इस्लाम

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसी सफ़रे त़ाइफ़ से वापसी पर मक़ामे "नख़्ला" में तशरीफ़ फ़रमा हुए। रात में जब आप नमाज़े तहज्जुद में कुरआन पढ़ रहे थे तो "नसीबैन" के जिन्नों की एक जमाअ़त आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और कुरआन सुन कर येह सब जिन्न मुसल्मान हो गए। फिर उन जिन्नात ने वापस जा कर अपनी क़ौम को तब्लीग़ की तो मक्का शरीफ़ में जिन्नात के बड़े बड़े गुरौहों ने इस्लाम क़बूल किया।[1] कुरआने पाक में सूरए जिन्न की इब्तिदाई आयात में **अल्लाह** पाक ने इस वाक़िए़ को ज़िक्र फ़रमाया है।

मदीने शरीफ़ में इस्लाम की रोशनी

मक्का शरीफ़ से जानिबे शिमाल एक शह्र "यसरिब" था जो बा'द में मदीना[2] क़रार पाया। आप के यहां तशरीफ़ लाने के बा'द उस का नाम "मदीना" हुवा। आप के ए'लाने नुबुव्वत के वक़्त यहां दो क़बीले "औस" व "ख़ज़रज" के साथ कुछ यहूदी भी रहते थे। येह लोग अगर्चे बुत परस्त थे मगर यहूदियों से सुन सुन कर इन्हें मा'लूम था कि अ़न्क़रीब अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद होगी, यूं गोया येह मुन्तज़िर थे कि कब उन की आमद होती है और हम उन पर ईमान ला कर अपना मुक़द्दर संवारें।

1 المواہب اللدنیۃ، المقصد الاول، ذکر ہجرتہ، 1/137-138، ملخصاً ملتقطاً

2 शहरे मदीना (Madina) का पूरा नाम मदीनतुन्नबी है। इस शह्र की बुन्याद इस्लाम के नाम पर है। यहां मस्जिदे नबवी और हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام का रौज़ए मुबारक है। अब इस शह्र का रक़्बा तक़्रीबन 589 मुरब्बअ़ किलो मीटर है। मक्का शरीफ़ से येह शह्र तक़्रीबन 342 किलो मीटर के फ़ासिले पर है जब कि आज कल बाय रोड मसाफ़त 450 किलो मीटर है। अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ाहिरी ह़यात के तक़्रीबन 10 बरस यहां गुज़ारे। येह शह्र आ़शिक़ाने रसूल की आंखों की ठन्डक है।

ए'लाने नुबुव्वत के ग्यारहवें (11th) साल रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज के मौक़अ़ पर आने वाले क़बीलों को दा'वते इस्लाम देने के लिये मिना तशरीफ़ ले गए। मिना में जो घाटी है जहां आज मस्जिदुल उ़क़्बा (अ़रबी में उ़क़्बा घाटी को कहते हैं) है, वहां आप तशरीफ़ फ़रमा थे कि क़बीलए ख़ज़रज के छे आदमी आप के पास आ गए। आप ने उन लोगों से उन का नाम व नसब पूछा। फिर क़ुरआन की चन्द आयतें सुना कर उन लोगों को इस्लाम की दा'वत दी जिस से येह लोग बेह़द मुतअस्सिर हुए। वापसी में येह आपस में कहने लगे कि यहूदी अल्लाह पाक के जिस आख़िरी नबी की बात करते रहे हैं यक़ीनन वोह नबी येही हैं। लिहाज़ा कहीं ऐसा न हो कि यहूदी हम से पहले इस्लाम की दा'वत क़बूल कर लें। येह कह कर सब एक साथ मुसल्मान हो गए और मदीने जा कर अपने अहले ख़ानदान और रिश्तेदारों को भी इस्लाम की दा'वत दी।

बैअ़ते उ़क़्बए ऊला

अगले बरस या'नी ए'लाने नुबुव्वत के बारहवें (12th) साल ह़ज के मौक़अ़ पर मदीने के मज़ीद 12 अफ़राद मिना की घाटी में छुप कर इस्लाम लाए और आप के हाथ पर बैअ़त की। तारीख़े इस्लाम में इस बैअ़त को "बैअ़ते उ़क़्बए ऊला" (घाटी की पहली बैअ़त) कहते हैं। इस बैअ़त को बैअ़ते उ़क़्बा इस वज्ह से कहते हैं क्यूं कि येह बैअ़त मिना की पहाड़ी में उ़क़्बा के क़रीब हुई जिसे जम्रतुल उ़क़्बा भी कहते हैं।[1] इन लोगों ने आप से दरख़्वास्त की, कि इस्लाम के अह़काम सिखाने के लिये कोई मुअ़ल्लिम भी इन को दिया जाए। आप ने ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ عَنْه को उन के साथ मदीना शरीफ़

[1] फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 199

भेज दिया। इन्हों ने वहां जा कर घर घर दीन की दा'वत दी और रोज़ाना कई कई अफ़राद इन की दा'वत पर इस्लाम क़बूल करने लगे। यहां तक कि आहिस्ता आहिस्ता हर त़रफ़ दीन फैलने लगा। क़बीलए औस के सरदार ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ भी इन की दा'वत पर इस्लाम लाए, उन के इस्लाम लाते ही उन का पूरा क़बीला "औस" मुसल्मान हो गया।[1]

मस्जिदे उ़क़्बा

मिना शरीफ़

1 المواہب اللدنیۃ، المقصد الاول، ذکر ہجرتہ، 1/140-142، ملتقطا

बैअ़ते उ़क़्बए सानिया

इस बैअ़त के एक साल बा'द या'नी ए'लाने नुबुव्वत के तेरहवें (13th) साल ह़ज के मौक़अ़ पर मदीने के तक़्रीबन 72 अफ़्राद ने मिना की इसी घाटी में अपने बुत परस्त साथियों से छुप कर **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ पर बैअ़त की और येह अ़ह्द किया कि हम लोग आप की और इस्लाम की ह़िफ़ाज़त के लिये अपनी जान और माल सब कु़रबान कर देंगे।[1]

हिजरते मदीना

मदीने शरीफ़ में इतने लोगों के इस्लाम क़बूल करने से गोया मुसल्मानों को एक पनाह गाह मिल गई। आप ने सह़ाबए किराम को आ़म इजाज़त दे दी कि वोह हिजरत कर के मदीना चले जाएं। चुनान्चे सब से पहले ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने हिजरत की।[2] इन के बा'द दूसरे लोग भी मदीना रवाना होने लगे। जब कुफ़्फ़ार को पता चला तो उन्हों ने हिजरत करने वालों को रोकने की कोशिशें शुरूअ़ कर दीं मगर छुप छुप कर लोगों ने हिजरत का सिल्सिला जारी रखा, यहां तक कि थोड़े ही अ़र्से में बहुत से सह़ाबए किराम मदीना शरीफ़ हिजरत कर गए। अब मक्का शरीफ़ में सिर्फ़ वोह लोग रह गए जो या तो काफ़िरों की क़ैद में थे या फिर ग़ुर्बत की वज्ह से हिजरत नहीं कर सकते थे। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अभी तक **अल्लाह** करीम

1. المواہب اللدنیۃ، المقصد الاول، ذکر ہجرتہ، 1/143، ملتقطاً
2. المواہب اللدنیۃ، المقصد الاول، ذکر ہجرتہ، 1/143

की त़रफ़ से हिजरत का हुक्म नहीं हुवा था तो आप मक्का में ही रहे। आप के हुक्म से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا भी अभी तक मक्का शरीफ़ में रुके हुए थे।

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदीने शरीफ़ की त़रफ़ हिजरत का नक़्शा

काफ़िरों का इज्तिमाअ़

क़ुरैश के काफ़िर इस तमाम सूरते ह़ाल से बड़े परेशान हुए, येह देख कर कि मदीने के लोग इस्लाम ला चुके हैं और बढ़ते जा रहे हैं जब कि मक्का के लोग भी वहां हिजरत कर रहे हैं, ऐसा न हो कि हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام भी मदीना चले जाएं और वहां से अपने ह़ामियों की फ़ौज ले कर मक्का पर चढ़ाई कर दें। येह ख़त़रा मह़सूस कर के कुफ़्फ़ारे मक्का के बड़े बड़े सरदारों ने "दारुन्नद्वा" में एक मश्वरा किया। कुफ़्फ़ार के तमाम बड़े बड़े दानिश्वर उस इज्तिमाअ़ में शरीक थे। मुख़्तलिफ़ तजावीज़ दी गईं जिन में से अबू जह्ल की दी गई तज्वीज़ पर सब का इत्तिफ़ाक़ हुवा। उस का मश्वरा येह था कि हर क़बीले से एक एक जवान को तलवार दी जाए, वोह सब एक साथ आप पर ह़म्ला कर के مَعَاذَ الله आप को शहीद कर दें। तमाम क़बाइल के लोग इस में शरीक होंगे तो बनू हाशिम किसी से भी जंग न कर सकेंगे और ख़ून्बहा लेने पर राज़ी हो जाएंगे। सब ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया और उन की मजलिस ख़त्म हो गई। ह़ज़रते जिब्रीले अमीन **अल्लाह करीम** का हुक्म ले कर नाज़िल हो गए और इस वाक़िए़ की ख़बर दी और कहा कि आज रात आप अपने बिस्तर पर न सोएं और हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ ले जाएं।

हिजरते मुस्त़फ़ा

काफ़िरों ने रात के वक़्त अपने तै शुदा मन्सूबे के मुत़ाबिक़ आप के मकाने आ़लीशान को घेर लिया और इन्तिज़ार करने लगे कि आप सो जाएं तो वोह ह़म्ला आवर हों। उस वक़्त सिर्फ़ ह़ज़रते अ़ली رَضِيَ اللهُ عَنْهُ वहां मौजूद थे। काफ़िर अगर्चे आप के दुश्मन थे मगर उन्हें आप की अमानतो दियानत पर पूरा

भरोसा था। येही वज्ह थी कि वोह अपनी अमानतें आप के पास रखवाते थे। उस वक़्त भी कई अमानतें आप के मकाने आ़लीशान में मौजूद थीं। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली से फ़रमाया : तुम मेरी चादर ओढ़ कर मेरे बिस्तर पर सो जाओ ! मेरे चले जाने के बा'द येह तमाम अमानतें इन के मालिकों को सोंप कर तुम भी मदीने चले आना। आप ने ख़ाक की एक मुठ्ठी ली और उस पर सूरए यासीन शरीफ़ की इब्तिदाई कुछ आयात तिलावत फ़रमा कर वोह ख़ाक कुफ़्फ़ार की त़रफ़ फेंक दी और उस मज्मअ़ में से साफ़ निकल गए, किसी ने भी आप को न पहचाना।[1] फिर आप ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के साथ ग़ारे सौर पहुंचे और तीन दिन और तीन रातें वहां क़ियाम फ़रमाया।[2] इस के बा'द आप मदीने शरीफ़ तशरीफ़ ले गए।

1 المواہب اللدنیۃ، المقصد الاول، ذکر ہجرتہ، 1/144 ملخصا
2 بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ہجرۃ النبی۔۔۔ الخ، 2/593، حدیث:3905 ملتقطا

नवां बाब

हिजरत

ता

सुल्हे हुदैबिया

From migration till the Treaty of Hudaybiyyah

मदीने के वाली मदीने में

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद की ख़बर अहले मदीना को मिल चुकी थी और वोह आप के इन्तिज़ार में अपनी पलकें बिछाए हुए थे, मदीने की ख़वातीन और बच्चों तक की ज़बानों पर आप की आमद का ज़िक्र होता। मक्का शरीफ़ से मदीने का फ़ासिला उ़मूमन 12 दिन में तै होता था, येह दिन तो उन्हों ने इन्तिज़ार करते हुए गुज़ार दिये। इस के बा'द उन से रहा न गया और वोह अपने शौक़ की तक्मील के लिये बे क़रार हो कर इज्तिमाई शक्ल में अपने आक़ा के इस्तिक़्बाल के लिये मदीने से बाहर एक मैदान में जम्अ़ हो जाते और जब धूप तेज़ हो जाती तो ह़सरत के साथ अपने घरों को वापस लौट जाते। हर नए दिन उन का येही मा'मूल था कि नए अ़ज़्मो यक़ीन के साथ आते और रास्ते में सरापा शौक़ बन कर इस्तिक़्बाल के लिये खड़े हो जाते। एक दिन अपने मा'मूल के मुत़ाबिक़ अहले मदीना आप की राह देख कर वापस जा चुके थे। अचानक एक यहूदी ने अपने क़ल्ए़ से देखा कि कुछ अफ़राद का क़ाफ़िला आ रहा है तो वोह समझ गया और उस ने ज़ोर से पुकार कर कहा : ऐ मदीने वालो ! तुम जिस का रोज़ाना इन्तिज़ार करते थे वोह कारवाने रह़मत आ गया। येह सुन कर तमाम अन्सार बदन पर हथियार सजा कर ख़ुशी के आ़लम में **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्तिक़्बाल करने के लिये अपने घरों से निकल पड़े। मदीने शरीफ़ से तीन मील के फ़ासिले पर जहां आज **"मस्जिदे क़ुबा"** है आक़ा करीम عَلَيْهِ السَّلَام वहां 12 रबीउ़ल अव्वल को तशरीफ़ लाए और क़बीलए अ़म्र बिन औ़फ़ वोह ख़ुश बख़्त क़बीला था जिसे सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब से पहले अपनी मेज़बानी का शरफ़ बख़्शा। इस क़बीले के एक सरदार ह़ज़रते कुल्सूम बिन हिद्म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के मकान में आप ने क़ियाम फ़रमाया। अक्सर

सह़ाबए किराम जो पहले हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरह आए थे वोह लोग भी उस मकान में ठहरे हुए थे। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہ भी क़ुरैश की अमानतें लौटा कर कुछ दिन बा'द मक्के से चल पड़े थे और वोह भी इसी मकान में क़ियाम फ़रमा हुए।[1]

मस्जिदे क़ुबा की ता'मीर और जुमुआ़ की इब्तिदा

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ुबा शरीफ़ में सब से पहला काम येह फ़रमाया कि वहां मस्जिद ता'मीर फ़रमाई। ह़ज़रते कुल्सूम बिन हिद्म رَضِیَ اللہُ عَنْہ की एक नाकारा ज़मीन थी जहां खजूरें ख़ुश्क की जाती थीं, आप ने वोह ज़मीन ले कर वहां मस्जिद की बुन्याद रखी। येह मस्जिद आज भी "**मस्जिदे क़ुबा**" के नाम से मश्हूर है।[2] दो हफ़्तों से कुछ ज़ाइद यहां रह कर आप शहरे मदीना की त़रफ़ रवाना हुए। रास्ते में क़बीलए बनी सालिम की मस्जिद में पहला जुमुआ़ अदा फ़रमाया। फिर आप शहरे मदीना तशरीफ़ लाए।

मस्जिदे क़ुबा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा

"मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ना उ़म्रे के बराबर है।"

(ترمذی، 1/348، حدیث:324)

[1] دلائل النبوة للبیہقی، باب من استقبل رسول اللہ...الخ، 2/499-500 ملتقطاً و مدارج النبوت، قسم دوم، باب چہارم، 2/63 ملخصاً

[2] وفاء الوفاء، الباب الثالث، الفصل العاشر فی دخول النبی...الخ، 1/250 ملتقطاً

मस्जिदे जुमुआ

मदीना शरीफ़ में क़ियाम

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब क़ुबा से मदीना तशरीफ़ लाए तो कई अन्सारी सहाबा ने अ़र्ज़ की : हमारे हां क़ियाम फ़रमाएं। मगर आप इर्शाद फ़रमाते कि जिस जगह ख़ुदा को मन्ज़ूर होगा उसी जगह मेरी ऊंटनी बैठ जाएगी। जहां आज मस्जिदे नबवी है यहां पर आप की सुवारी बैठी। उसी के क़रीब ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का मकान था। ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी आप की इजाज़त से आप का सामान अपने घर ले गए और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के घर क़ियाम फ़रमाया। सात महीने तक ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने आप की मेज़बानी का शरफ़ ह़ासिल किया। जब मस्जिदे नबवी और इस के आस पास के कमरे तय्यार हो गए तो आप अपनी अज़्वाज के साथ वहां क़ियाम फ़रमा हुए।

मस्जिदे नबवी की ता'मीर

मदीने शरीफ़ में कोई ऐसी जगह नहीं थी जहां मुसल्मान बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ सकें, इस लिये मस्जिद की ता'मीर वहां बहुत ज़रूरी थी। अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ियाम गाह के क़रीब ही "**बनू नज्जार**" का एक बाग़ था। उस की ज़मीन अस्ल में दो यतीमों की थी, आप ने उन दोनों यतीम बच्चों को बुलाया, उन्हों ने ज़मीन मस्जिद के लिये नज़्र करनी चाही मगर **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे पसन्द नहीं फ़रमाया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के माल से आप ने उस की क़ीमत अदा फ़रमाई। ज़मीन हमवार कर के ख़ुद आप ने अपने दस्ते मुबारक से मस्जिद की बुन्याद डाली और कच्ची ईंटों की दीवार और खजूर के सुतूनों पर खजूर की पत्तियों से छत बनाई जो बारिश में टपकती थी, इस मस्जिद की ता'मीर में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم के साथ ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ईंटें उठा उठा कर लाते थे।[1] यहीं पर अज़ान की इब्तिदा हुई। शुरूअ़ में ह़ज़रते बिलाल ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मुसल्मानों को नमाज़ के लिये बुलाया करते थे, फिर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी और दीगर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم ने ख़्वाब में अज़ान के अल्फ़ाज़ सुने। आप के हुक्म से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने वोह अल्फ़ाज़ ह़ज़रते बिलाल को सिखाए और वोह अज़ान देने लगे।[2] उसी दिन से शरई अज़ान का त़रीक़ा शुरूअ़ हुवा जो आज तक जारी है और क़ियामत तक जारी रहेगा।

---

1 بخاری، کتاب الصلوۃ، باب ھل تنبش قبور مشرکی الجاھلیۃ...الخ، 1/165 حدیث: 428 والمواھب اللدنیۃ، ہجرتہ، 1/156 تا 161 ملتقطاً و ملخصاً

2 مواھب اللدنیۃ والزرقانی، باب بدء الأذان، 2/163

मस्जिदे नबवी की तसावीर

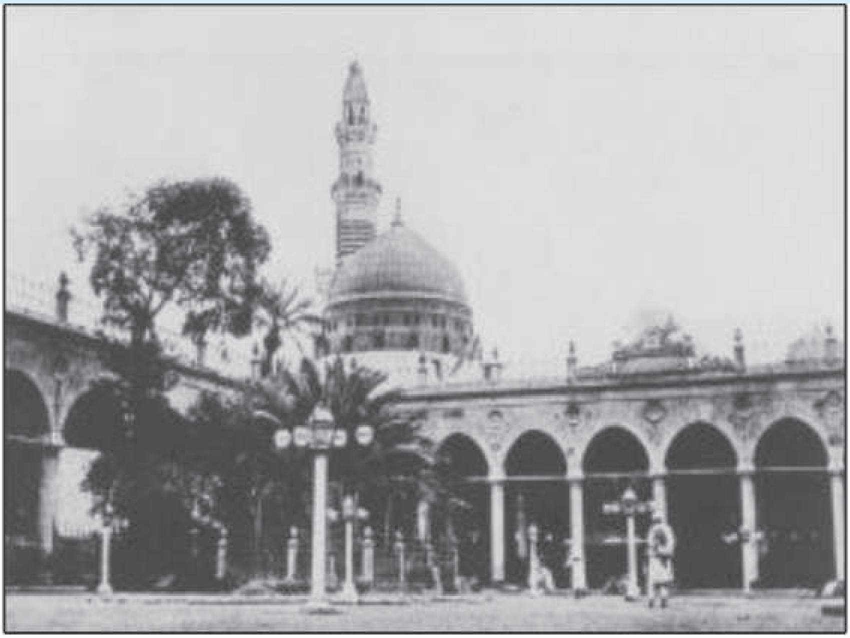

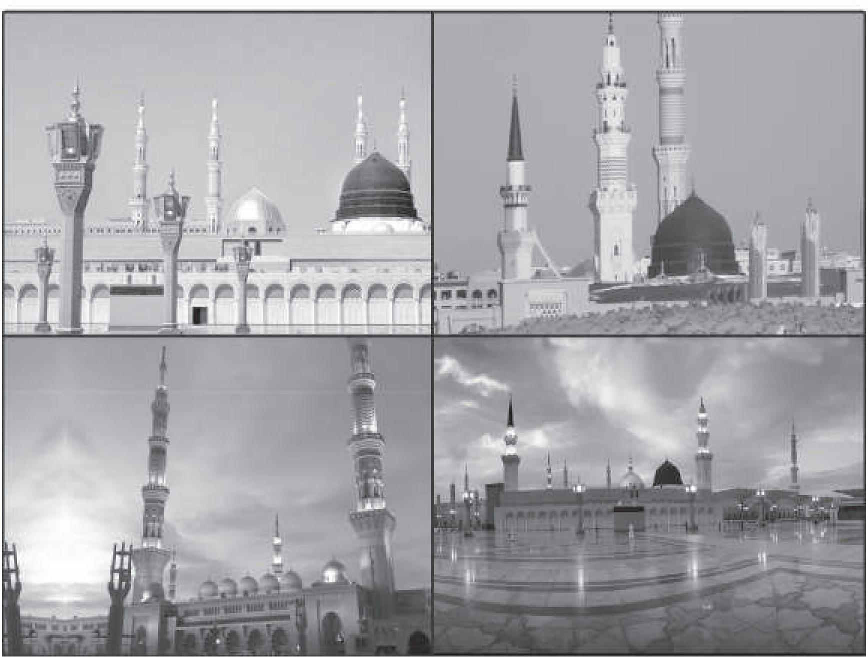

अन्सार व मुहाजिर भाई भाई

उस वक़्त तक मदीने शरीफ़ में मुहाजिरीन की ता'दाद 45 या 50 थी। हाल उन का येह था कि बे सरो सामानी थी, अहलो इयाल, माल अस्बाब सब मक्का में रह गए थे, अन्सार ने अगर्चे उन की बड़ी मेहमान नवाज़ी की थी लेकिन मुहाजिरीन देर तक दूसरों के सहारे ज़िन्दगी गुज़ारना पसन्द नहीं करते थे, इस लिये **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस का येह हल निकाला कि मुहाजिरीन व अन्सार के दरमियान रिश्तए अख़ुव्वत क़ाइम कर के इन्हें आपस में भाई भाई बना दिया जाए ताकि येह आपस में एक दूसरे के मददगार बन जाएं। चुनान्चे मस्जिदे नबवी की ता'मीर के बा'द एक दिन हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام ने हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मकान में अन्सार व मुहाजिरीन सहाबा को जम्अ फ़रमाया। आप ने अन्सार को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि येह मुहाजिरीन तुम्हारे भाई हैं। फिर मुहाजिरीन व अन्सार में से दो दो लोगों को बुला कर फ़रमाते गए कि येह और तुम भाई भाई हो। आप के इर्शाद फ़रमाते ही येह रिश्तए अख़ुव्वत बिल्कुल हक़ीक़ी भाई जैसा रिश्ता बन गया। चुनान्चे अन्सार ने अपने मुहाजिर भाइयों को साथ ले जा कर अपने घर की एक एक चीज़ सामने ला कर रख दी और कह दिया कि आप हमारे भाई हैं इस लिये हमारे घरों का सामान भी आधा आप का हुवा और आधा हमारा।[1]

क़िब्ले की तब्दीली

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तक मक्का में रहे का'बे शरीफ़ की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ते रहे। हिजरत के बा'द आप

1 بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب اخاء النبی...الخ،2/555حدیث:3781ملخصاً

मदीने शरीफ़ में हुक्मे इलाही से सब नमाज़ों में "बैतुल मुक़द्दस" को क़िब्ला बनाते। इसी त़रह़ 16 या 17 महीने गुज़र गए। आप के दिल में येही तमन्ना थी कि का'बे ही को क़िब्ला बनाया जाए। चुनान्चे एक दिन **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़बीलए बनी सलमा की मस्जिद में नमाज़े ज़ोहर पढ़ा रहे थे कि ह़ालते नमाज़ ही में येह वह़ी नाज़िल हुई :

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِی السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّیَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ (پ2، البقرہ:144)

तरजमा : हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आस्मान की त़रफ़ मुंह करना तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ले की त़रफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है अभी अपना मुंह फेर दो मस्जिदे ह़राम की त़रफ़

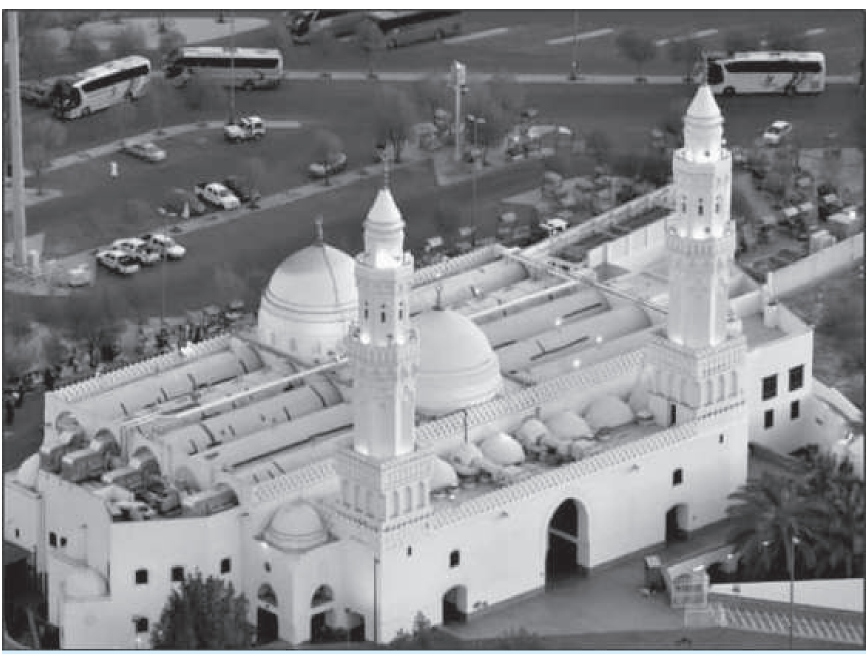

मस्जिदे क़िब्लतैन

रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ ही में अपना चेहरा बैतुल मुक़द्दस से फेर कर ख़ानए का'बा की त़रफ़ कर लिया और तमाम मुक़्तदियों ने भी आप की पैरवी की। इस मस्जिद को, जहां येह वाक़िआ पेश आया "**मस्जिदे क़िब्लतैन**" कहते हैं और आज भी येह मस्जिद और इस के दोनों मेह्राब मौजूद हैं। येह मस्जिद शहरे मदीना से तक़्रीबन दो किलो मीटर दूर शिमाल मग़रिब की त़रफ़ वाक़ेअ़ है। इसी वाक़िए को "**तह़वीले क़िब्ला**" कहते हैं। तह़वीले क़िब्ला से यहूदियों और मुनाफ़िक़ीन के गुरौह को बहुत तक्लीफ़ हुई।[1]

काफ़िरों की साज़िशें और मुसल्मानों के इक़्दामात

मुसल्मान जब हिजरत कर के मदीने आ गए, अब चाहिये तो येह था कि मक्का के कुफ़्फ़ार अब इत़्मीनान से बैठे रहते मगर इन का ग़ुस्सा मज़ीद बढ़ गया। अब येह लोग अहले मदीना के भी दुश्मन हो गए। अन्सार के रईस अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के पास इन्हों ने ख़त़ लिखा कि तुम मुसल्मानों को मदीने से निकाल दो, या तुम उन को क़त्ल कर दो वरना हम तुम पर ह़म्ला कर के तुम्हें अपनी तलवारों का मज़ा चखाएंगे।[2] इसी त़रह़ क़बीलए औस के सरदार जब उ़म्रह करने मक्का गए तो उन्हें भी मक्का के काफ़िरों ने धम्कियां दीं। काफ़िरों ने सिर्फ़ धम्कियों पर बस नहीं किया बल्कि मदीना शरीफ़ पर ह़म्ले की बा क़ाइदा तय्यारियां शुरूअ़ कर दीं। उन्हों ने तमाम क़बाइल में येह बात पहुंचा दी कि हम मदीने पर ह़म्ला कर के मुसल्मानों को ख़त्म कर देंगे। इन ह़ालात की वज्ह से मुसल्मानों को अपनी ह़िफ़ाज़त के लिये कुछ न कुछ करना

1 مدارج النبوت، قسم سوم، باب دوم، 2/73 ملخصاً
2 سنن ابی داود، کتاب الخراج والفیئ...الخ، باب فی خبر النضیر، 3/212 حدیث:3004

ज़रूरी हो गया था। अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अब तक हुक्मे इलाही के मुताबिक़ सिर्फ़ दलाइल और नसीहत से दूसरों को दीन की दा'वत देते रहे और काफ़िरों से मिलने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र का मुज़ाहरा फ़रमाते। लेकिन हिजरत के बा'द जब सारा अ़रब और यहूदी मुसल्मानों के दुश्मन हो गए और इन्हें मिटाने के लिये त़रह़ त़रह़ साज़िशें करनी शुरूअ़ कर दीं तो अल्लाह करीम ने मुसल्मानों को येह इजाज़त दी कि जो लोग जंग की इब्तिदा करें तुम भी उन से जंग कर सकते हो।

इन ह़ालात में आक़ा करीम عَلَیْہِ السَّلَام ने दो बातों की त़रफ़ तवज्जोह दिलाई :

1 अहले मक्का के जो तिजारती क़ाफ़िले शाम जाते थे उन्हें रोका जाए और येह रास्ता बन्द किया जाए ताकि वोह लोग सुल्ह़ पर राज़ी हों।

2 अत़राफ़ के जितने भी क़बाइल हैं उन से सुल्ह़ के मुआ़हदे किये जाएं ताकि कुफ़्फ़ार मदीने शरीफ़ पर ह़म्ले की जुरअत न कर सकें।

इसी वज्ह से आप ख़ुद भी अत़राफ़ के क़बाइल की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाते और छोटे छोटे लश्कर भी भेजते जो कुफ़्फ़ारे मक्का की नक़्लो ह़रकत पर नज़र भी रखते और क़बाइल से अम्नो अमान के मुआ़हदे भी करते। इसी सिल्सिले में कुफ़्फ़ारे मक्का और उन के इत्तिह़ादियों से मुसल्मानों का टक्राव शुरूअ़ हुवा और छोटी बड़ी लड़ाइयों का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा। इन्ही लड़ाइयों को तारीख़े इस्लाम में "**ग़ज़वात व सराया**" का नाम दिया जाता है।

ग़ज़्वा और सरिय्या का फ़र्क़

वोह जंगी लश्कर जिस में अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बज़ाते ख़ुद तशरीफ़ ले जाते उसे "**ग़ज़्वा**" कहते हैं। जब कि वोह लश्कर

जिस में आप शामिल नहीं हुए उसे "**सरिय्या**" कहते हैं। ग़ज़्वे की जम्अ़ "**ग़ज़्वात**" और सरिय्या की जम्अ़ "**सराया**" आती है।[1]

ग़ज़्वात व सराया की ता'दाद के बारे में इख़्तिलाफ़ है, इमाम बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ ग़ज़्वात की ता'दाद 19 है। उन में से सिर्फ़ 9 ऐसे ग़ज़्वात हैं जिन में जंग की नौबत पेश आई जब कि अक्सर ऐसे थे जिन में लड़ाई की ज़रूरत ही न हुई।[2] जब कि सराया की ता'दाद 47 या 56 है।[3]

ग़ज़्वए बद्र के अस्बाब

मुसल्मानों की काफ़िरों के साथ जो पहली सब से बड़ी जंग हुई उसे "**ग़ज़्वए बद्र**" कहते हैं। बद्र[4] मदीने शरीफ़ से कुछ फ़ासिले पर एक गाउं का नाम है। वहां एक कूंवां था जिस के मालिक का नाम बद्र था। इसी वज्ह से उस जगह का नाम बद्र मश्हूर हो गया।[5] ग़ज़्वए बद्र से पहले भी मुसल्मानों और काफ़िरों की छोटी मोटी कुछ लड़ाइयां हुई थीं। एक दफ़्अ़ा काफ़िरों की एक टोली ने तो मदीने शरीफ़ की चरागाहों में आ कर भी लूटमार मचाई। जब कि एक लड़ाई में एक काफ़िर भी मारा गया। उस की मौत से मक्का के कुफ़्फ़ार आपे से बाहर होने लगे। उन्ही के रद्दे अ़मल की वज्ह से जंगे बद्र का मा'रिका पेश आया। जंगे बद्र का एक सबब येह भी बना कि मदीना शरीफ़

1 مدارج النبوت، قسم سوم، باب دوم، 76/2

2 بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ العشیرۃ...الخ، 3/3، حدیث:3949

3 شرح الزرقانی علی المواھب، کتاب المغازی، 221/2

4 शहरे मदीना से बद्र शरीफ़ 113 किलो मीटर दूर है जब कि बाय रोड येह मसाफ़त तक़्रीबन 152 किलो मीटर है।

5 شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ بدر الکبریٰ، 255/2

में येह ख़बर पहुंची कि काफ़िरों का एक बड़ा क़ाफ़िला मुल्के शाम से वापस मक्का जाने वाला है। उस क़ाफ़िले में काफ़िरों के बड़े बड़े सरदार भी शरीक हैं और माले तिजारत भी ख़ूब है। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि काफ़िरों की टोलियां हमारी तलाश में भी रहती हैं और उन की एक टोली तो शहरे मदीना में डाका डाल कर गई है लिहाज़ा क्यूं न हम कुरैश के इस क़ाफ़िले पर ह़म्ला कर दें। इस त़रह़ उन की शामी तिजारत का रास्ता रुक जाएगा और वोह मजबूर हो कर हम से सुल्ह़ कर लेंगे। आप की येह तज्वीज़ सुन कर मुहाजिरीन व अन्सार सब तय्यार हो गए। चुनान्चे आप 12 रमज़ान 2 हिजरी को बिना किसी ख़ास बड़ी जंगी तय्यारी के चल पड़े, जो जिस ह़ाल में था उसी ह़ाल में रवाना हो गया। इस लश्कर में मुसल्मानों के साथ न ज़ियादा हथियार थे, न फ़ौजी राशन की कोई बड़ी मिक्दार थी क्यूं कि किसी को गुमान भी न था कि इस सफ़र में कोई बड़ी जंग होगी।

अहले मक्का को जब ख़बर पहुंची कि मुसल्मान मदीने से निकल चुके हैं तो उन्हों ने भी जंग के लिये तय्यारी शुरूअ़ कर दी। जब आप को इस की इत्तिलाअ़ मिली तो आप ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा फ़रमाया और उन्हें बता दिया कि मुम्किन है इस सफ़र में जंग की नौबत आ जाए। मुहाजिरीन व अन्सार दोनों ने आप की इत़ाअ़त और ह़िफ़ाज़त के अ़ज़्म का इज़्हार किया। मदीना शरीफ़ से एक मील दूर आप ने लश्कर का जाएज़ा लिया और छोटे बच्चों को वापस जाने का हुक्म फ़रमाया। कुछ ज़रूरी इक्दामात फ़रमा कर आप बद्र के मैदान की त़रफ़ चल पड़े जहां से कुफ़्फ़ारे मक्का के आने की ख़बर थी। अब कुल फ़ौज की ता'दाद 313 थी। जिन में 60 मुहाजिर, बाक़ी अन्सार थे। उधर अबू सुफ़्यान (जो अभी मुसल्मान नहीं हुए थे)

को भी मुसल्मानों के निकलने की ख़बर मिल गई तो उन्हों ने दो काम किये। एक तो उन्हों ने फ़ौरन एक शख़्स को मक्का भेजा कि वोह कुरैश को इस की ख़बर कर दे ताकि वोह अपने क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करें और ख़ुद रास्ता बदल कर क़ाफ़िले को समुन्दर की जानिब ले कर रवाना हो गए।[1] अबू सुफ़्यान का पैग़ाम पहुंचते ही कुरैश अपने घरों से निकल पड़े।

जंगे बद्र का नक़्शा

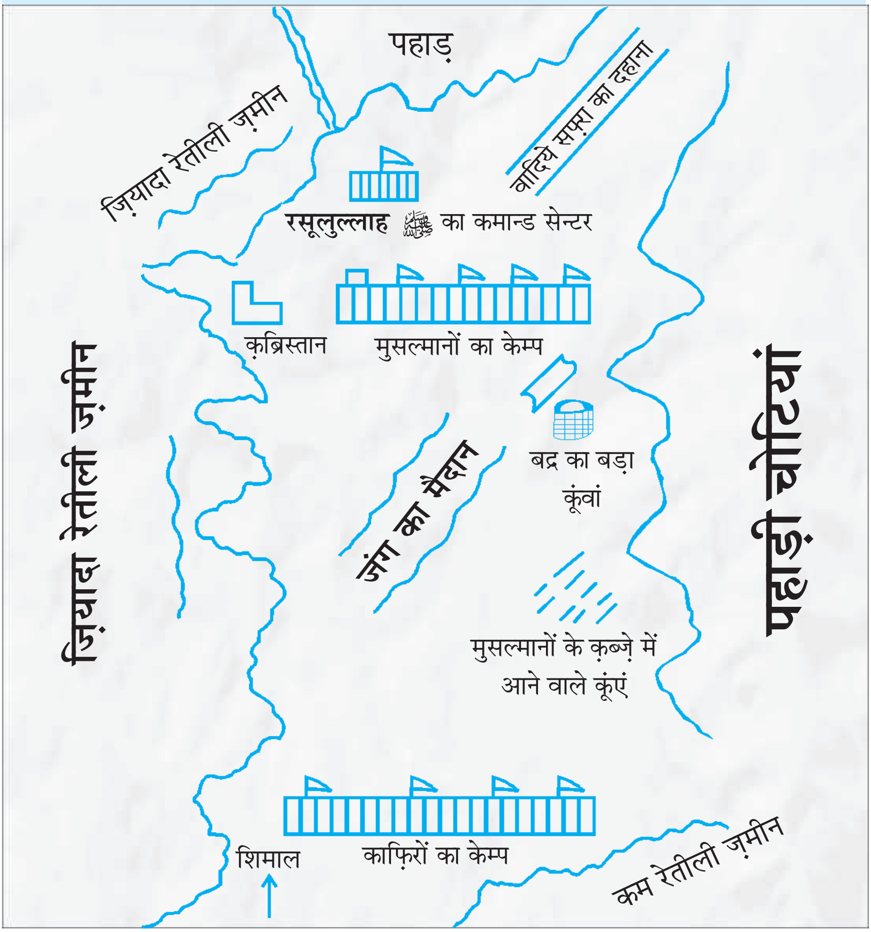

[1] شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ بدر الکبریٰ، 2/263

क़ुरैशी सरदार एक हज़ार की ता'दाद का ऐसा लश्कर ले कर निकले जिस का हर सिपाही मुसल्लह़ था। फ़ौज की ख़ूराक का येह इन्तिज़ाम था कि क़ुरैश के मालदार लोग बारी बारी रोज़ाना दस दस ऊंट ज़ब्ह़ करते थे और पूरे लश्कर को खिलाते थे। उ़त्बा बिन रबीआ़ जो क़ुरैश का सब से बड़ा रईस था इस पूरे लश्कर का सिपह सालार था। रास्ते में उन्हें अबू सुफ़्यान ने ख़बर भेजी कि हम ने अपना क़ाफ़िला मह़फ़ूज़ कर लिया है लिहाज़ा बाक़ी लोग वापस चले जाएं। अब लड़ने की ज़रूरत नहीं है। क़ुरैश के बा'ज़ लोग वापस जाने पर राज़ी हो गए लेकिन कुछ ने जंग करने पर इसरार किया और बा'ज़ क़बाइल को इस पर राज़ी कर लिया।

कुफ़्फ़ाराने क़ुरैश मुसल्मानों से पहले बद्र के मैदान में पहुंच गए और बेहतरीन व मुनासिब जगहों पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब कि मुसल्मानों को जंगी ए'तिबार से बेहतर जगह न मिल सकी। ख़ुदा की शान कि इस दौरान बारिश हो गई जिस से मैदान की गर्द और रेत जम गई जिस पर मुसल्मानों के लिये चलना फिरना आसान हो गया और कुफ़्फ़ार की ज़मीन कीचड़ हो गई जिस से उन को चलने फिरने में मुश्किल हो गई।

बद्र में वाक़ेअ़ मस्जिदे अ़रीश

जंगे बद्र में कौन कहां मरेगा ?

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने चन्द जां निसारों के साथ रात के वक़्त मैदाने जंग का मुआयना करने के लिये तशरीफ़ लाए और छड़ी से ज़मीन पर लकीरें बनाते जाते और फ़रमाते जाते कि फुलां काफ़िर इस जगह क़त्ल होगा, फुलां की लाश यहां होगी। चुनान्चे ऐसा ही हुवा, जिस जगह आप ने फ़रमाया था हर काफ़िर की लाश उसी जगह पाई गई।

ग़ज़्वए बद्र का वाक़िआ व नताइज

17 रमज़ान 2 हिजरी मुताबिक़ 13 मार्च 624 ईसवी को जुमुआ के दिन आप ने मुजाहिदीन को सफ़ बन्दी का हुक्म दिया। जंग की इब्तिदा हुई मगर इस बे सरो सामानी के बा वुजूद सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने शुजाअत और जांबाज़ी के जौहर दिखाए। इसी ग़ज़्वे में अबू जहल को दो कम उम्र सहाबा हज़रते मुआज़ और हज़रते मुअव्वज़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने जहन्नम वासिल किया। मैदाने जंग में काफ़िरों के बड़े बड़े सरदारों जैसे अबू जहल, उत्बा, शैबा वग़ैरा की हलाकत से कुफ़्फ़ाराने मक्का की कमर टूट गई। उन्हों ने हौसला हार दिया, उन के पाउं उखड़ गए और वोह हथियार डाल कर भाग खड़े हुए। मुसल्मानों ने काफ़िरों को गिरिफ़्तार करना शुरूअ़ कर दिया। इस जंग में कुफ़्फ़ार के 70 आदमी क़त्ल हुए और इतने ही क़ैदी बने। अबू सुफ़्यान का क़ाफ़िला तो बच निकला मगर मुसल्मानों ने इस जंग में शानदार काम्याबी हासिल की, जिस से मुसल्मानों की शानो शौकत में इज़ाफ़ा हुवा, इस जंग में शिकस्त की वज्ह से कुफ़्फ़ारे मक्का की सारी इ़ज़्ज़त ख़ाक में मिल गई, उन की जंगी ताक़त फ़ना हो गई और उन के बड़े बड़े सरदार मारे गए। फ़त्ह के

बा'द तीन दिन तक आप ने बद्र ही में क़ियाम फ़रमाया, इस के बा'द क़ैदियों और अम्वाले ग़नीमत के साथ मदीने शरीफ़ की तरफ़ रवाना हुए।

शुहदाए बद्र

जंगे बद्र में कुल 14 मुसल्मानों ने जामे शहादत नोश फ़रमाया। उन में छे मुहाजिर और आठ अन्सार थे। 13 सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان तो मैदाने बद्र ही में मदफ़ून हुए जब कि एक सहाबी ह़ज़रते उ़बैदा बिन हारिस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ का विसाल रास्ते में हुवा और आप का मज़ार शरीफ़ "**सफ़रा**" के मक़ाम पर है।[1] इसी मक़ाम पर आप ने माले ग़नीमत मुजाहिदीन में तक़्सीम फ़रमाया। वोह सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان जो ग़ज़्वए बद्र में शरीक हुए वोह ख़ुसूसी शरफ़ और मर्तबे के मालिक हैं। इन तमाम के बड़े फ़ज़ाइल हैं जिन में से एक फ़ज़ीलत येह भी है कि **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : बेशक **अल्लाह** पाक अहले बद्र से वाक़िफ़ है और उस ने येह फ़रमा दिया है कि तुम अब जो अ़मल चाहो करो बिला शुबा तुम्हारे लिये जन्नत वाजिब हो चुकी है। या (येह फ़रमाया) कि मैं ने तुम्हें बख़्श दिया है।[2]

क़ैदियों का अन्जाम

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बद्र के क़ैदियों को सहाबए किराम में तक़्सीम फ़रमा दिया कि वोह उन के आराम और ज़रूरिय्यात का ख़याल रखें। उन क़ैदियों के बारे में मुशावरत के बा'द येह फ़ैसला हुवा कि इन क़ैदियों से चार चार हज़ार दिरहम फ़िदया ले कर इन लोगों को छोड़

1 شرح الزرقانی علی المواھب، غزوۃ بدر الکبریٰ، 2/325-328 ملخصاً وملتقطاً
2 بخاری، کتاب المغازی، باب فضل من شھد بدراً، 3/12 حدیث: 3983

दिया जाए। जो लोग मुफ़्लिसी की वज्ह से फ़िदया नहीं दे सकते थे वोह यूं ही बिला फ़िदया छोड़ दिये गए। उन क़ैदियों में जो लोग लिखना जानते थे उन में से हर एक का फ़िदया येह था कि वोह अन्सार के दस लड़कों को लिखना सिखा दें।

ग़ज़्वए उहुद के अस्बाब और लश्करों की ता'दाद

जंगे बद्र से जाते ही काफ़िरों ने बदला लेने के लिये अगली जंग की तय्यारी शुरूअ़ कर दी थी। पूरा एक साल उन्हों ने जंग की तय्यारी की। हिजरते नबवी के तीसरे साल शव्वाल के महीने में कुफ़्फ़ाराने क़ुरैश पूरी तय्यारी कर के एक बड़ा और हर लिहाज़ से मज़बूत लश्कर ले कर जंग के इरादे से निकले। अबू सुफ़्यान (जो उस वक़्त तक ईमान नहीं लाए थे वोह) उस लश्कर के सिपह सालार बने। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه जो खुफ़्या तौर पर ईमान क़बूल कर चुके थे और मक्का में रहते थे, उन्हों ने एक ख़त़ लिख कर काफ़िरों के लश्कर की ख़बर दी।[1]

जब आप ने तह़क़ीक़ात करवाईं तो मा'लूम हुवा कि काफ़िरों का लश्कर मदीने के बहुत क़रीब आ चुका है। इस सूरते ह़ाल में आप ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा फ़रमाया। बुज़ुर्ग सह़ाबा ने येह राय दी कि शहर के अन्दर रह कर दुश्मनों का मुक़ाबला किया जाए लेकिन नौ जवान मैदान में निकल कर लड़ना चाहते थे। आप ने येह राय सुन कर हथियार सजाए और बाहर तशरीफ़ लाए। इतने में तमाम लोग शहर के अन्दर रह कर ही काफ़िरों से जंग लड़ने पर मुत्तफ़िक़ हो गए। मगर आप ने फ़रमाया कि **अल्लाह** के नबी

1 كتاب المغازى للواقدى، غزوة احد، 1/203

के लिये येह मुनासिब नहीं है कि वोह हथियार पहन कर उतार दे यहां तक कि **अल्लाह** पाक उस के और उस के दुश्मनों के दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे । लिहाज़ा अब नामे ख़ुदा ले कर मैदान में निकल पड़ो । आप इस जंग में एक हज़ार की फ़ौज ले कर मदीने से बाहर निकले । रास्ते में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ बहाने से अपने 300 लोगों को ले कर इस्लामी लश्कर से अलग हो गया । अब इस्लामी लश्कर की ता'दाद 700 हो गई । आप ने लश्कर का मुआ़यना फ़रमाया और कम उ़म्र सहाबा को वापस लौटा दिया ।[1]

जंगे उहुद का नक्शा

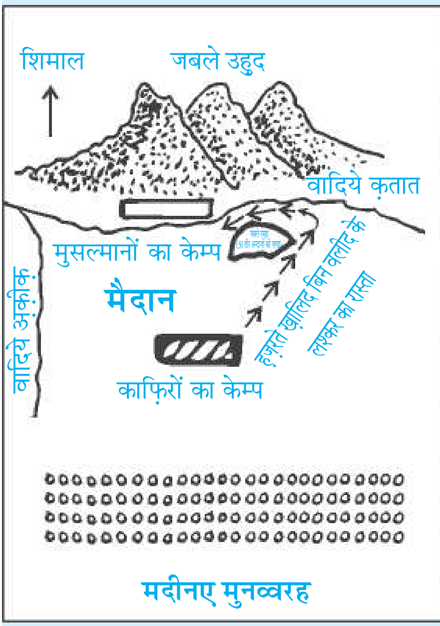

जबले उहुद

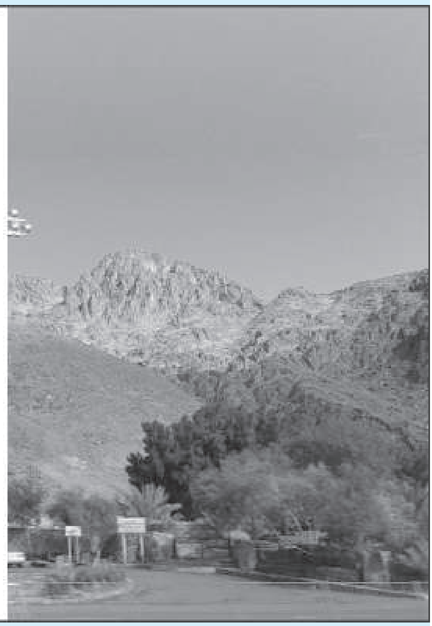

जबले उहुद मदीनए मुनव्वरह के जानिबे शिमाल एक पहाड़ी सिल्सिला है जो तक़रीबन 6 से 7 किलो मीटर तक फैला हुवा है, इस की चौड़ाई 2 से 3 किलो मीटर और ऊंचाई 350 मीटर है । येह मस्जिदे नबवी से तक़रीबन 5 किलो मीटर दूर है । ह़दीस के मुताबिक़ येह जन्नती पहाड़ है और रसूले ख़ुदा عَلَیۡہِ السَّلَام से मह़ब्बत करता है, सरकार عَلَیۡہِ السَّلَام भी इस से मह़ब्बत फ़रमाते हैं । इसी के दामन में (एक रिवायत के मुताबिक़) 17 शव्वाल 3 हिजरी मुताबिक़ 23 मार्च 625 ईसवी को मा'रिकए उहुद पेश आया ।

[1] شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ احد، 2/394تا419 ملتقطاً و ملخصاً

लश्करों का आमना सामना

मुश्रिकीन 12 शव्वाल को ही मदीने शरीफ़ के क़रीब उहुद पहाड़ पर पड़ाव डाल चुके थे। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जुमुआ के दिन 14 शव्वाल को मदीने से रवाना हुए और 15 शव्वाल को हफ़्ते के दिन फ़ज्र के वक़्त उहुद पहुंचे। नमाज़े फ़ज्र के बा'द आप ने सफ़बन्दी फ़रमाई। सफ़बन्दी के वक़्त आप ने अपनी पुश्त पर उहुद पहाड़ को रखा। लश्कर के पीछे पहाड़ में एक दर्रा या'नी तंग रास्ता था जिस में से गुज़र कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुसल्मानों की सफ़ों पर पीछे से ह़म्ला आवर हो सकते थे। इस लिये आक़ा करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस दर्रे की ह़िफ़ाज़त के लिये 50 तीर अन्दाज़ों का एक दस्ता मुक़र्रर फ़रमाया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه को उस दस्ते का अफ़्सर बना दिया और येह हुक्म दिया कि हमारी शिकस्त हो या फ़त्ह़ मगर तुम लोग अपनी इस जगह को मत छोड़ना।

जंग का मा'रिका

जंग का आग़ाज़ हुवा और मुसल्मानों ने शुजाअ़तो बहादुरी के ऐसे ऐसे जौहर दिखाए कि कुफ़्फ़ार शिकस्त खाते हुए भाग खड़े हुए। इसी दौरान एक ग़लती से जंग का नक़्शा बदल गया। वोह तीर अन्दाज़ जिन्हें पहाड़ी पर मुक़र्रर किया गया था, जब उन्हों ने देखा कि जीत मिल चुकी है तो वोह भी दीगर सह़ाबा के साथ माले ग़नीमत जम्अ़ करने आ गए। उन के सर बराह ने रोका लेकिन उन्हों ने सोचा कि अब तो जंग ख़त्म हो चुकी, अब रुकने का क्या फ़ाइदा ? ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद जो उस वक़्त तक ईमान नहीं लाए थे उन्हों ने जब वोह दर्रा पहरेदारों से ख़ाली देखा तो पीछे से ह़म्ला कर दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने उस दर्रे पर चन्द सह़ाबा के साथ

इन्तिहाई दिलेराना मुक़ाबला किया मगर येह सब के सब शहीद हो गए। जंग का नक़्शा बदलता हुवा देख कर भागती हुई कुफ़्फ़ारे कुरैश की फ़ौज भी पलट पड़ी। इस अचानक ह़म्ले से पूरा मन्ज़र तब्दील हो गया।[1]

गज़्वए उहुद के कुछ वाक़िआत

जंग के दौरान एक काफ़िर ने आप के चेह्रए अन्वर पर तलवार मारी जिस से ख़ौद के कुछ टुकड़े आप के मुबारक चेहरे में चुभ गए। पथ्थर लगने की वज्ह से आप के मुबारक दांतों के कुछ किनारे भी शहीद हुए। और नीचे का मुक़द्दस होंट भी ज़ख़्मी हो गया। काफ़िरों ने **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शहीद करने की पूरी कोशिश की लेकिन अपने नापाक मक़्सद को पूरा न कर सके। बा'द में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बढ़ चढ़ कर आक़ा करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त की। जब जंग ख़त्म हुई तो काफ़िर वहां से चले गए जब कि मुसल्मानों ने अपने शुहदा की तलाश शुरूअ़ कर दी और शुहदा को देख कर मुसल्मान बड़े परेशान हुए। इस गज़्वे में शुहदा की ता'दाद 70 थी। जिन में से चार मुहाजिर जब कि 66 अन्सारी सह़ाबा शामिल थे। इन तमाम शुहदा को उहुद पहाड़ के दामन में दफ़्न किया गया। दो दो शहीद एक एक क़ब्र में दफ़्न किये जाते। इस जंग में तीस काफ़िर भी मारे गए।[2]

वाक़िअ़ए रजीअ़

हिजरत के चौथे साल येह दर्दनाक वाक़िआ़ पेश आया। क़बीलए अ़ज़ल व क़ारा के चन्द आदमी **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

1 الاکتفاء، ذکر مغازی الرسول، غزوۃ احد، 1/377
2 شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ احد، 2/419 ملتقطاً و ملخصاً و مدارج النبوت، قسم سوم، باب چہارم، 2/133 مفہوماً

बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : हमारे क़बीले ने इस्लाम क़बूल कर लिया है, आप कुछ सहाबए किराम को भेज दें जो उन्हें इस्लाम सिखाएं। आप ने दस सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त को उन के साथ कर दिया। जब येह क़ाफ़िला रजीअ़[1] के मक़ाम पर पहुंचा तो काफ़िरों ने धोकेबाज़ी कर डाली। और धोके से उन में से आठ मुसल्मानों को शहीद कर डाला जब कि दो को कुफ़्फ़ार ने मक्का ले जा कर फ़रोख़्त कर डाला।[2]

वाक़िअ़ए बिअरे मऊ़ना

माहे सफ़र 4 हिजरी में "बिअरे मऊ़ना" का मश्हूर वाक़िआ पेश आया। आ़मिर बिन मालिक जो बहादुरी में मश्हूर था वोह **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। आप ने उस को इस्लाम की दा'वत दी, न तो उस ने क़बूल की और न ही नफ़रत का इज़्हार किया। बल्कि अपने साथ चन्द मुन्तख़ब सहाबा को भेजने की दरख़्वास्त की। आप ने फ़रमाया कि मुझे नज्द के काफ़िरों की त़रफ़ से ख़त़रा है। उस ने कहा कि मैं आप के अस्ह़ाब की जानो माल की हिफ़ाज़त का ज़ामिन हूं। आप ने 70 सहाबा को भेज दिया।

जब येह सहाबा मक़ामे बिअरे मऊ़ना पर पहुंचे तो उन के क़ाफ़िला सालार आप का ख़त़ ले कर आ़मिर बिन तुफ़ैल के पास गए जो आ़मिर बिन मालिक का भतीजा था। उस ने इन्हें धोके से शहीद करवा दिया और क़रीब के क़बाइल को मिला कर उन सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर ह़म्ला कर दिया। सिर्फ़ एक सहाबी ह़ज़रते अ़म्र बिन उमय्या को उन्हों ने छोड़ दिया, बाक़ी तमाम

[1] अ़सफ़ान और मक्का के दरमियान एक जगह का नाम रजीअ़ है। अ़सफ़ान मदीने से 380 और मक्का से 93 किलो मीटर दूर है।

[2] مدارج النبوت، قسم سوم، باب چہارم، 2/138 ملتقطاً

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को शहीद कर दिया। उन्हों ने मदीने पहुंच कर जब येह तमाम वाक़िआ़ **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सुनाया तो आप को शदीद सदमा हुवा।

ग़ज़्वए बनू नज़ीर

हज़रते अ़म्र बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने मक़ामे बिअरे मऊ़ना से वापसी पर दो ऐसे काफ़िरों को क़त्ल कर दिया था जिन्हें **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पनाह दे चुके थे। येह समझे कि इन्हों ने बिअरे मऊ़ना पर शहीद होने वाले सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का बदला ले लिया है लेकिन बा'द में इन्हें हक़ीक़त मा'लूम हुई। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दो काफ़िरों का ख़ून्बहा देने का ए'लान फ़रमाया। इसी बारे में गुफ़्त्गू करने आप क़बीलए बनू नज़ीर के यहूदियों के पास तशरीफ़ ले गए क्यूं कि आप का मुआ़हदा इन्ही से था। उन्हों ने ब ज़ाहिर बड़े अख़्लाक़ का मुज़ाहरा किया मगर येह चाल चली कि **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सहाबए किराम के साथ एक दीवार के नीचे बड़े एह्तिराम से बिठाया और एक शख़्स को ऊपर भेजा कि वोह ऊपर से एक वज़्नी पथ्थर इन पर गिरा दे ताकि येह सब शहीद हो जाएं। **अल्लाह** करीम ने आप को इस मन्सूबे की ख़बर दी, आप फ़ौरन वहां से चुपचाप उठे और सहाबा के हमराह वापस चले आए और मदीने शरीफ़ तशरीफ़ ला कर यहूदियों की इस साज़िश के बारे में सहाबए किराम को बताया। अन्सार व मुहाजिरीन से मश्वरे के बा'द आप ने उन यहूदियों को पैग़ाम भिजवाया कि तुम ने साज़िश कर के मुआ़हदा तोड़ दिया, इस लिये अब दस दिन के अन्दर मदीने शरीफ़ से निकल जाओ। उन्हों ने इस बात से इन्कार किया तो आप लश्कर ले कर निकले और यहूदियों के क़ल्ए़ का मुहासरा कर

लिया। येह मुह़ासरा 15 दिन तक रहा। इस दौरान आप ने क़ल्ए़ के आस पास के कुछ दरख़्तों को भी कटवा दिया ताकि इन में छुप कर यहूदी नुक़्सान न पहुंचा सकें। तंग आ कर वोह यहूदी इस बात पर तय्यार हो गए कि वोह अपना मकान और क़ल्अ़ा छोड़ देते हैं। लेकिन अपना जितना सामान ऊंटों पर लाद कर ले जा सकते हैं वोह ले जाएंगे। आप ने उन की येह शर्त़ मन्ज़ूर फ़रमाई और सिवाए दो अफ़राद के जो मुसल्मान हो गए थे, बनू नज़ीर के सब यहूदी 600 ऊंटों पर अपना माल व सामान लाद कर एक जुलूस की शक्ल में गाते बजाते मदीने से निकले और कुछ तो ख़ैबर में जब कि कुछ मुल्के शाम में जा कर आबाद हो गए।[1]

ग़ज़्वए बनू मुस्त़लक़ व वाक़िअ़ए इफ़्क

शहरे मदीना से काफ़ी दूर क़बीलए ख़ुज़ाआ़ का एक ख़ानदान "**बनू मुस्त़लक़**[2]" आबाद था। माहे शा'बान सिने 5 हिजरी में इस क़बीले के सरदार ने मदीने शरीफ़ पर चढ़ाई का इरादा किया तो आप लश्कर ले कर उस के मुक़ाबले के लिये निकले। जब उन लोगों को आप की आमद की ख़बर हुई तो उन का सरदार डर कर भाग गया, क़बीले के दूसरे लोगों ने मुक़ाबला करने की कोशिश की मगर जब मुसल्मानों ने एक साथ मिल कर ह़म्ला किया तो दस काफ़िर मारे गए। एक मुसल्मान ने जामे शहादत नोश किया। जब कि कसीर माले ग़नीमत हाथ आया। इसी ग़ज़्वे में क़ैदियों के साथ उम्मुल मुअमिनीन जुवैरिया बिन्ते ह़ारिस भी थीं जिन्हें हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ौजिय्यत में क़बूल फ़रमाया और मुसल्मानों ने इस ख़ुशी में तमाम क़ैदियों को रिहा कर दिया।

1 شرح الزرقانی علی المواھب، بئر معونۃ وحدیث بنی النضیر، 2/497-520 ملتقطاً وملخصاً

2 अब मदीने शरीफ़ से इस जगह का फ़ासिला तक़रीबन 261 किलो मीटर है।

इसी ग़ज़्वे से जब आप वापस आने लगे तो एक मक़ाम पर ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا किसी सबब पीछे रह गईं। बा'द में **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आ कर मिल गईं। इस को बुन्याद बना कर मुनाफ़िक़ीन ने معاذاللّٰہ ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا पर बोहतान लगाए और **अल्लाह** पाक ने ख़ुद कुरआने करीम की सूरए नूर की आयत नम्बर 11 ता 20 में ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की पाकी बयान की और मुनाफ़िक़ीन के बोहतानों को झूट क़रार दिया।

ग़ज़्वए ख़न्दक़ और इस का सबब

सिने 5 हिजरी में ग़ज़्वए ख़न्दक़ का वाक़िआ़ पेश आया। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनू नज़ीर के यहूदियों को मुआ़हदों की ख़िलाफ़ वरज़ी की बिना पर मदीनए पाक से निकाल दिया था। उन में से कुछ ख़ैबर जा कर आबाद हो गए थे। वहां जा कर ख़ैबर के यहूदियों को साथ मिला कर उन्हों ने अ़रब के मुश्रिकीन को आप के ख़िलाफ़ जंग पर उभारा और हर त़रह़ की इमदाद का यक़ीन दिलाया। तमाम कुफ़्फ़ारे अ़रब ने इत्तिह़ाद कर के मुसल्मानों से जंग लड़ने का इरादा कर लिया, इसी वज्ह से इसे ग़ज़्वए अह़ज़ाब (तमाम जमाअ़तों की जंग) भी कहते हैं। दुश्मन की ता'दाद 10 हज़ार थी, इस लिये ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने येह मश्वरा दिया कि मुनासिब येह है कि शहर के अन्दर रह कर दिफ़ाअ़ किया जाए। जिस त़रफ़ से काफ़िरों के ह़म्ले का ख़त़रा है उस त़रफ़ एक ख़न्दक़ खोद ली जाए। मदीने के तीन त़रफ़ चूंकि मकानात की तंग गलियां और खजूरों के झुंड थे इस लिये उन तीनों जानिब से ह़म्ले का इम्कान नहीं था। सिर्फ़ एक त़रफ़ का अ़लाक़ा था जो खुला हुवा था लिहाज़ा येह तै हुवा कि इसी त़रफ़ गहरी ख़न्दक़ खोदी जाए। चुनान्चे 8 ज़ुल क़ा'दह सिने 5 हिजरी को **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तीन हज़ार सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم को साथ ले कर ख़न्दक़ खोदने में मसरूफ़ हो गए। आप ने ख़ुद अपने मुबारक हाथों से ख़न्दक़ की ह़दबन्दी फ़रमाई और दस दस आदमियों पर दस दस गज़ ज़मीन तक़्सीम फ़रमा दी। तक़रीबन बीस दिन में येह ख़न्दक़ तय्यार हो गई। ख़न्दक़ 300 मीटर लम्बी और 9 मीटर चौड़ी थी जब कि ख़न्दक़ की गहराई 5 मीटर थी।

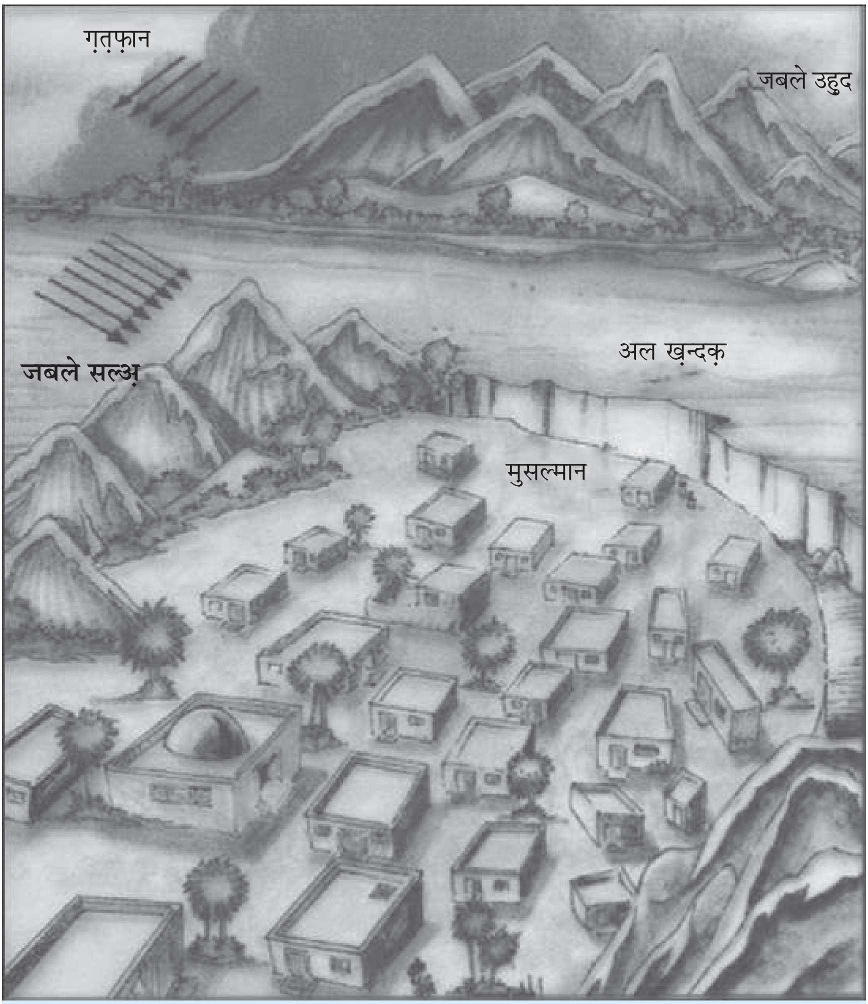

जंगे ख़न्दक़ का नक़्शा

उस ज़माने में ख़न्दक़ का जंग में इस्ति'माल अहले अ़रब के लिये एक नया तजरिबा साबित हुवा और इस ग़ज़्वे में काम्याबी के अस्बाब में से एक सबब येह ख़न्दक़ बनी। काफ़िरों का लश्कर जब आगे बढ़ा तो सामने ख़न्दक़ देख कर काफ़िर हैरान रह गए। उन्हों ने मदीने शरीफ़ का मुहासरा कर लिया और तक़रीबन एक महीने तक घेरा डाले रहे। येह मुहासरा इस सख़्ती के साथ क़ाइम रहा कि **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कई कई फ़ाक़े किये।

चन्द काफ़िरों ने एक जगह से ख़न्दक़ पार कर ली मगर जब उन के बड़े बड़े लड़ाके क़त्ल कर दिये गए तो बाक़ी वापस भाग गए। इस जंग में मुसल्मानों में से छे अफ़राद ने जामे शहादत नोश किया। अबू सुफ़्यान जो उस वक़्त काफ़िरों के लश्कर के सालार थे, शदीद सर्दी, तवील मुहासरे और फ़ौज के राशन के ख़त्म हो जाने से तंग आ गए। ऐसे में **अल्लाह** पाक ने उन पर ऐसी आंधी मुसल्लत फ़रमा दी जिन से काफ़िरों के लश्कर की देगें उलट पलट हो गईं, ख़ैमे उखड़ गए। अल ग़रज़ ! ऐसी सूरते हाल पेश आई कि काफ़िरों के पास सिवाए भागने के और कोई रास्ता न बचा।

ग़ज़्वए बनी क़ुरैज़ा

ग़ज़्वए ख़न्दक़ के दौरान ही बनू क़ुरैज़ा ने मुआहदा तोड़ कर काफ़िरों का साथ दिया। इस की सज़ा देने के लिये आप ग़ज़्वए ख़न्दक़ के फ़ौरन बा'द बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ लश्कर ले कर रवाना हुए। 25 दिन के मुहासरे के बा'द उन्हों ने हथियार डाल दिये और कहा कि हज़रते सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللهُ عَنْه इन के बारे में जो फ़ैसला करेंगे वोह येह तस्लीम करेंगे। हज़रते सा'द के फ़ैसले के मुताबिक़ उन के लड़ने वालों को क़त्ल कर दिया गया, ख़वातीन और बच्चों

को क़ैदी बना लिया गया और उन के अम्वाल को मुजाहिदीन में तक़्सीम कर दिया गया। याद रहे कि बनू कुरैज़ा ने खुद ही ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ को बतौ़रे सालिस मुन्तख़ब किया था और फिर उन के फ़ैसले पर अ़मल दरआमद हुवा, जब कि ह़ज़रते सा'द का फ़ैसला बनू कुरैज़ा की मज़्हबी ता'लीमात की रोशनी में था।

उ़म्रे का इरादा और अ़जीब मो'जिज़ा

हिजरत के छटे (6th) साल ज़ुल क़ा'दह के महीने में **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 1400 सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ उ़म्रे का एह़राम बांध कर मक्का के लिये रवाना हुए। आप को अन्देशा था कि कुफ़्फ़ारे मक्का हमें उ़म्रह अदा करने से रोकेंगे, इस लिये आप ने पहले ही क़बीलए खुज़ाआ़ के एक शख़्स को मक्का भेज दिया था ताकि वोह कुफ़्फ़ारे मक्का के इरादों की ख़बर लाए। जब आप का क़ाफ़िला मक़ाम "**अ़सफ़ान**" के क़रीब पहुंचा तो वोह शख़्स येह ख़बर ले कर आया कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने तमाम क़बाइले अ़रब के काफ़िरों को जम्अ़ कर के येह कह दिया है कि मुसल्मानों को हरगिज़ हरगिज़ मक्के में दाख़िल न होने दिया जाए। चुनान्चे कुफ़्फ़ारे कुरैश ने अपने साथ मिले हुए तमाम क़बाइल को जम्अ़ कर के एक फ़ौज तय्यार कर ली और मुसल्मानों का रास्ता रोकने के लिये मक्का से बाहर निकल कर एक मक़ाम पर पड़ाव डाल दिया। जिस रास्ते पर काफ़िरों की फ़ौज थी **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस रास्ते से हट कर सफ़र फ़रमाने लगे और आ़म रास्ते से कट कर आगे बढ़े और मक़ामे "**हुदैबिया**" में पहुंच कर पड़ाव डाला। यहां पानी की बेह़द कमी थी। एक ही कूंआं था। वोह चन्द घन्टों ही में खुश्क हो गया। जब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم प्यास

से बेताब होने लगे तो आप ने एक बड़े पियाले में अपना दस्ते मुबारक डाल दिया और आप की मुक़द्दस उंग्लियों से पानी का चश्मा जारी हो गया। फिर आप ने खुश्क कूंएं में अपने वुज़ू का इस्ति'माल फ़रमाया हुवा पानी और अपना एक तीर डाल दिया तो कूंएं में इस क़दर पानी उबल पड़ा कि पूरा लश्कर और तमाम जानवर उस कूंएं से कई दिनों तक सैराब होते रहे।[1]

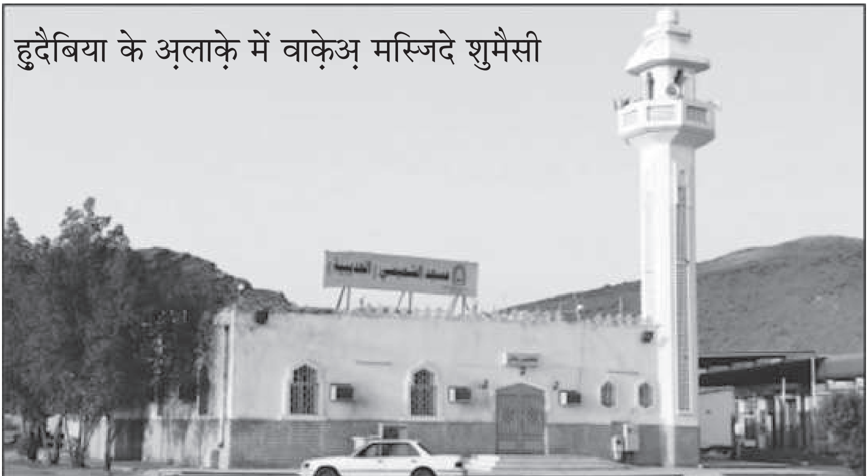
हुदैबिया के अ़लाक़े में वाक़ेअ़ मस्जिदे शुमैसी

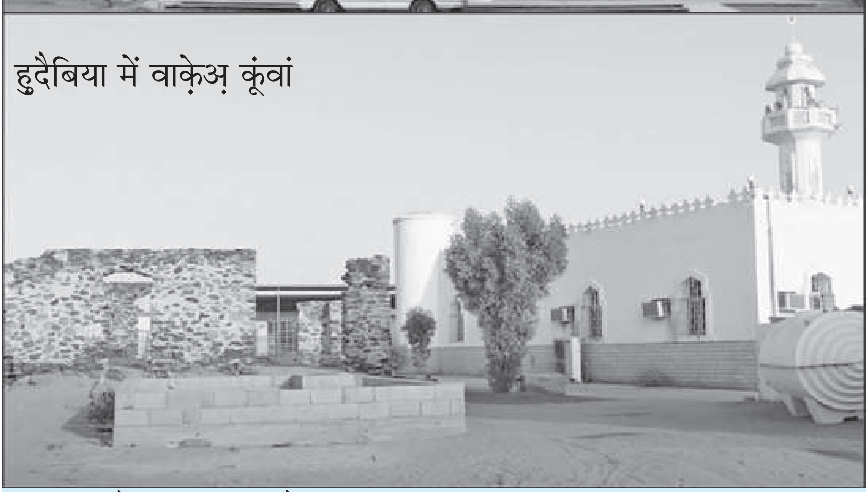
हुदैबिया में वाक़ेअ़ कूंवां

हुदैबिया एक बस्ती है जो मक्का शरीफ़ से तक़्रीबन 24 किलो मीटर के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ है। यहां का कुछ अ़लाक़ा ह़रम में और कुछ ह़िल या'नी ह़रम से बाहर है। आज कल येह जगह शमीसी के नाम से मशहूर है।

बैअ़तुर्रिज़्वान

मक़ामे हुदैबिया में पहुंच कर **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश लश्कर ले कर जंग के लिये आमादा हैं जब कि आप और आप के सहाबा हालते एहराम में हैं। इस लिये आप ने मुनासिब समझा कि इन से सुल्ह़ की गुफ़्तगू की जाए। इसी काम के लिये आप ने ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ को मक्का भेजा। येह शहरे मक्का तशरीफ़ ले गए और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को सुल्ह़ की दा'वत दी। काफ़िरों ने इन से कहा कि हम आप को इजाज़त देते हैं कि आप का'बे का त़वाफ़ करें, सफ़ा व मर्वह की सई करें लेकिन हम मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को हरगिज़ का'बे में न आने देंगे। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर मैं कभी भी उ़म्रह नहीं करूंगा। बात बढ़ गई और काफ़िरों ने आप को मक्का में रोक लिया। हुदैबिया के मैदान में येह ख़बर मश्हूर हो गई कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ عَنْہ को शहीद कर दिया। आप को जब येह ख़बर पहुंची तो आप ने फ़रमाया कि उ़स्मान के ख़ून का बदला लेना फ़र्ज़ है। येह फ़रमा कर आप एक दरख़्त के नीचे बैठ गए और सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم से फ़रमाया कि तुम सब लोग मेरे हाथ पर इस बात की बैअ़त करो कि आख़िरी दम तक तुम लोग मेरे वफ़ादार रहोगे। तमाम सहाबा ने येह अ़ह्द ले कर आप की बैअ़त की। येही वोह बैअ़त है जिस का नाम तारीख़े इस्लाम में "**बैअ़तुर्रिज़्वान**" है। इस दरख़्त और इस के नीचे होने वाली बैअ़त का ज़िक्र क़ुरआने पाक में दो मक़ामात सूरए माइदह की आयत नम्बर 7 और सूरए फ़त्ह़ की कई आयात में आया है। येह बैअ़त हो जाने के बा'द मा'लूम हुवा कि ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ की शहादत की ख़बर ग़लत़ थी, वोह ह़यात थे और ठीक थे।

सुल्हे हुदैबिया और इस की वुजूहात

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सहाबा उ़म्रह के इरादे से चले थे। इसी वज्ह से कुरबानी के जानवर भी आप के साथ थे। मगर काफ़िरों ने क़समें उठा लीं कि हम अपने जीते जी मुसल्मानों को का'बे शरीफ़ तक नहीं पहुंचने देंगे। जब आप की त़रफ़ से सुल्ह़ का पैग़ाम ले कर ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه मक्का तशरीफ़ ले गए तो कुरैश ने भी आप की ख़िदमत में कुछ लोग बातचीत के लिये भेजे मगर बात न बन सकी। फिर कुरैश ने सुहैल बिन अ़म्र को सुल्ह़ की शराइत़ तै करने के लिये भेजा जिस के नतीजे में सुल्हे हुदैबिया का मुआ़हदा तै पाया। इस मुआ़हदे की कुछ शराइत़ येह हैं :

1 मुसल्मान इस साल बिग़ैर उ़म्रह के वापस चले जाएं।

2 आइन्दा साल उ़म्रह के लिये आ सकते हैं मगर मक्का में सिर्फ़ तीन दिन रुकें।

3 आइन्दा 10 साल तक कोई लड़ाई नहीं की जाएगी।

4 क़बाइले अ़रब जिस के साथ चाहें दोस्ती का मुआ़हदा कर सकते हैं।

5 मक्का से कोई मुसल्मान मदीना चला गया तो उसे वापस करना ज़रूरी होगा।

कुरआने पाक में इस सुल्ह़ को **"फ़त्हे मुबीन"** फ़रमाया गया। ब ज़ाहिर येह मुआ़हदा मुसल्मानों के ख़िलाफ़ था मगर इस के बा'द होने वाले वाक़िआ़त ने बता दिया कि येही सुल्ह़ बा'द में होने वाली फ़ुतूह़ात की कुन्जी साबित हुई।

दसवां बाब

बा'द अज़ हुदैबिया

ता

रिहलत शरीफ़

After Hudaybiyyah till Blessed apparent demise

सलात़ीन के नाम दा'वते इस्लाम

सुल्ह़े हुदैबिया के बा'द हर त़रफ़ अम्नो सुकून की फ़ज़ा हो गई । अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चूंकि तमाम जहान की त़रफ़ नबी हैं, इस लिये आप ने इरादा फ़रमाया कि इस्लाम का पैग़ाम तमाम दुन्या को पहुंचाया जाए । चुनान्चे आप ने मुख़्तलिफ़ बादशाहों की त़रफ़ क़ासिदों के ज़रीए ख़त़ रवाना फ़रमाए । उस का ख़ुलासा येह है :

क़ासिद का नाम	शह्र/मुल्क	बादशाह/अमीर	रवय्या व नतीजा
ह़ज़रते दिह़्या कल्बी	बैतुल मुक़द्दस	हिरक़्ल (क़ैसरे रूम)	इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का क़ाइल हुवा मगर सल्त़नत की लालच में कलिमा पढ़ने से मह़रूम रहा ।[1]
ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा	त़ैसफ़ून	किस्रा (ख़ुस्रव परवेज़)	ख़त़ को फाड़ डाला, इस के बेटे ने इसे क़त्ल कर डाला, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दौर में इस की हुकूमत का ख़ातिमा हो गया ।[2]
ह़ज़रते अ़म्र बिन उमय्या	इक्सूम	अस्ह़मा नजाशी	ख़त़ की ता'ज़ीम की और इस्लाम क़बूल कर लिया ।[3]
ह़ज़रते ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़	अस्कन्दरिय्या	मक़ौक़िस (शाहे मिस्र)	ख़त़ की ता'ज़ीम की, मगर मुसल्मान न हुवा, क़ीमती तह़ाइफ़ आप عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ भेजे ।[4]
ह़ज़रते अ़ला बिन ह़ज़्रमी	बह़रीन	मुन्ज़िर बिन सावा	ख़त़ की ता'ज़ीम की और क़ौम के अक्सर अफ़राद के साथ इस्लाम क़बूल किया ।[5]

1 بخاری، کتاب بدء الوحی، باب6، 1/12، حدیث:7ملخصا
2 سبل الھدیٰ والرشاد، ابواب ذکر رسلہ۔۔۔الخ، الباب الحادی والعشرون۔۔۔الخ، 11/362ملخصا
3 سبل الھدیٰ والرشاد، ابواب ذکر رسلہ۔۔۔الخ، الباب السابع والعشرون۔۔۔الخ، 11/365
4 سبل الھدیٰ والرشاد، ابواب ذکر رسلہ۔۔۔الخ، الباب الخامس۔۔۔الخ، 11/348-349
5 شرح الزرقانی علی المواھب، واما مکاتبتہ الی الملوک وغیرھم، 5/34-36ملخصا

ह़ज़्रत अ़म्र बिन आ़स	उ़मान	जुलन्दी के दो बेटे जफ़र और अ़ब्द	ख़त़ की ता'ज़ीम की, दोनों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।[1]
ह़ज़्रते सुलैत़ बिन अ़म्र	यमामा	हौज़ा बिन अ़ली	ख़त़ की ता'ज़ीम की, क़ासिद का भी एह़तिराम किया, मगर हुकूमत के बदले में इस्लाम क़बूल करने की शर्त़ रखी जो मन्ज़ूर न फ़रमाई।[2]
ह़ज़्रते शुजाअ़ बिन वह्ब	ग़ौत़ा (दिमश्क़)	ह़ारिस बिन अबी शिम्र ग़स्सानी	मग़रूर ख़त़ को पढ़ कर बर्हम हो गया और अपनी फ़ौज को तय्यारी का हुक्म दे दिया। इस वज्ह से "**ग़ज़्वए मौता**" और "**ग़ज़्वए तबूक**" जैसे मा'रिके पेश आए।[3]

ग़ज़्वए ख़ैबर और उस के अस्बाब

मुह़र्रमुल ह़राम के महीने में ग़ज़्वए ख़ैबर का मा'रिका हुवा। एक क़ौल येह है कि येह सात हिजरी का वाक़िआ़ है। "**ख़ैबर**" अ़रब में यहूदियों का सब से बड़ा मर्कज़ था। यहां के यहूदी बड़े दौलत मन्द, मालदार और जंगों के माहिर थे। इन्हों ने यहां बहुत से मज़्बूत़ क़ल्ए बना रखे थे, जिन में से आठ क़ल्ए बड़े मश्हूर हैं। उन आठ क़ल्ओं के मज्मूए को "**ख़ैबर**" कहा जाता है।[4]

जंगे ख़न्दक़ में जिन काफ़िरों ने मदीना शरीफ़ पर ह़म्ला किया था उन

1 شرح الزرقانی علی المواہب، واما مکاتبۃ الی الملوک وغیر ہم، 5/37-43 ملتقطا
2 مدارج النبوت، 2/228-229، ملخصا
3 سبل الھدیٰ والرشاد، ابواب ذکر رسلہ ـــ الخ، الباب الحادی والعشرون ـــ الخ، 11/358-359 ملخصا، سیرت مصطفےٰ، ص373
4 شرح الزرقانی علی المواہب، باب غزوۃ خیبر، 3/243 ملتقطا

में ख़ैबर के यहूदी सब से आगे थे। येही इस जंग को भड़काने वाले और इस जंग की बुन्याद रखने वाले थे। इन्हों ने ही मक्का के काफ़िरों को मदीना शरीफ़ पर चढ़ाई करने पर उभारा था और उन की माली इमदाद की थी। ग़ज़्वए ख़न्दक़ में होने वाली रुस्वाई ने इन्हें मज़ीद ग़मो ग़ुस्से में मुब्तला कर दिया। इन्हों ने दूसरे क़बाइल को साथ मिला कर फिर से मदीना शरीफ़ पर ह़म्ले की साज़िशें शुरूअ़ कर दीं।[1] **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब इन की साज़िशों का इ़ल्म हुवा तो सोलह सो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के लश्कर के साथ ख़ैबर रवाना हुए।[2]

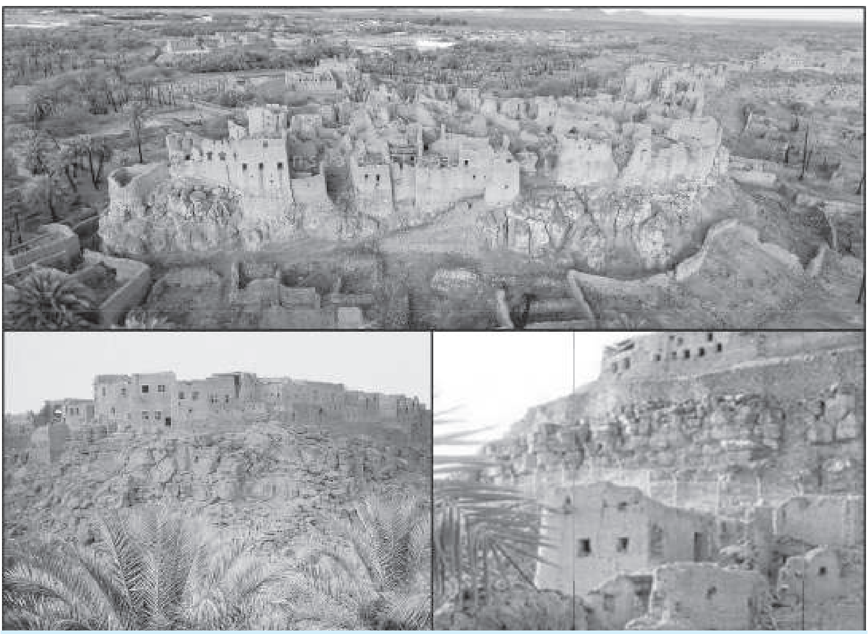

क़ल्अ़ए ख़ैबर की तसावीर जो उस वक़्त के यहूदियों का अ़स्करी मर्कज़ था

[1] सीरते मुस्त़फ़ा, स. 381 मुलख़्ख़सन

[2] ख़ैबर (Khaybar) मदीना शरीफ़ से शिमाल की जानिब तबूक (Tabuk) जाने वाले रास्ते पर वाक़ेअ़ है, मदीना शरीफ़ से इस का फ़ासिला तक़रीबन 153 किलो मीटर है। यहां की ज़मीन ज़रख़ैज़ और अ़लाक़ा उ़म्दा खजूरों की पैदावार के लिये मश्हूर था। यहां इतनी कसरत से बाग़ात थे कि शहर नज़र नहीं आता था। अब नया शहर क़दीम अ़लाक़े से हट कर वाक़ेअ़ है।

रात के वक़्त आप ख़ैबर की हुदूद में दाख़िल हुए, आप की आ़दते मुबारका थी कि रात के वक़्त किसी भी क़ौम पर ह़म्ला नहीं फ़रमाते थे, नमाज़े फ़ज्र के बा'द शह्र में दाख़िल हुए। यहूदियों ने क़ल्ओ़ं में रह कर जंग लड़ने का मन्सूबा बनाया। आहिसता आहिस्ता तमाम क़ल्ए फ़त्ह़ हो गए। ख़ैबर का सब से बड़ा और मज़बूत क़ल्आ़ "**क़मूस**" था जिसे ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़त्ह़ फ़रमाया। ख़ैबर में होने वाले मा'रिकों में 93 यहूदी क़त्ल हुए जब कि 15 सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शहीद हुए।[1] फ़त्ह़ के बा'द यहूदियों ने दरख़्वास्त की, कि इन्हें ख़ैबर से न निकाला जाए और ज़मीन भी इन के क़ब्ज़े में रहने दी जाए, यहां की पैदावार का आधा ह़िस्सा इन से ले लिया जाए। **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमाई। जब ग़ल्ला तय्यार हो गया तो आप ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को उस की तक़्सीम के लिये भेजा। उन्हों ने ग़ल्ले को दो ह़िस्सों में बराबर बराबर तक़्सीम किया और यहूद से कहा जो ह़िस्सा चाहो ले लो। इस तक़्सीम पर वोह ह़ैरान हो कर कहने लगे : ज़मीनो आस्मान इसी अ़द्ल की वज्ह से क़ाइम हैं।[2] ख़ैबर की फ़त्ह़ के साथ दीगर कई अ़लाक़े भी फ़त्ह़ हुए, बा'ज़ मक़ामात पर जंग हुई और बा'ज़ अ़लाक़े बिग़ैर जंगों के फ़त्ह़ हुए।[3]

उ़म्रतुल क़ज़ा की अदाएगी

हुदैबिया के मक़ाम पर जो सुल्ह़ हुई थी उस में एक शर्त़ येह भी थी कि मुसल्मान अगले साल आ कर उ़म्रह करेंगे और तीन दिन तक मक्का

1 شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ خیبر، 3/352-353 ملتقطاً
2 فتوح البلدان، ص 33-35 ملتقطاً
3 شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ خیبر، 3/303 ملخصاً

शरीफ़ में ठहरेंगे। एक साल मुकम्मल होने पर माहे ज़ुल क़ा'दह सिने 7 हिजरी में **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ए'लान कर दिया कि जो लोग पिछले साल हुदैबिया में शरीक थे वोह सब चलें। शहीद होने वालों के सिवा बाक़ी तमाम सह़ाबा ने येह सआ़दत ह़ासिल की। आप 2 हज़ार मुसल्मानों के साथ मक्का शरीफ़ रवाना हुए। 60 ऊंट भी क़ुरबानी के लिये साथ थे।[1] जब **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़रमे मक्का में दाख़िल हुए तो बा'ज़ कुफ़्फ़ार क़रीब के पहाड़ों पर चढ़े येह मन्ज़र देख रहे थे, आपस में कहने लगे : येह भला कैसे त़वाफ़ करेंगे, इन को तो भूक और बुख़ार ने कमज़ोर कर दिया है। आप ने ह़रमे मक्की में पहुंच कर चादर को इस त़रह़ ओढ़ लिया कि आप का दाह्ना कन्धा और बाज़ू खुल गया।[2] और आप ने फ़रमाया : ख़ुदा उस पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमाए जो इन कुफ़्फ़ार के सामने अपनी क़ुव्वत का इज़्हार करे। फिर आप ने सह़ाबए किराम के साथ शुरूअ़ के तीन फेरों में कन्धों को हिला हिला कर और ख़ूब अकड़ते हुए चल कर त़वाफ़ किया।[3] येह सुन्नत आज भी बाक़ी है, हर त़वाफ़ करने वाला शुरूअ़ के तीन फेरों में इस पर अ़मल करता है।

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सफ़ा मर्वह की सई फ़रमाई और क़ुरबानी के जानवर ज़ब्ह़ फ़रमाए। तीन दिन तक आप मक्का शरीफ़ में तशरीफ़ फ़रमा रहे, इस के बा'द वापस मदीना शरीफ़ तशरीफ़ ले गए। चूंकि

1 شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ خیبر،3/314 ملخصاً
2 इस को "इज़्त़िबाअ़" कहते हैं।
3 इस को अ़रबी ज़बान में "रमल" कहते हैं।

येह उ़म्रह एक साल पहले वाले उ़म्रह की वज्ह से था इस लिये इसे उ़म्रतुल क़ज़ा कहते हैं।[1]

ग़ज़्वए मौता के अस्बाब

"**मौता**" मुल्के शाम में एक मक़ाम है। इस जंग का सबब येह हुवा कि अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने "**बुसरा**[2]" के बादशाह क़ैसर के नाम ख़त़ लिख कर ह़ज़रते ह़ारिस बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के हाथ रवाना फ़रमाया। रास्ते में शुरह़्बील बिन अ़म्र ने क़ासिद को शहीद कर दिया। जब आप तक येह इत्तिलाअ़ पहुंची तो आप को सख़्त सदमा हुवा। उस वक़्त आप ने तीन हज़ार मुसल्मानों का लश्कर तय्यार फ़रमाया और अपने मुबारक हाथों से सफ़ेद रंग का झन्डा बांध कर ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के हाथ में दिया और उन्हें उस फ़ौज का सिपह सालार बनाया। साथ इर्शाद फ़रमाया : अगर येह शहीद हो जाएं तो जा'फ़र बिन अबू त़ालिब अमीर होंगे। अगर वोह शहीद हो जाएं तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा अमीर होंगे।[3]

ग़ज़्वए मौता

ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की क़ियादत में जब येह लश्कर रवाना हुवा तो इन्हें ख़बर मिली कि ख़ुद क़ैसरे रूम एक लाख फ़ौज ले कर मौजूद है। उस के साथ मज़ीद एक लाख ईसाई अ़रब भी शरीक हो रहे हैं। ह़ज़रते ज़ैद ने इस

1 شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ خیبر، 3/315-324 ملخصًا

2 "बुसरा" येह शाम का एक अ़लाक़ा है जहां उस वक़्त शुरह़्बील बिन अ़म्र गवर्नर था, येह मुल्के रूम के बादशाह क़ैसर का बाज गुज़ार था। याद रहे कि बुसरा और बसरा दो मुख़्तलिफ़ शहरों के नाम हैं। बसरा शह्र ह़ज़रते उ़मर ने अपने दौरे हुकूमत में फ़ौजी छाउनी के त़ौर पर आबाद करवाया था।

3 شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ موتہ، 3/339-342

पर मुशावरत की, कि **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़त़ लिख कर मज़ीद फ़ौज की दरख़्वास्त करें या जंग में कूद पड़ें। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِيَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : हमारा मक़्सद फ़त्ह़ या माल नहीं है। बल्कि हमारा तो मक़्सूद ही शहादत है। येह बातें सुन कर लोग कहने लगे : अ़ब्दुल्लाह ने सच कहा, फिर उन्हों ने आगे बढ़ कर "**मौता**" के मक़ाम पर पड़ाव डाला, लश्कर को तरतीब दिया गया और तमाम लश्कर लड़ाई के लिये तय्यार हो गया।

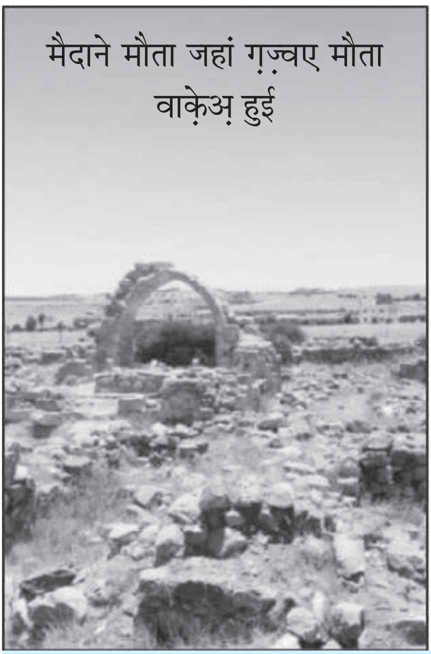

मौता मौजूदा उर्दन (Jordan) के शह्र करक (Kerak) और दरियाए उर्दन के दरमियान का अ़लाक़ा है। उर्दन मग़रिबी एशिया (Western Asia) का मुल्क है जिस का दारुल ह़ुकूमत अ़म्मान (Amman) है। उस वक़्त यहां शामियों की ह़ुकूमत थी। येह पहला मौक़अ़ था जिस में मुसल्मानों का लश्कर मदीना शरीफ़ से इतनी दूर जंग के लिये गया। उर्दन का मदीना शरीफ़ से कम अज़् कम फ़ासिला एक हज़ार किलो मीटर से ज़ाइद है।

इन्सानी तारीख़ का अ़जीब मा'रिका यहां पेश आया कि तीन हज़ार जांबाज़ों के मुक़ाबले में दो लाख का लश्कर था। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशगोई के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते ज़ैद शहीद हुए तो ह़ज़रते जा'फ़र ने परचमे इस्लाम को उठा लिया, येह शहीद हुए तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने परचम संभाल लिया। आक़ा عَلَيْهِ السَّلَام मदीने शरीफ़ में ही येह तमाम वाक़िआ़त देख रहे थे और बयान फ़रमा रहे थे।[1] उन की शहादत के बा'द ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद ने झन्डा लिया और इस क़दर बहादुरी से लड़े कि उन के हाथ में नव तलवारें टूटीं। इन्हों ने कमाल जंगी महारत से इस्लामी फ़ौज को दुश्मनों के मुह़ासरे से निकाला और मदीना वापस ले आए। येह मुसल्मानों की फ़त्ह़ ही थी कि एक लाख[2] के लश्कर के मुक़ाबले में सिर्फ़ 12 सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शहीद हुए, बाक़ी सब सह़ीह़ो सालिम वापस आ गए। जब कि दुश्मन का नुक़्सान इस से कहीं ज़ियादा था।[3]

फ़त्ह़े मक्का के अस्बाब

हुदैबिया में होने वाली सुल्ह़ के मुत़ाबिक़ मुसल्मानों और कुफ़्फ़ारे कुरैश के दरमियान 10 साल तक जंगबन्दी का मुआ़हदा हुवा था। इस मुआ़हदे की रू से क़बीलए बनू बक्र ने कुरैश से इत्तिह़ाद कर लिया और बनू खु़ज़ाआ़ मुसल्मानों से मिल गए। इन दोनों क़बीलों के दरमियान काफ़ी अ़र्से से दुश्मनी थी। एक दफ़्आ़ बनू बक्र ने कुरैश के साथ मिल कर मुसल्मानों के इत्तिह़ादी

1 شرح الزرقانی علی المواھب، باب غزوۃ موتۃ، 3/344-347 ملخصًا

2 बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ काफ़िरों के लश्कर की ता'दाद दो लाख थी। येह जंग सात दिन तक जारी रही और दुश्मन की हलाकतों की ता'दाद बीस हज़ार तक बयान की गई है। जब कि सह़ाबए किराम में से सिर्फ़ बारह अफ़्राद शहीद हुए।

3 شرح الزرقانی علی المواھب باب غزوۃ موتۃ، 3/348-349 ملخصًا

क़बीले बनू खुज़ाआ़ पर ह़म्ला कर दिया। बनू खुज़ाआ़ के लोग बचने के लिये ह़रमे का'बा में दाखि़ल हुए तो उन्हों ने वहां भी इन्हें न छोड़ा। इस ह़म्ले में बनू खुज़ाआ़ के 23 लोग क़त्ल हुए। बनू खुज़ाआ़ ने रसूले खुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मदद की दरख़्वास्त की।[1] आप ने कुरैश की त़रफ़ पैग़ाम भेजा कि तीन में से कोई बात मान लो :

1. मक़्तूलों की दियत अदा करो !
2. या फिर बनू बक्र से इत्तिह़ाद ख़त्म कर दो !
3. या फिर येह ए'लान कर दो कि हुदैबिया का मुआ़हदा ख़त्म हो गया।

येह शराइत़ सुन कर कुरैश के नुमाइन्दे ने मुआ़हदा ख़त्म करने का ए'लान कर दिया। **अल्लाह** के आखि़री नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ासिद के वापस जाते ही कुरैश को एह़सास हो गया कि इन से बड़ी ग़लत़ी हो गई है। उन्हों ने फ़ौरन अबू सुफ़्यान को पहले की त़रह़ नया मुआ़हदा करने मदीना शरीफ़ रवाना कर दिया। मगर उन की न सुनी गई। मायूस हो कर अबू सुफ़्यान ने मस्जिदे नबवी में खड़े हो कर अपनी त़रफ़ से मुआ़हदे की तज्दीद का ए'लान किया मगर किसी ने भी जवाब न दिया। इन्हों ने मक्का जा कर सारी सूरते ह़ाल सरदाराने कुरैश के सामने रख दी। उन्हों ने पूछा : तुम्हारे ए'लान करने के बा'द उन्हों ने कोई जवाब दिया ? अबू सुफ़्यान ने कहा : नहीं। तो कुफ़्फ़ारे कुरैश कहने लगे : येह तो कुछ भी न हुवा, न तो येह सुल्ह़ है कि हमें इत़्मीनान हो, न येह ए'लाने जंग है कि हम तय्यारी करें। इसी दौरान **अल्लाह** के आखि़री नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बड़ी राज़दारी और ख़ामोशी से जंग की

[1] شرح الزرقانی علی المواہب، غزوۃ فتح الاعظم، 3/276-380 ملخصا

तय्यारी फ़रमाई, मक्सद येह था कि अहले मक्का को ख़बर न होने पाए और बे ख़बरी में उन पर ह़म्ला किया जाए।[1]

रसूले ख़ुदा का मक्का में दाख़िला

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत के आठवें (8th) साल रमज़ानुल मुबारक की 10 तारीख़ को कमो बेश दस हज़ार का लश्कर ले कर मक्का की त़रफ़ रवाना हुए। बा'ज़ क़बाइल रास्ते में साथ हुए तो लश्कर की ता'दाद बारह हज़ार तक पहुंच गई।[2] मक्का में दाख़िले से पहले रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौज को दो ह़िस्सों में तक़्सीम फ़रमाया। एक ह़िस्से में आप ख़ुद मौजूद थे जब कि दूसरा ह़िस्सा ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللهُ عَنْه की सर बराही में दे कर उसे दूसरे रास्ते से मक्का में दाख़िले का हुक्म फ़रमाया।[3] मक्का शरीफ़ की ज़मीन पर पहुंचते ही आप ने जो पहला फ़रमान जारी फ़रमाया वोह येह था :

- जो शख़्स हथियार डाल देगा उस के लिये अमान है।
- जो अपना दरवाज़ा बन्द कर ले उस के लिये अमान है।
- जो का'बे में दाख़िल हो जाए उस के लिये अमान है।
- जो अबू सुफ़्यान के घर दाख़िल हो जाए उसे अमान है।[4]

आप के इस ए'लाने रह़मत निशान से हर त़रफ़ अम्नो अमान की फ़ज़ा पैदा हो गई। ख़ून का एक क़त़रा भी बहने का इम्कान न रहा। लेकिन क़ुरैश के बा'ज़ अफ़्राद ने ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللهُ عَنْه के लश्कर पर ह़म्ला कर दिया जिस से तीन मुसल्मान शहीद हुए और कमो बेश 12 काफ़िर भी क़त्ल हुए। आप ने जब देखा कि तलवारें चल रही हैं और तीर फेंके जा रहे

1. شرح الزرقانی علی المواہب، غزوۃ فتح الاعظم، 3/384-386 ملتقطاو ملخصا
2. شرح الزرقانی علی المواہب، غزوۃ فتح الاعظم، 3/395 ملخصا
3. بخاری، کتاب المغازی، باب این رکز النبی، 3/102، حدیث:4280
4. شرح الزرقانی علی المواہب، غزوۃ فتح الاعظم، 3/417-422 ملخصا

हैं तो इस बारे में पूछा कि जंग से मन्अ़ करने के बा वुजूद तलवारें क्यूं चल रही हैं ? तो अ़र्ज़् की गई : पहल कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से हुई है। आप ने फ़रमाया : रब की तक़्दीर येही है, ख़ुदा ने जो चाहा वोही बेहतर है।[1]

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ातेह़े मक्का बन गए मगर आप की आ़जिज़ी का येह आ़लम था कि सूरए फ़त्ह़ की आयात तिलावत फ़रमाते इस त़रह़ सरे मुबारक झुका कर ऊंटनी पर बैठे हुए थे कि आप का सर ऊंटनी के पालान से लगता था।[2] आप ने ऊंटनी को बिठाया, त़वाफ़ किया और ह़जरे अस्वद को बोसा दिया। फिर हुक्म दिया कि बैतुल्लाह शरीफ़ से तमाम बुत निकाल दिये जाएं। जब तमाम बुतों से का'बा पाक हो गया तो आप अन्दर तशरीफ़ ले गए और बैतुल्लाह के तमाम गोशों में तक्बीर पढ़ी और दो रक्अ़त नमाज़् अदा फ़रमाई।[3]

रसूले ख़ुदा का करीमाना बरताव

इस के बा'द आप ने ह़रमे का'बा में दरबारे आ़म लगाया, जिस में अफ़्वाजे इस्लाम के साथ हज़ारों काफ़िर भी मौजूद थे। उन काफ़िरों में वोह लोग भी थे जिन्हों ने आप पर और आप के सह़ाबा पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े, राह में कांटे बिछाए, जिस्मे अत़्हर पर नजासतें डालीं, क़ातिलाना ह़म्ले किये, आप के सह़ाबा को शहीद किया, मक्का छोड़ने पर मजबूर किया, आप पर बोहतान लगाए और गालियां दीं, अल ग़रज़् ! वोह कौन सा ज़ुल्म था जो उन्हों ने न किया हो। आज वोह सब के सब मुजरिमों की ह़ैसिय्यत से आप

1 شرح الزرقانی علی المواہب، غزوۃ فتح الاعظم، 3/416-417 ملخصا
2 شرح الزرقانی علی المواہب، غزوۃ فتح الاعظم، 3/434
3 بخاری، کتاب المغازی، باب این رکز النبی، 3/102، حدیث:4288 ملخصا

के सामने थे। आप चाहते तो उन से ज़बर दस्त इन्तिक़ाम लेते मगर **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कोई इन्तिक़ामी कारवाई न फ़रमाई, अपने करीमाना लहजे में इर्शाद फ़रमाया : لَاتَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ فَاذْهَبُوْا اَنْتُمُ الطُّلَقَآءُ आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं है, जाओ ! तुम सब आज़ाद हो।[1] त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं देने वाले दुश्मनों पर फ़त्ह़ पा कर ऐसा ह़ुस्ने सुलूक करना इस की मिसाल नहीं मिलती।

फ़त्ह़े मक्का के दूसरे दिन भी आप ने ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया, जिस में ह़रमे का'बा के अह़कामात बयान फ़रमाए और क़ियामत तक के लिये ह़रम में जंग और लड़ाई को ह़राम फ़रमाया। इस मौक़अ़ पर आप के ह़ुस्ने सुलूक की वज्ह से लोगों की एक बड़ी जमाअ़त ने इस्लाम क़बूल किया। आप ने मक्का के अत़राफ़ में मौजूद दूसरे बुत भी ख़त्म करवा दिये।[2]

ग़ज़्वए हुनैन

फ़त्ह़े मक्का से इस्लाम का ह़क़ होना पूरे अ़रब पर ज़ाहिर हो गया। यूं कई क़बाइल इस्लाम क़बूल करने लगे। मगर इस ख़बर के बा'द क़बीलए हवाज़िन के लोग दीगर चन्द छोटे क़बाइल के साथ मिल कर मुसल्मानों पर ह़म्ले की निय्यत से निकल पड़े। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब ख़बर मिली तो आप 12 हज़ार फ़ौज ले कर रवाना हुए। मक्का और त़ाइफ़ के दरमियान में "**हुनैन**[3]" नामी जगह पर इस्लामी लश्कर का काफ़िरों

[1] شرح الزرقانی علی المواہب، غزوۃ فتح الاعظم، 3/449 ملخصا

[2] شرح الزرقانی علی المواہب، ہدم العزیٰ وسواع ومناۃ، 3/487–490 ملتقطا

[3] "हुनैन" एक वादी है, जो मक्का शरीफ़ से तक़्रीबन 29 और मदीना शरीफ़ से 462 किलो मीटर के फ़ासिले पर है।

से सामना हुवा। शुरूअ़ में मुसल्मानों ने ख़ूब हाथ दिखाए और ऐसा ह़म्ला किया कि काफ़िरों की फ़ौज मैदान छोड़ कर भागने लगी। मगर उन की वोह फ़ौज जो घात लगाए हुए थी उस ने जब ह़म्ला किया तो इस्लामी लश्कर में अफ़्रा तफ़्री मच गई। बिल आख़िर मुसल्मान ग़ालिब हुए। इस ग़ज़्वे में हज़ारों क़ैदी और ढेरों ढेर माले ग़नीमत मुसल्मानों के हाथ आया।[1]

इस के बा'द **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ताइफ़ की त़रफ़ रवाना हुए, ताइफ़ के क़ल्ए़ का मुह़ासरा किया, मुह़ासरा दो हफ़्ते से ज़ाइद जारी रहा मगर ख़ात़िर ख़्वाह फ़ाएदा न हुवा तो आप ने मुह़ासरा ख़त्म करने का हुक्म दिया और दुआ़ फ़रमाई कि ऐ **अल्लाह**! तू सक़ीफ़ या'नी ताइफ़ वालों को हिदायत अ़त़ा फ़रमा। दुआ़ए नबी की बरकत से 9 हिजरी में ताइफ़ के लोग मुसल्मान हो गए और उन की दरख़्वास्त पर तमाम क़ैदियों को छोड़ दिया गया। ताइफ़ से वापसी पर ग़ज़्वए हुनैन के माले ग़नीमत को आप ने मुसल्मानों में तक़्सीम फ़रमाया। आप ने दो हफ़्तों से ज़ाइद मक्का शरीफ़ में क़ियाम फ़रमाया और इस के बा'द वापस मदीना शरीफ़ तशरीफ़ ले गए।[2]

ग़ज़्वए तबूक

हिजरत के नवें साल माहे रजब में ग़ज़्वए तबूक का मा'रिका पेश आया। मदीना और शाम के दरमियान एक जगह है जिस का नाम "**तबूक**" है। इसे जैशुल उ़स्रह (तंगदस्ती का लश्कर) भी कहा जाता है।[3] इस का सबब

1. شرح الزرقانی علی المواہب، باب غزوۃ حنین، 3/496-531 ملتقطا وملخصا
2. شرح الزرقانی علی المواہب، نبذۃ من قسم الغنائم۔۔۔ الخ، 4/6-19 ملتقطا وملخصا
3. شرح الزرقانی علی المواہب، غزوۃ تبوک، 4/65 ملخصا

येह बना कि मदीने में ख़बर पहुंची कि रूमियों और अ़रब ईसाइयों ने मदीने पर ह़म्ला करने के लिये एक बड़ी फ़ौज तय्यार कर ली है। इस का मुक़ाबला करने के लिये **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौज की तय्यारी का हुक्म फ़रमाया। उस वक़्त पूरे हिजाज़् में शदीद क़ह़त् था, सख़्त गरमी थी और घर से निकलना मुश्किल था।[1]

तबूक में वाके़अ़ मस्जिदे तौबा

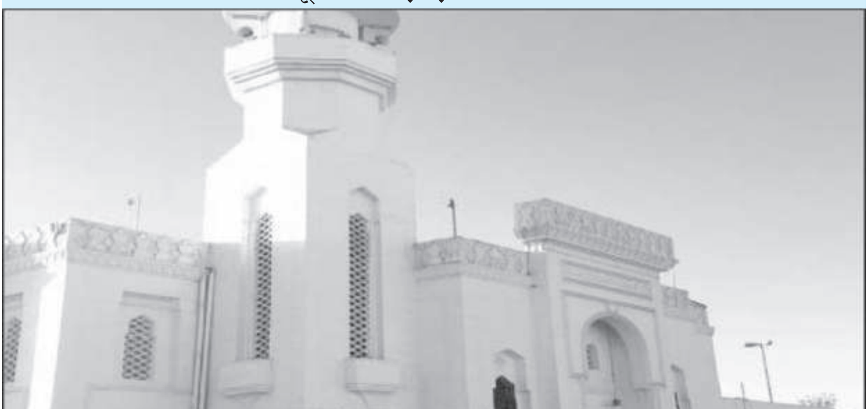

याद रहे कि शहरे तबूक (Tabuk) मदीना शरीफ़ से 552 किलो मीटर के फ़ासिले पर है जब कि बाय रोड येह फ़ासिला तक़्रीबन 682 किलो मीटर है। जहां लश्करे इस्लाम ने पड़ाव डाला था वोह जगह आज क़ल्अ़ए तबूक वल बरकह के नाम से मश्हूर है। येह वोह आख़िरी ग़ज़्वा है जिस में रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ब नफ़्से नफ़ीस सफ़र फ़रमाया।

येह वोही ग़ज़्वा है जिस में ह़ज़रते अबू बक्र ने घर का पूरा और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने घर का आधा सामान लश्कर की तय्यारी के लिये पेश किया।[1] जब कि ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने ख़ुसूसी तआ़वुन फ़रमाया। आप तीस हज़ार का लश्कर ले कर तबूक रवाना हुए। तबूक पहुंच कर लश्कर को पड़ाव का हुक्म दिया, दूर तक रूमी लश्कर का कोई पता नहीं था। फिर मा'लूम हुवा कि जासूसों ने क़ैसर को जब लश्करे इस्लाम की शानो शौकत और ता'दाद का बताया तो हैबत और रो'ब की वज्ह से वोह लोग जंग से हिम्मत हार गए और अपने घरों से बाहर न निकल सके। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बीस दिन तक तबूक में क़ियाम फ़रमा कर मदीना वापस तशरीफ़ लाए। तबूक और क़रीब के कुछ अ़लाक़े इस्लामी सल्त़नत में दाख़िल हो गए।[2]

सिद्दीक़े अक्बर बत़ौरे अमीरे ह़ज

ग़ज़्वए तबूक से वापसी के बा'द **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत के नवें (9th) साल ज़ुल क़ा'दह के महीने में तीन सो मुसल्मानों का एक क़ाफ़िला ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा रवाना फ़रमाया। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को अमीरे ह़ज, ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को नक़ीबे इस्लाम और ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم को मुअ़ल्लिम मुक़र्रर फ़रमाया। आप ने अपनी त़रफ़ से क़ुरबानी के लिये 20 ऊंट भी भेजे। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने ह़रमे का'बा और अ़रफ़ात व मिना में ख़ुत़्बा पढ़ा। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ खड़े हुए और **"सूरए बराअत"** की

1 ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر و عمر کلیھما، 5/380، حدیث:3695
2 مدارج النبوت، 2/349 ملخصا

चालीस आयतें पढ़ कर सुनाईं और ए'लान कर दिया कि अब कोई मुश्रिक ख़ानए का'बा में दाख़िल न हो सकेगा और न कोई नंगा हो कर त़वाफ़ कर सकेगा।[1] चार महीने के बा'द कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन के लिये अमान ख़त्म कर दी जाएगी। ह़ज़रते अबू हुरैरा और दूसरे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इस क़दर ज़ोर ज़ोर से ए'लान किया कि उन का गला बैठ गया। इन ए'लानात के बा'द लोग फ़ौज दर फ़ौज आ कर मुसल्मान होने लगे।

वुफ़ूद की आमद

9 हिजरी को वुफ़ूद का साल भी कहा जाता है। "**वुफ़ूद**" अ़रबी में "**वफ़्द**" की जम्अ़ है। वफ़्द एक से ज़ाइद अफ़राद के गुरौह को कहते हैं। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तब्लीग़े इस्लाम के लिये हर त़रफ़ मुबल्लिग़ीन को भेजा करते थे। उन में से बा'ज़ तो मुबल्लिग़ीन के सामने दा'वते इस्लाम क़बूल कर के मुसल्मान हो जाते जब कि बा'ज़ क़बाइल इस बात के ख़्वाहिश मन्द होते कि बराहे रास्त बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हो कर जमाले नुबुव्वत की ज़ियारत करें और अपने इस्लाम का इज़्हार करें। इसी लिये कुछ लोग अपने अपने क़बीलों के नुमाइन्दे बन कर मदीना शरीफ़ आते और ख़ुद बानिये इस्लाम, **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान से दा'वते इस्लाम का पैग़ाम सुन कर अपने इस्लाम का ए'लान करते और फिर वापस अपने अपने क़बीलों में जा कर उन्हें भी मुसल्मान करते। इस त़रह़ के वुफ़ूद मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मदीना शरीफ़ आते रहे मगर फ़त्हे मक्का के बा'द तो गोया सारे अ़रब में इस्लाम का डंका बज उठा।

[1] شرح الزرقانی علی المواہب، حج الصدیق بالناس، 4/115-116 ملخصا وبخاری، کتاب المغازی، باب حج ابی بکر بالناس فی سنۃ تسع، 3/128، حدیث:4363

कसरत से वुफ़ूद आने की वज्ह

बहुत से क़बाइल पहले ही इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत के क़ाइल हो चुके थे मगर क़ुरैश के डर और दबाव की वज्ह से इस्लाम क़बूल नहीं कर सकते थे। फ़त्ह़े मक्का ने इस रुकावट को दूर कर दिया। अब इस्लाम की ता'लीमात और क़ुरआन के मुक़द्दस पैग़ाम ने हर एक के दिल पर सिक्का बिठा दिया, जिस का नतीजा येह निकला कि वोह लोग जो पहले इस्लाम की बात सुनना गवारा नहीं करते थे अब परवानों की त़रह़ शम्ए रिसालत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर निसार होने लगे। सच्चे नबी की ता'लीमात और किरदार से मुतअस्सिर हो कर येह लोग गुरौह दर गुरौह आप की ख़िदमत में दूर दराज़ से वुफ़ूद की सूरत में ह़ाज़िर होते और अपनी ख़ुशी से क़बूलिय्यते इस्लाम की सआदत पा कर शरफ़े सह़ाबिय्यत का ताज सर पर सजा कर हमेशा की सआदतें अपने मुक़द्दर में लिखवाते। फ़त्ह़े मक्का के बा'द 9 हिजरी में तो इतनी कसरत से वुफ़ूद आए कि उस साल का नाम ही "**सनतुल वुफ़ूद**" या'नी वुफ़ूद के आने का साल पड़ गया। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ उस साल तक़रीबन 60 वुफ़ूद हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर हुए। आप क़बाइल से आने वाले वुफ़ूद के इस्तिक़्बाल और उन से मुलाक़ात के लिये ख़ास एहतिमाम फ़रमाते। हर वफ़्द के आने पर आप निहायत उ़म्दा कपड़े ज़ेबे तन फ़रमा कर तशरीफ़ लाते, उन से मुलाक़ात के लिये मस्जिदे नबवी में एक सुतून से टेक लगा कर निशस्त फ़रमाते, फिर हर एक वफ़्द से ख़न्दा पेशानी के साथ गुफ़्तगू फ़रमाते और ज़रूरी अ़क़ाइद व अह़कामे इस्लाम की ता'लीम व तल्क़ीन भी फ़रमाते। उन मेहमानों को अच्छे से अच्छे मकानों में ठहराते, उन की मेहमान नवाज़ी का ख़ास ख़याल फ़रमाते और हर वफ़्द को तह़ाइफ़ भी अ़त़ा फ़रमाते।[1]

[1] مدارج النبوت، 2/358-359 ملتقطاً و مختصراً

वफ़्दे किन्दा

इन वुफ़ूद में से एक वफ़्दे किन्दा था। येह लोग यमन के अत़राफ़ में रहते थे, इस क़बीले के 70 या 80 अफ़राद बहुत सजधज के मदीना आए, बालों में कंघी, रेशम के जुब्बे पहने, जिस्म पर हथियार सजाए येह मदीने शरीफ़ की आबादी में दाख़िल हुए, जब येह लोग बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा कि क्या तुम ने इस्लाम क़बूल कर लिया है ? सब ने अ़र्ज़ की : **"जी हां ।"** आप ने फ़रमाया : फिर तुम ने रेशमी लिबास क्यूं पहन रखा है ? येह सुनते ही उन लोगों ने रेशमी जुब्बों को जिस्मों से उतार दिया और रेशम के बक़िय्या टुकड़े भी लिबासों से फाड़ कर जुदा कर डाले।[1]

वफ़्दे फ़ज़ारा

इन में से एक वफ़्दे फ़ज़ारा था। येह बीस अफ़राद का वफ़्द था, येह ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए और अपने इस्लाम का ए'लान किया और बताया कि **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, हमारे अ़लाक़े में सख़्त क़ह़त़ है, अब फ़क्रो फ़ाक़ा हमारे लिये ना क़ाबिले बरदाश्त है, आप करम फ़रमाएं और बारिश की दुआ़ फ़रमाएं। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जुमुआ़ के दिन मिम्बर पर दुआ़ फ़रमा दी, फ़ौरन बारिश बरसने लगी और एक हफ़्ते तक जारी रही। दूसरे जुमुआ़ को जब **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमा रहे थे तो एक आ'राबी ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, बारिश की कसरत की वज्ह से मवेशी हलाक होने लगे, बाल

[1] مدارج النبوت، 359/2

बच्चे भूक से बे क़रार होने लगे और तमाम रास्ते बन्द हो गए। दुआ़ फ़रमाएं कि येह बारिश पहाड़ों पर बरसे और खेतों पर न बरसे। आप ने दुआ़ फ़रमा दी तो बादल शहरे मदीना से कट गए। यूं आठ दिन के बा'द मदीने में सूरज नज़र आया।[1]

वफ़्दे क़बीलए सा'द बिन बक्र

उन में से एक वफ़्द क़बीलए सा'द बिन बक्र के सरदार ह़ज़रते ज़माम बिन सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के साथ आया। येह सुर्ख़ व सफ़ेद रंगत और लम्बे बालों के मालिक होने के साथ बड़े ख़ूब सूरत आदमी थे। येह अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आए और कहा : ऐ अ़ब्दुल मुत्त़लिब के बेटे ! मैं आप से चन्द चीज़ों के बारे में सुवाल करूंगा और सुवालात में सख़्ती करूंगा। आप मुझ से नाराज़ मत हो जाइयेगा। आप ने फ़रमाया : तुम जो चाहो मुझ से पूछ सकते हो। फिर इस त़रह़ से मुकालमा हुवा :

ज़माम बिन सा'लबा : मैं आप को उस ख़ुदा की क़सम दे कर जो आप और तमाम इन्सानों का परवर्दगार है येह पूछता हूं कि क्या अल्लाह पाक ने आप को हमारी त़रफ़ अपना रसूल बना कर भेजा है ?

आप ने फ़रमाया : **"हां।"**

ज़माम बिन सा'लबा : मैं आप को ख़ुदा की क़सम दे कर येह सुवाल करता हूं कि क्या नमाज़ व रोज़ा और ह़ज व ज़कात अल्लाह पाक ने हम पर फ़र्ज़ किये हैं ?

आप ने फ़रमाया : **"हां।"**

ज़माम बिन सा'लबा : आप ने जो कुछ फ़रमाया मैं उस पर ईमान लाया और

[1] مدارج النبوت، 2/359

मैं ज़्माम बिन सा'लबा हूं। मेरी क़ौम ने मुझे इस लिये आप के पास भेजा है कि मैं आप के दीन को अच्छी त़रह़ समझ कर अपनी क़ौम बनी सा'द बिन बक्र तक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा दूं।

फिर येह अपने वत़न पहुंचे और सारी क़ौम को जम्अ़ कर के पहले बुतों की मज़म्मत बयान की फिर इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत पर ऐसी ज़बर दस्त तक़रीर फ़रमाई कि रात भर में क़बीले के तमाम मर्द व औ़रत मुसल्मान हो गए और उन लोगों ने बुतों को अपने हाथों से पाश पाश कर डाला, अपने क़बीले में मस्जिद बना ली और तमाम इस्लामी अह़कामात पर अ़मल करने वाले पक्के मुसल्मान बन गए।[1]

और भी कई वफ़्द **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और दौलते ईमान से मुशर्रफ़ हुए।

अल वदाई ह़ज (ह़िज्जतुल वदाअ़)

हिजरत के दसवें (10th) साल का सब से अहम वाक़िआ़ ह़िज्जतुल वदाअ़ है। येह आप का आख़िरी ह़ज था। लोगों ने आप को पूरा ह़ज करते हुए देखा। ज़ुल क़ा'दह के महीने में आप ने ह़ज के लिये रवानगी का ए'लान फ़रमाया। आप ने इस ह़ज में अपना मश्हूर ख़ुत़्बए वदाअ़ इर्शाद फ़रमाया। **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ज का ए'लान फ़रमाते ही मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार (124000) परवाने शम्ए़ रिसालत, ताजदारे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गिर्द जम्अ़ हुए।[2] दुन्या

[1] مدارج النبوت، 2/364-363 ملتقطاً و ملخصاً

[2] شرح الزرقانی علی المواہب، وحجۃ الوداع، 4/146

से ज़ाहिरन पर्दा फ़रमाने का इशारा भी आप ने इस ह़ज में दे दिया, चुनान्चे जमरात के क़रीब आप ने इर्शाद फ़रमाया : मुझ से ह़ज के मसाइल सीख लो ! शायद इस के बा'द मैं दूसरा ह़ज न करूं ।[1] आज ज़ुल क़ा'दह की आख़िरी जुमे'रात को मदीना शरीफ़ से रवाना हुए और ज़ुल हुलैफ़ा जो कि अहले मदीना का मीक़ात है, वहां पहुंच कर एह़राम बांधा और 4 ज़ुल हिज्जा को मक्का शरीफ़ में दाख़िल हुए । त़वाफ़ फ़रमाया, मक़ामे इब्राहीम में नफ़्ल अदा फ़रमाए, सफ़ा व मर्वह की सई फ़रमाई, 8 ज़ुल हिज्जा को मिना तशरीफ़ ले गए, फिर 9 तारीख़ को अ़रफ़ात गए, यहां आप ने कम्बल के एक ख़ैमे में क़ियाम फ़रमाया । जब सूरज ढल गया तो आप अपनी ऊंटनी "**क़स्वा**" पर सुवार हुए और ख़ुत़्बा पढ़ा । इस ख़ुत़्बे में आप ने बहुत से ज़रूरी अह़कामात का ए'लान फ़रमाया और ज़मानए जाहिलिय्यत की तमाम बुराइयों और बेहूदा रस्मों को मिटाने का ए'लान फ़रमाया ।[2]

अल वदाई ख़ुत़्बा

आप के उस ख़ुत़्बे के चन्द इर्शादात येह हैं :

✿ तुम्हारा रब एक है और बेशक तुम्हारे बाप (ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام) एक हैं । किसी अ़रबी को किसी अ़जमी पर और किसी अ़जमी को किसी अ़रबी पर, किसी सफ़ेद को किसी काले पर और किसी काले को किसी सफ़ेद पर कोई फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़्वा के सबब से । ✿ तमाम इन्सान आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से बनाए गए । अब फ़ज़ीलतो बरतरी के सारे दा'वे, ख़ून व माल के सारे मुत़ालबे और सारे इन्तिक़ाम मेरे पाउं तले हैं ।

1 مسلم، کتاب الحج، باب استحباب رمی الجمرۃ العقبۃ...الخ، ص675، حدیث:1297
2 مسلم، کتاب الحج، باب حجۃ النبی، ص489، حدیث:2950 ملتقطاً وملخصاً

✿ ऐ लोगो ! हर मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का भाई है और सारे मुसल्मान आपस में भाई भाई हैं। ✿ किसी के लिये येह जाइज़् नहीं है कि वोह अपने भाई से कुछ ले, मगर वोह कि जिस पर उस का भाई भी राज़ी हो और ख़ुशी से दे। ऐ लोगो ! ख़ुद पर और एक दूसरे पर ज़ुल्म मत करो। ✿ तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल तुम पर ता क़ियामत इसी त़रह़ ह़राम है जिस त़रह़ तुम्हारा येह दिन, तुम्हारा येह महीना, तुम्हारा येह शह्र मोह़तरम है। ✿ ऐ लोगो ! ख़वातीन से बेहतर सुलूक करो ! क्यूं कि वोह तुम्हारे ताबेअ़ हैं, और ख़ुद से कुछ नहीं कर सकतीं। ✿ फिर फ़रमाया : तुम से रब्बे करीम मेरे बारे में पूछेगा तो तुम क्या कहोगे ? सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ किया : आप ने ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और रिसालत का ह़क़ अदा कर दिया, **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आस्मान की त़रफ़ उंगली उठाई और तीन बार फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** ! तू गवाह रहना। इस के बा'द वह़ी के ज़रीए दीन मुकम्मल होने की सनद अ़त़ा फ़रमाई गई और फिर अपने ह़ज की तक्मील फ़रमाई।[1]

अल वदाई ख़ुत़्बे की बहारें

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आज से तक़्रीबन साढ़े चौदह सो साल पहले येह ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया था। कमाल बात येह है कि जब आप येह ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमा रहे थे तो उस वक़्त आप ऊंटनी के कजावे पर तशरीफ़ फ़रमा थे। येह आप की कमाले सादगी की शान थी। आप का इर्शाद फ़रमाया हुवा येह ख़ुत़्बा इन्सानी तारीख़ का सुनहरा और रोशन बाब है। इस ख़ुत़्बे में इन्सानी ह़ुक़ूक़ बिल ख़ुसूस ह़ुक़ूक़े निस्वां, ग़ुलामों के ह़ुक़ूक़,

1 مسلم، کتاب الحج، باب حجۃ النبی، ص490، حدیث:2950 ملتقطاً وملخصاً

जान, माल, इ़ज़्ज़त आबरू की ह़िफ़ाज़त, मआ़शी इस्लाह़ात, विरासत के मसाइल, क़र्ज़ व मक़रूज़ से मुतअ़ल्लिक़ अह़कामात, सियासत और दीन से मुतअ़ल्लिक़ ऐसी रहनुमाई मौजूद है जिस की इस से पहले मिसाल नहीं मिलती । येह ख़ुत़्बा तमाम इस्लामी ता'लीमात का निचोड़ और ह़ुक़ूक़ो फ़राइज़ का आ़लमी मन्शूर है। येह ख़ुत़्बा आज भी मुसल्मानों के लिये गोया आईन और अबदी पैग़ाम की ह़ैसिय्यत रखता है। येह ख़ुत़्बा आज भी उतना ही अहम है जितना आज से साढ़े चौदह सो साल पहले था। इस ख़ुत़्बे में वोह रोशनी है जिस की इन्सानिय्यत को ज़रूरत है। इस ख़ुत़्बे में ऐसा दर्स है जिस पर अ़मल इन्सान को इन्सानिय्यत की मे'राज पर ले जा सकता है ।

मूए मुबारक की तक़्सीम

अ़रफ़ात के साथ साथ मिना में भी आप ने एक ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया जिस में अ़रफ़ात के ख़ुत़्बे की त़रह़ बहुत से मसाइल व अह़काम बयान फ़रमाए। फिर आप क़ुरबान गाह तशरीफ़ ले गए। क़ुरबानी के सो ऊंटों में से कुछ को अपने हाथ मुबारक से नह़्र फ़रमाया और बाक़ी ह़ज़रते अ़ली को नह़्र करने का हुक्म फ़रमाया। क़ुरबानी के बा'द आप ने सर के बाल उतरवाए, उन बालों का कुछ ह़िस्सा ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को अ़त़ा फ़रमाया और बाक़ी मूए मुबारक मुसल्मानों में तक़्सीम फ़रमाने का हुक्म फ़रमाया।[1] फिर आप ज़मज़म के कूंएं पर तशरीफ़ लाए और ज़मज़म नोश फ़रमाया और त़वाफ़े वदाअ़ कर के मुहाजिरीन व अन्सार के साथ मदीनए मुनव्वरह तशरीफ़ ले गए।[2]

1. سیرۃ الحلبیۃ، حجۃ الوداع، 3/377 ملتقطاً
2. سیرۃ الحلبیۃ، حجۃ الوداع، 3/379 ملتقطاً وملخصاً

मरज़े वफ़ात और रिह़लत शरीफ़

हिजरत के ग्यारहवें साल 20 या 22 सफ़र को अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नतुल बक़ीअ़ आधी रात को तशरीफ़ ले गए, वहां से वापस तशरीफ़ लाए तो मिज़ाजे मुबारक नासाज़ हो गया । कुछ दिन तक अ़लालत बहुत बढ़ गई ।[1] आप तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात की इजाज़त से ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا के हुज्रए मुबारका में तशरीफ़ फ़रमा हुए ।[2] जब कमज़ोरी बहुत ज़ियादा बढ़ गई तो आप ने हुक्म दिया कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ मेरे मुसल्ले पर नमाज़ पढ़ाएं । चुनान्चे सतरह नमाज़ें ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ ने पढ़ाईं ।[3] वफ़ात से थोड़ी देर पहले ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا के भाई ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ ताज़ा मिस्वाक हाथ में लिये ह़ाज़िर हुए । आप ने उन की त़रफ़ नज़र जमा कर देखा । ह़ज़रते आ़इशा ने समझा कि मिस्वाक की ख़्वाहिश है । उन्हों ने फ़ौरन ही मिस्वाक ले कर अपने दांतों से नर्म की और दस्ते अक़्दस में दे दी, आप ने मिस्वाक फ़रमाई ।[4] पीर के दिन, रबीउ़ल अव्वल के महीने में आप ने रिह़लत फ़रमाई । मश्हूर क़ौल के मुत़ाबिक़ 12 रबीउ़ल अव्वल हिजरत के ग्यारहवें साल आप ने ज़ाहिरी त़ौर पर इस दुन्या से पर्दा फ़रमाया ।[5] आप के विसाले ज़ाहिरी से सहाबए किराम को बड़ा सदमा हुवा । आप की वसिय्यत के

[1] سبل الهدیٰ والرشاد، ابواب مرض رسولِ اللہ ووفاتہ، الباب الرابع۔۔۔الخ، 12/233 व सीरते मुस्त़फ़ा, स. 542
[2] مواہب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، الفصل الاول فی اتمامہ...الخ، 12/83 ملخصًا
[3] مواہب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، الفصل الاول فی...الخ، 12/108-110 ملتقطا وملخصًا
[4] مواہب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، الفصل الاول فی اتمامہ...الخ، 12/95 ملخصًا
[5] طبقات ابن سعد، ذکر کم مرض رسول، 2/208 وفتاوی رضویہ، 26/416

मुताबिक़ आप के अहले बैत व अहले ख़ानदान ने आप की तज्हीज़ो तक्फ़ीन की ख़िदमत अन्जाम दी। आप का जनाज़ए मुबारका हुजरे शरीफ़ के अन्दर ही रहा।[1] हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने नबी عَلَیْہِ السَّلَام की नमाज़े जनाज़ा अदा करने की तफ़्सील यूं बयान फ़रमाई कि जब **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाल फ़रमा गए तो मर्द दाख़िल हुए और उन्हों ने बिग़ैर इमाम के इन्फ़िरादी तौर पर सलातो सलाम पढ़ा, फिर औ़रतें दाख़िल हुईं तो उन्हों ने भी आप पर सलातो सलाम पढ़ा। फिर बच्चे गए उन्हों ने भी ऐसे ही किया। फिर ग़ुलाम गए उन्हों ने भी आप पर सलातो सलाम पढ़ा। किसी ने भी आप पर इमामत न करवाई। शुरूअ़ में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में इख़्तिलाफ़ हुवा कि आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कहां दफ़्न किया जाए, इस मौक़अ़ पर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं ने रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह सुना है कि हर नबी अपनी वफ़ात के बा'द उसी जगह दफ़्न किया जाता है जिस जगह उस की वफ़ात हुई हो। इस ह़दीस को सुन कर लोगों ने उसी जगह (हुज्रए आ़इशा) में आप की क़ब्र तय्यार की और आप उसी में मदफ़ून हुए। हज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी ने बग़ली क़ब्र शरीफ़ तय्यार की, हज़रते अ़ली, हज़रते फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास, हज़रते क़ुसम बिन अ़ब्बास और हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ اَجْمَعِیْن ने जिस्मे अक़्दस को क़ब्रे मुनव्वर में उतारा।[2]

[1] مدارج النبوت، 2/437 ملخصاً
[2] سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاتہ ودفنہ، 2/284-286، حدیث:1628 ملتقطا

ग्यारहवां बाब

शमाइल और फ़ज़ाइल का बयान

Blessed Attributes and Appearance of the Holy Prophet

हुल्यए मुबारक

हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जिस्मे अत़्हर बहुत नर्मो नाज़ुक था, मैं ने रेशमी कपड़े को भी आप के बदन से ज़ियादा नर्मो नाज़ुक नहीं देखा और आप के जिस्मे मुबारक की ख़ुश्बू से ज़ियादा अच्छी कोई ख़ुश्बू नहीं सूंघी।[1] आप के ख़साइस में से है कि आप का साया न था। सूरज, चांद या किसी भी रोशनी में साया ज़मीन पर नहीं पड़ता था।[2]

आप के दोनों शानों के दरमियान कबूतर के अन्डे के बराबर मोहरे नुबुव्वत थी।

आप का क़दे मुबारक दरमियाना था। आप का मो'जिज़ा था कि जब अलग होते तो दराज़ी माइल दरमियाना क़द वाले होते और जब औरों के साथ चलते या बैठते तो सब से बुलन्द दिखाई देते।[3]

आप का सरे अन्वर बड़ा था, मुबारक ज़ुल्फें हलकी घुंघरियाली थीं। आप का चेहरए मुबारक जमाले इलाही का आईना था, यूं चमक्ता जैसे चौदहवीं का चांद, हज़रते अनस फ़रमाते हैं : नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के चेहरए मुबारक का रंग न तो चूने की त़रह़ बिल्कुल सफ़ेद था न ही गन्दुमी, बल्कि आप सुर्ख़ व सफ़ेद और चमक्दार चेहरे के मालिक थे।[4] आप के मुबारक अब्रू दराज़ और बारीक, दोनों ऐसे थीं कि दूर से मिली हुई मा'लूम होती थीं। उन के दरमियान में रग थी जो ग़ुस्से के वक़्त उभर आती थी।

1 بخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی، 2/489، حدیث:3561
2 شرح الزرقانی علی المواہب، الفصل الاول فی کمال خلقتہ۔۔۔الخ، 5/524-525
3 شرح الزرقانی علی المواہب، الفصل الاول فی کمال خلقتہ وجمال صورتہ، 5/485
4 الشمائل المحمدیہ، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ، ص15

मुबारक आंखें बड़ी बड़ी और क़ुदरती तौ़र पर सुर्मगीं थीं।[1] आंखों का मो'जिज़ा था कि जिस त़रह़ आप सामने वाली चीज़ों को देख लिया करते ऐसे ही अपने से पीछे की चीज़ें भी देख लिया करते। आंखों की त़रह़ मुबारक कान भी मो'जिज़ाना शान वाले थे, आप ने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया : मैं उन चीज़ों को देखता हूं जिन को तुम में से कोई नहीं देखता और मैं उन आवाज़ों को सुनता हूं जिन को तुम में से कोई नहीं सुनता।[2]

आप की पेशानी मुबारक रोशन और कुशादा थी। आप के मुबारक रुख़्सार नर्मो नाज़ुक और हमवार थे, दन्दाने अक़्दस कुशादा और रोशन थे, जब आप गुफ़्तगू फ़रमाते तो दोनों अगले दांतों के दरमियान से नूर निकलता था, जब आप अंधेरे में मुस्कुरा देते तो हर त़रफ़ रोशनी हो जाती।[3]

आप की मुबारक ज़बान वह्ये इलाही की तरजुमान और फ़साह़तो बलाग़त में आ़लीशान। बड़े बड़े फ़ुसह़ा आप का कलाम सुनते तो दंग रह जाते। आप की मुबारक आवाज़ बहुत ख़ूब सूरत, इस का कमाल था कि ख़ुत़्बों में दूर और नज़्दीक वाले सब यक्सां अपनी अपनी जगह पर आप का मुक़द्दस कलाम सुन लिया करते थे।[4]

आप के मुबारक हाथ बहुत नर्मो नाज़ुक और गोश्त से भरे हुए, जिस शख़्स से आप मुसाफ़ह़ा फ़रमाते वोह दिन भर हाथों को ख़ुश्बूदार पाता।

1. الشمائل المحمدیہ، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ، ص19تا21
2. الخصائص الکبری للسیوطی، باب المعجزۃ والخصائص۔۔۔الخ، 1/104
3. الشمائل المحمدیہ، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ، ص21تا26
4. شرح الزرقانی علی المواہب، الفصل الاول فی کمال خلقتہ...الخ، 5/444-445

आप के मुबारक क़दम चौड़े और गोश्त से भरे हुए, पाउं की नरमी और नज़ाकत का ह़ाल येह था कि पानी नहीं ठहरता था।[1] आप चलने में बड़े वक़ार से क़दम शरीफ़ को ज़मीन पर रखते, जब चलते तो यूं लगता जैसे ऊपर से नीचे उतर रहे हैं, हर क़दम जमा कर रखते।[2]

पसन्दीदा ग़िज़ाएं

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका सादगी व ज़ोह्द का मुकम्मल नमूना थी, इस लिये कभी लज़ीज़ ग़िज़ाओं की त़रफ़ तवज्जोह नहीं फ़रमाई, यहां तक कि ज़िन्दगी भर कभी चपाती तनावुल न फ़रमाई। इस के बा वुजूद आप ग़िज़ा के बारे में बड़े नफ़ीस मिज़ाज के मालिक थे। अ़रब में एक खाना जो घी, पनीर और खजूर मिला कर पकाया जाता है, उसे "ह़ैस" कहते हैं, इसे आप बड़ी रग़बत से तनावुल फ़रमाते।[3]

सालनों में आप को गोश्त, सिर्का, शह्द, रोग़ने ज़ैतून और कद्दू शरीफ़ ख़ुसूसिय्यत के साथ मरग़ूब थे। खजूर और सत्तू भी ब कसरत तनावुल फ़रमाते। आप को ठन्डा मीठा पानी बहुत मरग़ूब था, दूध में कभी पानी मिला (कच्ची लस्सी बना) कर और कभी ख़ालिस दूध नोश फ़रमाते, आप जो कुछ भी नोश फ़रमाते, तीन सांस में नोश फ़रमाते।[4]

1 الشمائل المحمدیۃ، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ، ص21
2 الشمائل المحمدیۃ، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ، ص86
3 سنن کبری للنسائی، 2/114حدیث:2631
4 रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़िज़ाओं से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सील के लिये "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना (रबीउ़ल अव्वल 1440 हि.)" के मज़्मून "प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी ग़िज़ाएं" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

पसन्दीदा लिबास

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा तर सूती लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते, किसी ख़ास लिबास की पाबन्दी नहीं फ़रमाते थे। जुब्बा[1] (Gown), क़बा[2], पैरहन[3], तहबन्द[4], हुल्ला, चादर, इमामा, टोपी, मोज़ा[5] इन सब को आप ने शरफ़ बख़्शा और ज़ेबे तन फ़रमाया है। रंगों में सफ़ेद कपड़ा आप को ज़ियादा पसन्द था, एक रिवायत के मुताबिक़ सब्ज़ रंग भी आप को बहुत पसन्द था।

मुबारक सुवारियां

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को घोड़े की सुवारी बहुत पसन्द थी। इस के इलावा आप ने ऊंट, ख़च्चर और दराज़ गोश पर भी सुवारी फ़रमाई है।[6]

आदात व अख़्लाक़े मुबारका

हुस्ने सूरत के साथ हुस्ने सीरत में भी आप बे मिस्लो बे मिसाल थे। आप कमज़ोरों की मदद फ़रमाने वाले थे, अपनों तो क्या दुश्मनों पर भी

1 एक त़रह़ का ढीला कोट जिस की आस्तीन कलाई से ऊपर रहती है, इस की लम्बाई गिरेबान से पाउं तक होती है। उ़मूमन उ़लमा येह लिबास इस्ति'माल करते हैं।

2 एक कोट नुमा लिबास जो आगे से खुला होता है और लिबास के ऊपर पहना जाता है।

3 इस से मुराद कुरता व पोशाक है।

4 इस से मुराद वोह कपड़ा जो पाजामे की जगह बांधा जाता है, हमारे हां दीहात में इस्ति'माल की जाती हैं।

5 यहां चमड़े के मोज़े मुराद हैं।

6 रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारियों से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सील के लिये "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना (रबीउ़ल अव्वल 1440 हि.)" के मज़्मून "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारियां" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

नरमी फ़रमाते, आ़जिज़ी व इन्किसारी फ़रमाने वाले, अपनी ज़ात के लिये न गु़स्सा करते न इन्तिक़ाम लेते, मरीज़ों की इ़यादत फ़रमाते, ग़मज़दों की ग़म ख़्वारी फ़रमाते, अमीर हो या ग़रीब सब से यक्सां बरताव फ़रमाते, सब की दा'वत क़बूल फ़रमाते, अपना काम अपने हाथ से करना पसन्द फ़रमाते, तमाम जहान में सब से बढ़ कर आ़दिल और पाक दामन थे। आप ठहर ठहर कर बड़े वक़ार से गुफ़्तगू फ़रमाते, गुफ़्तगू में इतनी रवानी और निखार होता कि कोई जुम्ले गिनना चाहता तो गिन सकता था। आप बड़े ह़यादार थे, आप की अमानतो सदाक़त के दुश्मन भी मो'तरिफ़ थे। आप के अख़्लाक़ इतने आ़लीशान थे कि ख़ुद रब्बे करीम ने इर्शाद फ़रमाया :

وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ۝۴ [1]

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम यक़ीनन अ़ज़ीम अख़्लाक़ पर हो।

फ़ज़ाइलो ख़साइस

तमाम अम्बिया में सब से बड़ा मर्तबा **अल्लाह** के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का है। क़ुरआनो ह़दीस में आप के बे शुमार फ़ज़ाइलो ख़साइस बयान हुए हैं, आइये उन में से चन्द मुलाह़ज़ा कीजिये :

❁ दीगर अम्बियाए किराम किसी ख़ास क़ौम की त़रफ़ भेजे जाते, आप तमाम मख़्लूक़ इन्सान व जिन्न, बल्कि मलाएका, हैवानात, जमादात (बेजान अश्या) सब की त़रफ़ मब्ऊ़स हुए। ❁ जिस त़रह़ इन्सान पर आप की इत़ाअ़त फ़र्ज़ है इसी त़रह़ हर मख़्लूक़ पर आप की फ़रमां बरदारी ज़रूरी है। ❁ आप फ़िरिश्तों, इन्सानों, जिन्नात, हूरो ग़िल्मान, हैवानात व जमादात, ग़रज़ तमाम जहान के लिये रह़मत हैं, मुसल्मानों पर तो निहायत ही मेह्रबान

[1] پ29، القلم، آیۃ:4

हैं। ❁ नबी عَلَيْهِ السَّلَام ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं, या'नी **अल्लाह** करीम ने सिल्सिलए नुबुव्वत आप पर ख़त्म कर दिया, आप के ज़माने में या बा'द कोई नबी नहीं हो सकता, जो आप के ज़माने में या आप के बा'द किसी को नुबुव्वत मिलना माने या जाइज़ जाने वोह काफ़िर है। ❁ आप तमाम मख़्लूके़ इलाही में सब से अफ़्ज़ल हैं। औरों को फ़र्दन फ़र्दन (या'नी एक एक कर के) जो कमालात अ़ता हुए आप में वोह सब जम्अ़ कर दिये गए, इन के इ़लावा आप को वोह कमालात भी मिले जिन में किसी का हि़स्सा नहीं। बल्कि औरों को जो कुछ मिला हु़ज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام के सदके़ बल्कि आप के हाथों से मिला। ❁ आप के ख़साइस में से मे'राज है, जब आप मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक और वहां से सातों आस्मान और कुरसी व अ़र्श तक, बल्कि अ़र्श से भी ऊपर रात के थोड़े से हि़स्से में जिस्मानी ह़ालत में तशरीफ़ ले गए। वहां वोह कुर्बे ख़ास ह़ासिल हुवा कि किसी इन्सान व फ़िरिश्ते को कभी न ह़ासिल हुवा है न होगा, जमाले इलाही सर की आंखों से देखा, कलामे इलाही बिला वासित़ा सुना और आस्मान व ज़मीन के ज़र्रे ज़र्रे को मुलाह़ज़ा फ़रमाया। ❁ आप की मह़ब्बत मदारे ईमान, बल्कि ईमान इसी मह़ब्बत ही का नाम है, जब तक आप की मह़ब्बत मां बाप औलाद और तमाम जहान से ज़ियादा न हो आदमी मुसल्मान नहीं हो सकता। ❁ आप की इत़ाअ़त ऐ़न इत़ाअ़ते इलाही है, बल्कि **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़त सरकार عَلَيْهِ السَّلَام की इत़ाअ़त के बिग़ैर ना मुम्किन है। यहां तक कि आदमी अगर फ़र्ज़ नमाज़ में हो और आप उसे याद फ़रमाएं, फ़ौरन जवाब दे और ह़ाज़िरे ख़िदमत हो, येह शख़्स कितनी ही देर तक नबी عَلَيْهِ السَّلَام से कलाम करे, ब दस्तूर नमाज़ में है, इस से नमाज़ में कोई ख़लल नहीं। ❁ आप की ता'ज़ीमो तौक़ीर जिस त़रह़ उस वक़्त थी कि आप इस आ़लम में ज़ाहिरी निगाहों के सामने तशरीफ़ फ़रमा थे, अब भी उसी त़रह़ फ़र्ज़े

आ'ज़म है। जब आप का ज़िक्र आए तो ब कमाले ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ व इन्किसार ब अदब सुने और नामे पाक सुनते ही दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है।[1]

अल्लाह करीम ने आप को बे शुमार मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए। चांद के दो टुकड़े कर देना, डूबा सूरज पलटा देना, लकड़ियों को बल्ब की मानिन्द रोशन कर देना, लुआ़बे दहन (या'नी थूक मुबारक) से खारी कूंओं को मीठा कर देना, दूर दराज़ के अफ़्राद की इमदाद करना, उंग्लियों से पानी के चश्मे बहा देना, इशारे पर बारिश का बरसना, शजरो ह़जर से कलाम फ़रमाना, थोड़ा सा खाना और दूध कसीर जमाअ़त के लिये पूरा कर देना, दरख़्तों का चल कर आप की सलामी के लिये आना और जानवरों का इन्सानी बोली बोलना समेत आप के कसीर मो'जिज़ात हैं। क़ुरआने पाक भी आप के मो'जिज़ात में से है।

कुरआनी आयात और शाने मुस्त़फ़ा

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल का एक रोशन बाब येह भी है कि ख़ुद अल्लाह रब्बुल आ़लमीन ने आप की अ़ज़्मतो शान क़ुरआने पाक में कई मक़ामात पर बयान फ़रमाई है। चन्द आयात[2] मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहने का हुक्म

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾ (پ5، النساء:64)

तरजमा : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे थे तो ऐ ह़बीब !

---

1 बहारे शरीअ़त, 1/76, ह़िस्सा : 1

2 तमाम आयात का तरजमा कन्ज़ुल इरफ़ान से लिया गया है।

तुम्हारी बारगाह में ह़ाज़िर हो जाते फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी मांगते और रसूल (भी) उन की मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाते तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला, मेह्रबान पाते।

आमदे मुस्त़फ़ा की ख़ुश ख़बरी और इन पर ईमान लाने का हुक्म

يٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَیْرًا لَّكُمْ (پ6، النساء:170)

तरजमा : ऐ लोगो ! तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हारे पास येह रसूल ह़क़ के साथ तशरीफ़ लाए तो ईमान लाओ, तुम्हारे लिये बेहतर होगा।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत का बयान

یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا یُبَیِّنُ لَكُمْ كَثِیْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ یَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ۬ؕ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِیْنٌۙ(۱۵) (پ6، المائدہ:15)

तरजमा : ऐ अहले किताब ! बेशक तुम्हारे पास हमारे रसूल तशरीफ़ लाए, वोह तुम पर बहुत सी वोह चीज़ें ज़ाहिर फ़रमाते हैं जो तुम ने (**अल्लाह** की) किताब से छुपा डाली थीं और बहुत सी मुआ़फ़ फ़रमा देते हैं, बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर आ गया और एक रोशन किताब।

रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़ और उम्मत पर शफ़्क़त का बयान

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ(۱۲۸) (پ11، التوبہ:128)

तरजमा : बेशक तुम्हारे पास तुम में से वोह अ़ज़ीम रसूल तशरीफ़ ले आए जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना बहुत भारी गुज़रता है, वोह तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले, मुसल्मानों पर बहुत मेह्रबान, रह़मत फ़रमाने वाले हैं।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक मे'राज का बयान

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا
الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَاؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝۱ (پ15، بنی اسرائیل:1)

तरजमा : पाक है वोह ज़ात जिस ने अपने ख़ास बन्दे को रात के कुछ ह़िस्से में मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक सैर कराई जिस के इर्द गिर्द हम ने बरकतें रखी हैं ताकि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं, बेशक वोही सुनने वाला, देखने वाला है।

नबी عَلَيْهِ السَّلَام की शाने रह़मत का बयान

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ۝۱۰۷ (پ17، الانبیآء:107)

तरजमा : और हम ने तुम्हें तमाम जहानों के लिये रह़मत बना कर ही भेजा।

नबी عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालते आ़म्मा का बयान

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّنَذِیْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا یَعْلَمُوْنَ ۝۲۸ (پ22، سبا:28)

तरजमा : और ऐ मह़बूब ! हम ने आप को तमाम लोगों के लिये ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा है लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

अल्लाह पाक और फ़िरिश्तों का नबी عَلَيْهِ السَّلَام पर दुरूद और मुसल्मानों को दुरूदो सलाम का हुक्म

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ
وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ۝۵۶ (پ22، الاحزاب:56)

तरजमा : बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत का बयान

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ۝١ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۝٢ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ
الْهَوٰى ۝٣ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝٤ (پ27، النجم:1-4)

तरजमा : तारे की क़सम, जब वोह उतरे। तुम्हारे साहिब न बहके और न टेढ़ा रास्ता चले। और वोह कोई बात ख़्वाहिश से नहीं कहते। वोह वह़ी ही होती है जो उन्हें की जाती है।

क़समों के साथ आप की शान का बयान

وَالضُّحٰى ۝١ وَالَّيْلِ إِذَا سَجٰى ۝٢ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝٣ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ
لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝٤ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝٥ (پ30، الضحٰی:1-5)

तरजमा : चढ़ते दिन के वक़्त की क़सम। और रात की जब वोह ढांप दे। तुम्हारे रब ने न तुम्हें छोड़ा और न ना पसन्द किया। और बेशक तुम्हारे लिये हर पिछली घड़ी पहली से बेहतर है। और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर इन्आ़मे इलाही का बयान

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤ (پ30، الم نشرح:4)

तरजमा : और हम ने तुम्हारी ख़ातिर तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।

आप को अ़ताए कौसर का बयान

إِنَّا أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ (پ30، الکوثر:1)

तरजमा : ऐ महबूब ! बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाई।

शाने मुस्तफ़ा अहादीस की रोशनी में

अहादीसे मुबारका में भी कई मक़ामात पर अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद अपने फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए हैं। चन्द ऐसी अहादीस मुलाहज़ा फ़रमाइये :

तमाम बनी आदम के सरदार

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

أَنَا سَيِّدُ وَلَدِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا فَخْرَ وَبِيَدِي لِوَاءُ الْحَمْدِ وَلَا فَخْرَ وَمَا مِنْ نَبِيٍّ يَوْمَئِذٍ آدَمُ فَمَنْ سِوَاهُ إِلَّا تَحْتَ لِوَائِي[1]

मैं रोज़े क़ियामत तमाम आदमियों का सरदार हूं, और इस पर कोई फ़ख़्र नहीं है, मेरे हाथ में लिवाए हम्द का परचम होगा, और इस पर कोई फ़ख़्र नहीं है। क़ियामत के दिन (हज़रते) आदम और इन के सिवा जितने हैं सब मेरे परचम तले होंगे।

पांच ख़ुसूसिय्याते मुस्तफ़ा

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे पांच ऐसी चीज़ें अ़ता की गई हैं जो मुझ से पहले किसी को नहीं दी गई : (1) एक माह की मसाफ़त के रो'ब के ज़रीए़ मेरी मदद की गई (2) मेरे लिये माले ग़नीमत ह़लाल किया गया ह़ालां कि मुझ से पहले वोह किसी के लिये ह़लाल नहीं था (3) मेरे लिये तमाम ज़मीन को सज्दा गाह और मिट्टी को पाक बनाया गया लिहाज़ा मेरे किसी उम्मती को नमाज़ का वक़्त हो जाए तो वहीं नमाज़ पढ़ ले (4) मुझे

[1] ترمذی، کتاب المناقب، باب ما جاء فی فضل النبی، ۵/ ۳۴۵، الحدیث:۳۶۳۵

मन्सबे शफ़ाअ़त अ़ता किया गया (5) हर नबी को एक ख़ास क़ौम की त़रफ़ मब्ऊ़स किया गया जब कि मुझे तमाम लोगों की त़रफ़ भेजा गया।[1]

अव्वलुल अम्बिया

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, कि **या रसूलल्लाह !** येह इर्शाद फ़रमाइये कि आप को शरफ़े नुबुव्वत से कब सरफ़राज़ फ़रमाया गया ? तो आप ने इर्शाद फ़रमाया कि : मैं उस वक़्त भी नबी था जब कि आदम की तख़्लीक़ अभी जिस्म और रूह़ के मर्ह़ले में थी।[2]

शाने मुस्त़फ़ा ब ज़बाने उ़मर

सह़ाबिये रसूल, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक बार रोते हुए **अल्लाह के आख़िरी नबी** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान बयान फ़रमाई। आप की उस ह़सीन गुफ़्त्गू के चन्द इक़्तिबासात मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

या रसूलल्लाह ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! पहले आप खजूर के एक तने पर ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाते, लोगों की कसरत की वज्ह से फिर आप मिम्बर पर ख़ुत़्बा देने लगे, खजूर का वोह तना आप की जुदाई में रोया यहां तक आप ने अपना दस्ते शफ़्क़त उस पर रखा तो उसे क़रार आया। आप की जुदाई पे आप की उम्मत रोने का ज़ियादा ह़क़ रखती है।

या रसूलल्लाह ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप के रब के

---

1 مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، ص ۲۶۵، حدیث:۵۲۲

2 ترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی فضل النبی، ۵/۳۵۱، الحدیث:۳۶۲۹

हां आप का मक़ाम इतना बुलन्द है कि उस ने आप की इत़ाअ़त को अपनी इत़ाअ़त क़रार दिया है, चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया :

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ (پ5، النساء، آیۃ:80)

तरजमा : जिस ने रसूल की इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की

या रसूलल्लाह ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप के रब के हां आप का मक़ाम इतना बुलन्द है कि उस ने सब अम्बिया के बा'द आप को भेजा मगर आप का ज़िक्र सब अम्बिया से पहले फ़रमाया, चुनान्चे इर्शाद होता है :

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَ مِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ (پ21، الاحزاب، آیۃ:7)

तरजमा : और ऐ मह़बूब ! याद करो जब हम ने नबियों से उन का अ़ह्द लिया और तुम से और नूह़ और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से (अ़ह्द लिया) और हम ने उन (सब) से बड़ा मज़्बूत़ अ़ह्द लिया।

या रसूलल्लाह ! मेरे मां बाप आप पर फ़िदा हों ! **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को येह मो'जिज़ा दिया कि पथ्थर (पर अ़सा मारने) से चश्मे बह निकले, लेकिन इस से बढ़ कर ह़ैरत अंगेज़ बात येह है कि आप की मुबारक उंग्लियों से पानी के चश्मे जारी हुए।

या रसूलल्लाह ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को हवा पर ऐसा क़ाबू दिया था कि उस का सुब्ह़ का चलना एक महीने की राह और शाम का चलना भी एक महीने की राह के बराबर होता था, लेकिन इस से भी बढ़ कर तअ़ज्जुब ख़ैज़ आप की सुवारी बुराक़ है जिस पर सुवार हो कर आप सातों आस्मानों की सैर कर आए और उसी रात फ़ज्र की नमाज़ मक्के में आ कर अदा फ़रमाई।

या रसूलल्लाह ! **मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! अल्लाह** पाक ने हज़रते ईसा को मुर्दे ज़िन्दा करने का मो'जिज़ा अ़ता फ़रमाया लेकिन इस से बढ़ कर हैरत अंगेज़ बात येह है कि बकरी के भुने हुए ज़हरीले गोश्त ने आप से कलाम किया और कहने लगा : मुझे मत खाएं कि मुझ में ज़हर मिला हुवा है।

या रसूलल्लाह ! **मेरे मां बाप आप पर कुरबान !** हज़रते नूह़ ने अपनी क़ौम की हलाकत के लिये दुआ़ की और अ़र्ज़ किया :

رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝ (پ29، نوح، آیۃ:26)

तरजमा : ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।

अगर आप भी इसी त़रह़ दुआ़ करते तो हम तबाहो बरबाद हो जाते, लेकिन आप की शफ़्क़त है कि आप को सताया गया, तकालीफ़ दी गईं, आप को ज़ख़्मी किया गया तब भी आप ने ख़ैर के सिवा कुछ न कहा, आप की क़ौम ने जब भी तक्लीफ़ पहुंचाई आप की ज़बाने मुबारक से येही अल्फ़ाज़ अदा हुए : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ऐ अल्लाह ! **मेरी क़ौम को मुआ़फ़ फ़रमा कि वोह मुझे नहीं जानते।**

या रसूलल्लाह ! **मेरे मां बाप आप पर कुरबान !** ए'लाने नुबुव्वत के बा'द थोड़े ही अ़र्से में लोग आप पर ईमान ले आए और आप की पैरवी करने लगे, जब कि ह़ज़रते नूह़ के साथ ऐसा न हुवा ह़ालां कि उन्हों ने लम्बी उ़म्र भी पाई और काफ़ी अ़र्सा तब्लीग़ भी फ़रमाई, आप की ज़िन्दगी में ही कसीर लोग आप पर ईमान ले आए जब कि ह़ज़रते नूह़ पर ईमान लाने वालों की ता'दाद बहुत कम है।[1]

1 المدخل لابن الحاج المالکی، 3/ 173-174 ملتقطاً وملخصاً

बारहवां बाब

ख़ानदान व मुतअ़ल्लिक़ीने मुस्त़फ़ा

Family And Associates of the Holy Prophet

ख़ानदाने[1] मुस्त़फ़ा

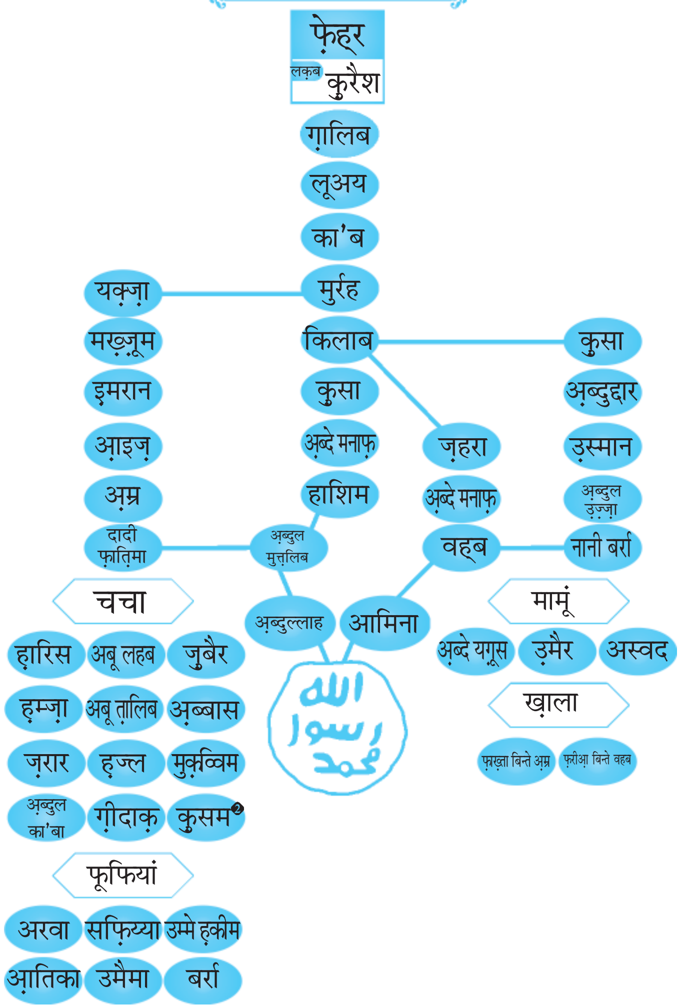

---

[1] ख़ानदाने मुस्त़फ़ा का येह नक़्शा ''السیرۃ النبویہ لابن ہشام جلد 1، المواہب اللدنیہ جلد 1، سبل الہدیٰ والرشاد جلد 1، شرح الزرقانی علی المواہب جلد 4'' के मुख़्तलिफ़ सफ़्ह़ात की मदद से तय्यार किया गया है।

[2] हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाओं की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है। हम ने तमाम नाम ज़िक्र कर दिये हैं। शुरूअ़ के 9 नामों पर सीरत निगारों का इत्तिफ़ाक़ है जब कि आख़िरी 3 नाम साह़िबे मवाहिबुल्लदुन्निय्यह ने ''ज़ख़ाइरुल उ़क़्बा फ़ी मनाक़िब ज़विल क़ुर्बा'' के ह़वाले से ज़िक्र फ़रमाए हैं।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रिज़ाई रिश्तेदार[1]

रिज़ाई वालिद

हारिस बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा

रिज़ाई माएं

वालिदा बीबी आमिना
आप की वालिदा बीबी आमिना ने सात दिन दूध पिलाया

ह़लीमा सा'दिया
हुज़ूर ने अय्यामे रिज़ाअ़त सब से ज़ियादा इन के हां गुज़ारे और बचपन भी, जब येह आप की बारगाह में आईं तो आप ने इन के लिये अपनी चादर बिछाई

उम्मे फ़र्वह

बनू सा'द की एक ख़ातून
ह़ज़रते ह़म्ज़ा ने भी बनू सा'द की एक ख़ातून का दूध पिया, इसी नाते वोह आप के रिज़ाई भाई भी हैं और चचा भी

बीबी सुवैबा
येह अबू लहब की कनीज़ थीं, आप और सय्यिदह ख़दीजा इन का बहुत एह़तिराम फ़रमाते और मदीनए मुनव्वरह से भी आप इन की त़रफ़ कपड़े वग़ैरा भेजा करते थे

बनू सुलैम की दो ख़्वातीन
जब हुज़ूर को बनू सा'द ले जाया जा रहा था तब इन ख़्वातीन ने आप को दूध पिलाया था

रिज़ाई भाई

ह़ज़रते ह़म्ज़ा
(चचा भी रिज़ाई भाई भी)

अबू सुफ़्यान बिन हारिस
आप के चचाज़ाद भाई आग़ाज़ में इस्लाम के मुख़ालिफ़, बा'द में इस्लाम क़बूल कर लिया

अबू सलमा बिन अ़ब्दुल असद
इब्तिदाई मुसल्मानों में से हैं, बीबी सुवैबा ने हुज़ूरे अकरम के साथ ह़ज़रते ह़म्ज़ा और अबू सलमा को भी दूध पिलाया था

मसरूह़ बिन सुवैबा
हुज़ूर की रिज़ाई वालिदा सुवैबा के बेटे

ह़फ़्स बिन हारिस
सय्यिदह ह़लीमा के बेटे अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस, बा'ज़ ने इन का नाम ज़मरह लिखा है

रिज़ाई बहनें

उनैसा बिन्ते हारिस
बीबी ह़लीमा की बेटी

शैमा बिन्ते हारिस
बीबी ह़लीमा की बेटी, हुज़ूर के बचपन में आप का बहुत ख़याल रखा करती थीं, आप के पास आईं तो हुज़ूर ने इन के लिये चादर बिछाई, तह़ाइफ़ दे कर रुख़्सत फ़रमाया

---

[1] नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रिज़ाई रिश्तेदारों से मुतअ़ल्लिक़ येह मा'लूमात "السيرة النبوية لابن هشام جلد 1، المواهب اللدنية جلد 1، سبل الهدىٰ والرشاد جلد 1" के मुख़्तलिफ़ सफ़ह़ात से ली गई हैं।

उम्महातुल मुअमिनीन [1]

नाम मुबारक	नबिय्ये पाक से निकाह़	उ़म्र ब वक़्ते निकाह़	नबिय्ये पाक के साथ गुज़ारे	उ़म्र ब वक़्ते विसाल
सय्यिदह ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद	28 साल क़ब्ले हिजरत	40 साल	25 साल	65 साल
सय्यिदह सौदह बिन्ते ज़म्अ़ा	3 साल क़ब्ले हिजरत	---	14 साल	---
सय्यिदह आ़इशा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़	निकाह़ 2 क़ब्ले हिजरत रुख़्सती 1 हि.	निकाह़ के वक़्त 6 साल रुख़्सती के वक़्त 9 साल	10 साल	65 साल
सय्यिदह ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़	3 हिजरी	21 साल	8 साल	63 साल
सय्यिदह ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा	3 हिजरी	29 साल	8 माह	30 साल
सय्यिदह उम्मे सलमा बिन्ते अबू उमय्या	4 हिजरी	28 साल	7 साल	85 साल
सय्यिदह ज़ैनब बिन्ते जह़्श	5 हिजरी	37 साल	6 साल	53 साल
सय्यिदह उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान	6 हिजरी	32 साल	5 साल	69 साल
सय्यिदह जुवैरिया बिन्ते ह़ारिस	5 हिजरी	19 साल	6 साल	70 साल
सय्यिदह मैमूना बिन्ते ह़ारिस [2]	7 हिजरी	36 साल	4 साल	80 साल
सय्यिदह सफ़िय्या बिन्ते हुयय	7 हिजरी	16 साल	4 साल	59 साल

औलादे अत़्हार

इस्म शरीफ़	विलादत	शौहर	औलाद	तारीख़े विसाल	उ़म्र ब वक़्ते विसाल
सय्यिदुना क़ासिम	-	-	-	-	-
सय्यिदह ज़ैनब	30 विलादत [3]	अबुल आ़स बिन रबीअ़	बेटा अ़ली बेटी उमामा	8 हिजरी	31 साल
सय्यिदह रुक़य्या	33 विलादत	पहला उ़त्बा बिन अबू लहब दूसरे उ़स्माने ग़नी	बेटा अ़ब्दुल्लाह	रमज़ान 2 हि.	22 साल
सय्यिदह उम्मे कुल्सूम	34 विलादत	पहला उ़तैबा बिन अबू लहब दूसरे उ़स्माने ग़नी	कोई नहीं	रमज़ान 9 हिजरी	28 साल
सय्यिदह फ़ात़िमा	35 विलादत	अ़लिय्युल मुर्तज़ा	बेटे ह़सन ह़ुसैन मोह़सिन बेटियां ज़ैनब, उम्मे कुल्सूम, रुक़य्या	3 रमज़ान 11 हिजरी	29 साल
सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह	बा'दे ए'लाने नुबुव्वत	-	-	4 नुबुव्वत	बचपन में
सय्यिदुना इब्राहीम [4]	ज़ुल ह़िज्जा 8 हिजरी	-	-	10 रबीउ़ल अव्वल 10 हिजरी	17 या 18 माह

[1] येह मा'लूमात ''شرح الزرقانی علی المواہب جلد4،اسد الغابہ جلد7، سبل الہدیٰ والرشاد جلد4اور المختصر الکبیر فی سیرۃ الرسول'' से ली गई हैं। [2] बीबी जुवैरिया और बीबी मैमूना दोनों का अस्ल नाम बर्रा था। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह नाम तब्दील फ़रमा दिये। इन दोनों के वालिद का नाम भी ह़ारिस है मगर येह दोनों अलग अलग शख़्सिय्यात हैं। [3] विलादत से विलादते नबवी मुराद है। [4] येह शहज़ादे बीबी मारिया से थे, इन के इलावा आप के तमाम शहज़ादे व शहज़ादियां बीबी ख़दीजा से हुईं।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ज़्वात व सराया

रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक दौर में होने वाली जंगों की ता'दाद 100 तक बयान की जाती है। उन में से कसीर ऐसी जंगें हैं जिन में तलवार उठाने की नौबत ही नहीं आई। एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ इन तमाम ग़ज़्वात व सराया में 181 सह़ाबए किराम ने जामे शहादत नोश फ़रमाया जब कि 202 ग़ैर मुस्लिम हलाक हुए, यूं मक़्तूलीन की कुल ता'दाद 383 है। इस से मा'लूम होता है कि दौरे नबवी में होने वाली तमाम ग़ज़्वात व सराया अम्नो सलामती के फ़रोग़ के लिये थीं। ग़ज़्वात व सराया के आ'दादो शुमार येह हैं :

ग़ज़्वे का नाम	मुसल्मान शुहदा	मक़्तूल कुफ़्फ़ार
ग़ज़्वए बद्र	14	70
ग़ज़्वए सवीक़	2	-
सरिय्या सरकूबिये का'ब बिन अशरफ़	-	1
ग़ज़्वए उहुद	70	22
ग़ज़्वए ह़म्राउल असद	-	1
सरिय्यए रजीअ़	7	-
सरिय्यए बिअरे मऊना	27	-
ग़ज़्वए ख़न्दक़	6	3
सरिय्यए अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक	-	1
ग़ज़्वए बनू क़ुरैज़ा[1]	-	-
ग़ज़्वए ज़ी क़रद	2	1
ग़ज़्वए बनू मुस्त़लक़	1	-
ग़ज़्वए ख़ैबर	20	2
ग़ज़्वए वादिये क़ुरा	1	-
ग़ज़्वए मौता	11	-
फ़त्ह़े मक्का	3	17
ग़ज़्वए ह़ुनैन	4	84
ग़ज़्वए त़ाइफ़	13	-
कुल ता'दाद	181	202

[1] यहूदियों की अ़ह्द शिकनी की सज़ा देने के लिये ह़ुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام लश्कर ले कर बनू क़ुरैज़ा पहुंचे, उन्हों ने मुह़ासरे से तंग आ कर हथियार डाल दिये और कहा कि ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ उन के बारे में फ़ैसला करें। ह़ज़रते सा'द के फ़ैसले की रोशनी में उन के लड़ने वालों को क़त्ल किया गया। यूं येह हलाकतें मैदाने जंग में न हुईं।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उ़मूमी इस्ति'माल की बा'ज़ चीज़ें [1]

कैंची
जामेअ़

सुरमा दानी
सोते वक़्त इस्मिद सुरमा लगाने के लिये इस्ति'माल फ़रमाया करते थे

सलाई
सुरमा लगाने के लिये लकड़ी की थी

छड़ी
मम्शूक़

सन्दूक़्ची
शाहे मक़ूक़स ने तोह़फ़े में भेजी, सफ़र में साथ रहती थी, इस में आप की येह 5 चीज़ें होतीं : कंघी, सुरमा दानी, कैंची, मिस्वाक, आईना

टब
कपड़े धोने के लिये पीतल का एक बरतन

पीतल का बड़ा पियाला
सअ़ह

अ़सा
इसी वज्ह से आप को साहिबुल हिरावह फ़रमाया गया

चारपाई
बीबी आ़इशा के घर में थी, अस्अ़द बिन ज़ुरारा ने पेश की थी, इस के पाए सागवान के थे

चमड़े का तक्या
इस में खजूर की छाल भरी हुई थी

चमड़े का बिछोना
इस में खजूर की छाल भरी हुई थी

मिख़्ज़ब
पथ्थर का त़श्त, इस से वुज़ू फ़रमाते थे

आईना
मुदिल्ला

कंघी
हाथीदांत की बनी हुई थी

ना'लैन शरीफ़
बिग़ैर बाल के चमड़े के थे और हर एक में बन्दिश के दो तस्मे थे

कुरसी
जिस के पाए लोहे या सियाह लकड़ी के थे

दस्तर ख़्वान
जिस पर बैठ कर खाना तनावुल फ़रमाते

एक चटाई जिस पे रात में नमाज़ अदा फ़रमाते और दिन में तशरीफ़ फ़रमा होते

इमामे
सियाह, हरक़ानी, ज़र्द ज़ा'फ़रानी, सफ़ेद, धारीदार सुर्ख़, सब्ज़

[1] شرح الزرقانی علی المواہب، 5/93-97، ملتقطاً وملخصاً

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारियां

ऊंटनियां	ख़च्चर	दराज़ गोश
क़स्वा, अ़ज़्बा, जदआ़	दुलदुल	या'फ़ूर[1]

ऊंट

सा'लब	जम्ल अह़्मर	अ़स्कर	सहरी	और कई ऊंट जिन के नाम मा'रूफ़ नहीं

सफ़ेद रंग का मुर्ग़ा

बकरियां

दूध देने वाली बकरियां 10 थीं, उन्हें सय्यिदह उम्मे ऐमन चराया करती थीं

बरकह	ज़मज़म	क़मर	वरशा	उ़जरह	अत़राफ़

सुक्या	अत़लाल	यमन	ग़ौसा या ग़ैसा

20 ऊंटनियां दूध देने वाली थीं जो मदीने से बाहर चरा करती थीं और रोज़ाना रात को दो बड़े मश्कीज़े दूध के लाए जाते ।[2]

1 سبل الہدیٰ والرشاد، ابواب ذکر دوابہ...، 11/419-420، ملتقطا

2 شرح الزرقانی علی المواہب، 5/109-112، ملتقطا وملخصا

तेरहवां बाब

हयाते मुस्त़फ़ा एक नज़र में

A glance on the Blessed Life of the Holy Prophet

इस्लामी सिन	ईसवी सिन	अहम वाक़िआत
विलादत का साल	20 एप्रिल 571 ई.	12 रबीउ़ल अव्वल को मक्के में विलादत/विलादत से छे माह क़ब्ल वालिद का विसाल
दूसरा साल	572 ई.	ह़ज़रते ह़लीमा के पास क़बीलए बनू सा'द में रहे
तीसरा साल	573 ई.	मक्का वापसी मगर वबा की वज्ह से क़बीलए बनू सा'द में मज़ीद क़ियाम
चौथा साल	574 ई.	क़बीलए बनू सा'द में शक़्क़े सद्र/वालिदा के पास वापसी
उ़म्र मुबारक का छटा साल	576-577 ई.	वालिदा और उम्मे ऐमन के साथ मदीने से वापसी पर अब्वा के मक़ाम पर वालिदा ह़ज़रते आमिना رضی اللہ عنہا का इन्तिक़ाल और तदफ़ीन।
आठवां साल	578-579 ई.	दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब का इन्तिक़ाल/चचा अबू त़ालिब की कफ़ालत का आग़ाज़
नवां साल	579-580 ई.	अ़रब में शदीद क़ह़्त़ जो आप की बरकत से दूर हुवा।
दसवां साल	581 ई.	10 साल की उ़म्र में अपने चचा ज़ुबैर के हमराह यमन का सफ़र।
बारहवां साल	583 ई.	अबू त़ालिब के साथ मुल्के शाम का पहला तिजारती सफ़र और बह़ीरा राहिब से मुलाक़ात।
चौदहवां साल	584-585 ई.	ह़र्बे फ़िजार में शिर्कत
बीसवां साल	589-590 ई.	ह़िल्फ़ुल फ़ुज़ूल में शिर्कत
पच्चीसवां साल	595 ई.	ह़ज़रते ख़दीजा की फ़रमाइश पर उन के माल के साथ शाम का दूसरा तिजारती सफ़र फिर तीन माह बा'द ह़ज़रते ख़दीजा से शादी
तीसवां साल	600 ई.	सब से बड़ी शहज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब की विलादत
तेंतीसवां साल	603 ई.	दूसरी शहज़ादी ह़ज़रते रुक़य्या की विलादत
पेंतीसवां साल	605 ई.	ता'मीरे का'बा में शिर्कत/ह़जरे अस्वद के तनाज़ोअ़ का फ़ैसला / ह़ज़रते फ़ात़िमा की विलादत
यकुम नबवी	फ़रवरी 610 ई.	उ़म्र मुबारक के चालीसवें साल पहली वह़ी की आमद और ए'लाने नुबुव्वत।
यकुम ता 3 नबवी	610-613 ई.	तीन साल तक ख़ुफ़्या त़ौर पर दा'वते इस्लाम / साह़िब ज़ादी रुक़य्या का ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رضی اللہ عنہما से निकाह़
4 नबवी	613-614 ई.	ए'लानिया तब्लीग़े इस्लाम का आग़ाज़ और शिर्क व बुत परस्ती से रोकना।
5 नबवी	615 ई.	मुसल्मानों को ह़बशा हिजरत करने का हुक्म फ़रमाया।

6 नबवी	616 ई.	हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म और हज़रते अमीर हम्ज़ा رضی اللہ عنہما का क़बूले इस्लाम
7 नबवी	617 ई.	ख़ानदाने बनू हाशिम का शअ़बे अबी तालिब में मुहासरे का आग़ाज़।
10 नबवी	619-620 ई.	शअ़बे अबी तालिब में बॉयकॉट का इख़्तिताम।
10 नबवी	619-620 ई.	इस साल को आमुल हुज़्न कहा जाता है, **रसूलुल्लाह** صلی اللہ علیہ وآلہٖ وسلم के चचा अबू तालिब और ज़ौजा हज़रते ख़दीजा رضی اللہ عنہا का इन्तिक़ाल हुवा।
12 नबवी	जूलाई 621 ई.	पहली बैअ़ते उक़्बा जब मदीने के 12 अफ़राद मिना की घाटी में इस्लाम लाए / मो'जिज़ए मे'राज अता हुवा।
13 नबवी	जून 622 ई.	दूसरी बैअ़ते उक़्बा जब मदीने के मज़ीद 72 अफ़राद ने मिना की घाटी आप के मुबारक हाथ पर बैअ़त की/इसी साल सितम्बर में हिजरते मदीना
रबीउ़ल अव्वल यकुम हिजरी	622 ई.	क़ुबा में आमद/ता'मीरे मस्जिदे क़ुबा/पहला जुमुआ़ अदा फ़रमाया/मदीने में जल्वा गरी/ता'मीरे मस्जिदे नबवी/मुवाख़ाते मदीना क़ाइम फ़रमाई/अज़ानो इक़ामत की इब्तिदा/सय्यिदह आइशा से शादी/हज़रते फ़ातिमा की शादी
2 हिजरी	623-624 ई.	तब्दीलिये क़िब्ला/रमज़ान के रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत/नमाज़े ईदैन व क़ुरबानी का वुजूब/ग़ज़्वए बद्र/इमामे हसन की विलादत/हज़रते रुक़य्या की वफ़ात/हज़रते उम्मे कुल्सूम की हज़रते उ़स्मान رضی اللہ عنہم اجمعین से शादी
शव्वाल 3 हिजरी	मार्च 625 ई.	इसी साल ग़ज़्वए उहुद का मा'रिका पेश आया/हज़रते हम्ज़ा رضی اللہ عنہ की शहादत
4 हिजरी	625-626 ई.	सानिहए रजीअ़/बिअरे मऊना/सलातुल ख़ौफ़ का हुक्म/इमामे हुसैन رضی اللہ عنہ की विलादत/हज़रते उम्मे सलमा और हज़रते ज़ैनब बिन्ते जह्श رضی اللہ عنہا से शादी/नमाज़े क़स्र और पर्दे के अह़काम का नुज़ूल
5 हिजरी	626-627 ई.	हज़रते जुवैरिया رضی اللہ عنہا से निकाह/ग़ज़्वए ख़न्दक़/ग़ज़्वए बनू मुस्तलक़/वाक़िअ़ए इफ़्क/तयम्मुम के जवाज़ का हुक्म नाज़िल हुवा/ग़ज़्वए बनू क़ुरैज़ा
6 हिजरी	628 ई.	बैअ़ते रिज़्वान/सुल्हे हुदैबिया/बादशाहों को दा'वते इस्लाम के मक्तूब भेजे/शाहे हबशा हज़रते नजाशी رضی اللہ عنہ का क़बूले इस्लाम

7 हिजरी	628–629 ई.	ग़ज़्वए ख़ैबर/ग़ज़्वए ज़ातुर्रक़ाअ़/ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा, ह़ज़रते सफ़िय्या और ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُن से निकाह़/मो'जिज़ए रद्दुश्शम्स/शहज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की विलादत/उ़म्रए क़ज़ा की अदाएगी
8 हिजरी	630 ई.	फ़त्हे मक्का/ग़ज़्वए ह़ुनैन/ग़ज़्वए त़ाइफ़/ग़ज़्वए मौता
9 हिजरी	631 ई.	ग़ज़्वए तबूक/मुख़्तलिफ़ वुफ़ूद की बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी
10 हिजरी	632 ई.	शहज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का विसाल/सह़ाबए किराम के अ़ज़ीम इज्तिमाअ़ के साथ अल वदाई ह़ज की अदाएगी/जैशे उसामा की तय्यारी/12 रबीउ़ल अव्वल बरोज़ पीर मुत़ाबिक़ 12 जून 632 ई. को 63 साल की उ़म्र में रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी, यकुम रबीउ़ल अव्वल और 2 रबीउ़ल अव्वल को वफ़ात शरीफ़ के भी अक़्वाल हैं/ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के हुजरे (या'नी घर) में तदफ़ीन।

सीरते रसूल के वाक़िआ़त में मुम्किना ह़त्मी तवारीख़ का एहतिमाम किया गया है मगर फिर भी रद्दो बदल का एह़तिमाल मौजूद है।

मआख़िज़ो मराजेअ़

قرآن مجید		
نام کتاب	مؤلف / مصنف / متوفی	مطبوعہ
کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی 1340ھ	مکتبۃ المدینہ
تفسیر در منثور	علامہ جلال الدین عبد الرحمٰن السیوطی، متوفی 911ھ	دار الفکر بیروت 2011
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی 256ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 1419ھ
صحیح مسلم	امام ابو حسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی 261ھ	دار الکتاب العربی بیروت 2008ء
سنن ابی داود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی 275ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت 1421ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسی ترمذی، متوفی 279ھ	دار الفکر بیروت 1414ھ
سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی، متوفی 303ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2009ء
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی 383ھ	دار المعرفہ بیروت
مستدرک	ابو عبد اللہ امام محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی 404ھ	دار المعرفہ بیروت 1418ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابو بکر سیوطی شافعی، متوفی 911ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 1421ء
الشمائل المحمدیہ	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسی ترمذی، متوفی 279ھ	دار احیاء التراث العربی
کتاب المغازی للواقدی	امام محمد بن عمر الواقدی، متوفی 207ھ	موسسۃ الاعلمی للمطبوعات بیروت 1989ء
الاکتفا	علامہ ابو الربیع سلیمان بن موسیٰ اندلسی، متوفی 634ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 2000ء
وفاء الوفاء	علامہ نور الدین سمہودی، متوفی 911ھ	دار احیاء التراث العربی
سیرت حلبیہ	علامہ علی بن برھان الدین حلبی، متوفی 1044ھ	دار المعرفۃ بیروت
الروض الانف	امام ابو قاسم عبد الرحمٰن سہیلی، متوفی 581ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
السیرۃ النبویۃ لابن ہشام	علامہ عبد الملک بن ہشام حمیری، متوفی 213ھ	دار الجیل بیروت
دلائل النبوۃ	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی 458ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 1988ء
المواہب اللدنیۃ	امام احمد بن محمد قسطلانی، متوفی 923ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 1996ء
شرح زرقانی علی المواھب	امام محمد الزرقانی بن عبد الباقی، متوفی 1122ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 1996ء
سبل الھدیٰ والرشاد	امام محمد بن یوسف صالحی شامی، متوفی 942ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت 1993ء

فتوح البلدان	علامہ ابو العباس احمد بن یحیی بلاذری	موسسۃ المعارف 1987ء
طبقات ابن سعد	محمد بن سعد بن منیع ہاشمی	دار الکتب العلمیہ بیروت 1997ء
مدارج النبوت	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ، متوفی 1052ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا
معارج النبوت	مولانا معین الدین کاشفی ہروی	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی
سیرت مصطفےٰ	شیخ الحدیث علامہ عبد المصطفےٰ اعظمی	مکتبۃ المدینہ
بلد الامین	علامہ ابو النصر منظور احمد شاہ ہاشمی رحمۃ اللہ علیہ	مکتبہ نظامیہ
الکلام الاوضح فی تفسیر الم نشرح (انوارِ جمالِ مصطفےٰ)	امام المتکلمین مولانا نقی علی خان، متوفی 1297ھ	شبیر برادرز
فیضانِ خدیجۃُ الکبریٰ	المدینۃ العلمیہ (شعبہ فیضانِ صحابیات)	مکتبۃ المدینہ
بہارِ شریعت	صدر الشریعہ مفتی امجد علی اعظمی، متوفی 1367ھ	مکتبۃ المدینہ
ذوقِ نعت	مولانا حسن رضا خان بریلوی	مکتبۃ المدینہ

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह किताब "**आख़िरी नबी की प्यारी सीरत**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए Whatsapp, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

फ़ैज़ाने मदीना, तीन कोनिया बग़ीचे के पास,

मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

हुरूफ़ की पहचान

फ=پھ	प=پ	भ=بھ	ब=ب	अ=ا
स=ث	ठ=ٹھ	ट=ٹ	थ=تھ	त=ت
ह़=ح	छ=چھ	च=چ	झ=جھ	ज=ج
ढ=ڈھ	ड=ڈ	ध=دھ	द=د	ख़=خ
ज़=ژ	ढ़=ڑھ	ड़=ڑ	र=ر	ज़=ذ
ज़=ض	स=ص	श=ش	स=س	ज़=ز
फ़=ف	ग़=غ	अ=ع	ज़=ظ	त़=ط
घ=گھ	ग=گ	ख=کھ	क=ک	क़=ق
ह=ہ	व=و	न=ن	म=م	ल=ل
ई=ای / ی	इ=اِ	ऐ=اَے	ए=ے	य=ی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

इस किताब में **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी ﷺ की मुख़्तसर सीरत का बयान है। येह किताब बिल ख़ुसूस नौजवान नस्ल और बिल उमूम हर एक के लिये फ़ाएदे मन्द है। इस में शक नहीं कि कुरआने हकीम के बा'द मुस्लमानों के लिये सब से अहम तरीन माख़ज़ व मस्दर **रसूलुल्लाह** ﷺ के फ़रमूदात, आ'माल और सीरते तय्यिबा है। रसूले ख़ुदा ﷺ की हयाते तय्यिबा तमाम इन्सानों के लिये अमली नमूना है जिसे कुरआन ''उस्वए हसना'' से ता'बीर करता है। अगर यूं कहा जाए तो बेजा नहीं कि कुरआन पैदाइश से वफ़ात तक ज़िन्दगी गुज़ारने का मज्मूअए अहकाम है जब कि सीरते नबविय्या इस मज्मूए की अमली तस्वीर का नाम है। **रसूलुल्लाह** ﷺ की सीरत के मुतालआ के दौरान इन्सान अपने सामने इन्सानियते कामिला की ऐसी आ'ला मिसाल देखता है जो ज़िन्दगी के हर शो'बे में कामिल व मुकम्मल नज़र आती है, आज ज़रूरत इस अम्र की है कि सीरते तय्यिबा को पढ़ कर उस के अमली पहलू को अपनी ज़िन्दगीयों में शामिल किया जाए।